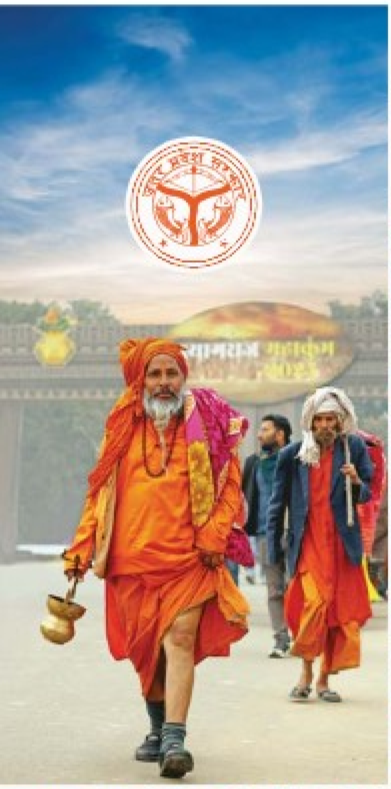

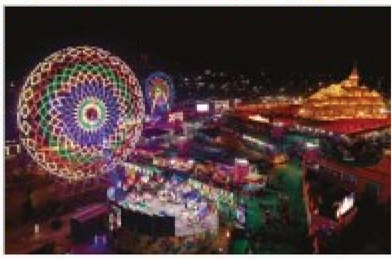

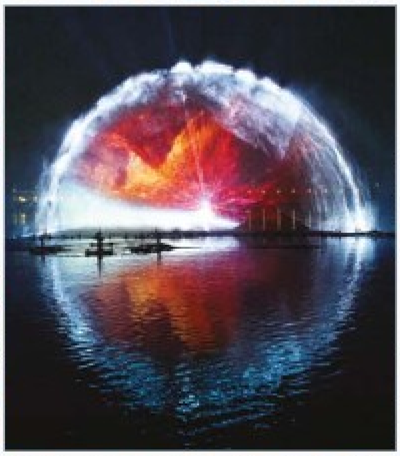

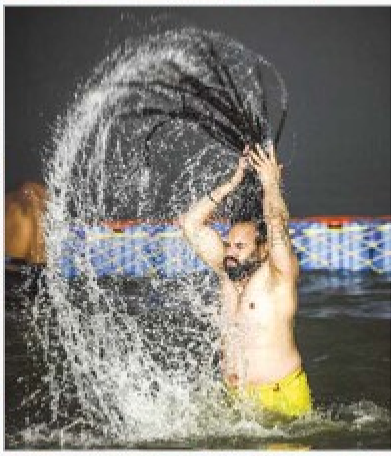

मार्च-2025, वर्ष 34, अंक 3

उत्तर प्रदेश संदेश

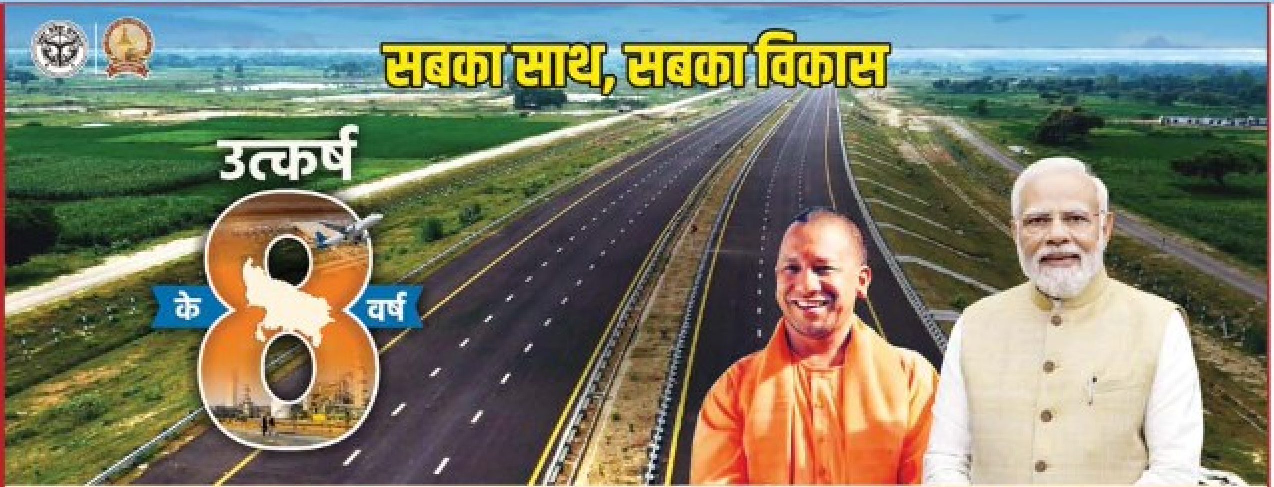

विकास पथ पर यूपी का रथ

- 6 एक्सप्रेसवे संचालित, 11 पर काम जारी, गंगा एक्सप्रेसवे बनने के बाद देश के कुल एक्सप्रेसवे में 55% की हिस्सेदारी
- एक्सप्रेसवे की लम्बाई : 2017 तक 491 किलोमीटर, 2024 तक 1225 किलोमीटर
- 32 हजार किमी+ लम्बाई के मार्गों का नवनिर्माण, 25 हजार किमी के मार्गों का चौड़ीकरण/सुदृढ़ीकरण
- 2017 तक केवल 04 एयरपोर्ट, 21 एयरपोर्ट की ओर अग्रसर देश का एकमात्र राज्य, जिनमें 05 इंटरनेशनल एयरपोर्ट
- देश का सबसे बड़ा जेवर एयरपोर्ट लगभग तैयार, सबसे बड़ा एयर कार्गो हब बनेगा उत्तर प्रदेश
- हल्दिया से वाराणसी तक जलमार्ग संचालित, प्रयागराज-अयोध्या तक विस्तारीकरण का कार्य जारी

सबको शिक्षा-उत्तम शिक्षा

- सभी 18 मंडल मुख्यालयों पर अटल आवासीय विद्यालयों का निर्माण
- 57 असेवित जनपदों में सीएम मॉडल कम्पोजिट विद्यालय का निर्माण
- अलीगढ़, आजमगढ़, सहारनपुर, बलरामपुर, मीरजापुर एवं मुरादाबाद में राज्य विश्वविद्यालयों का संचालन
- प्रयागराज में डॉ. राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय का निर्माण
- गोरखपुर में सैनिक स्कूल, फॉरेस्ट्री कॉलेज, एनसीसी ट्रेनिंग एकेडमी
- गोरखपुर एवं चंदौली में पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय

अपराध के प्रति जीरो टॉलरेंस

- 2017 के पहले माफिया-अपराधी बेलगाम, 2017 के बाद कानून का राज, भयमुक्त व्यवस्था
- एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार डकैती के मामलों में 84.41%, लूट में 77.43%, हत्या में 41.01%, बलवा में 66.40%, फिरौती के लिए अपहरण में 54.72%, दहेज हत्या में 17.08% और बलात्कार के मामलों में 26.15% की कमी
- 79,984 अपराधियों पर गैंगस्टर एक्ट, 930 अपराधियों के खिलाफ एनएसए की कार्रवाई
- माफिया के अवैध कब्जे से लगभग ₹3000 करोड़ की संपत्ति जब्त, अवैध संपत्तियां गिराकर उन पर गरीबों के लिए आवास
- 226 दुर्दांत अपराधी एनकाउंटर में ढेर, 29,111+ बदमाश जेल भेजे गए
- 7 महानगरों में पुलिस कमिश्नरेट व्यवस्था, 18 एंटी टेररिस्ट स्क्वाड यूनिट स्थापित
- 6 स्पेशल सिक्योरिटी फोर्स की वाहिनियां, 3 महिला पीएसी बटालियन स्थापित
- सभी जनपदों में साइबर थाने, 11 लाख+ सीसीटीवी कैमरों की स्थापना
- 112 पुलिस कंट्रोल का रिस्पॉन्स टाइम 2017 से पहले 25.42 मिनट, 2024 में घटकर 7.24 मिनट

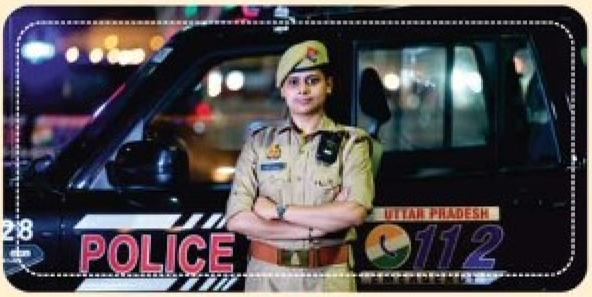

अंत्योदय से गरीब कल्याण

- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना : 15 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन
- प्रधानमंत्री आवास योजना : 56 लाख+ आवासों का निर्माण
- पीएम स्वनिधि योजना : 1,80,000+ स्ट्रीट वेंडर्स को ₹3,000 करोड़ + का ऋण
- हर घर जल योजना : 2.37 करोड़ + परिवारों को नल से स्वच्छ पेयजल की सुविधा
- मनरेगा : 200 करोड़ मानव दिवस सृजित, 100 दिन का रोजगार देने में प्रथम

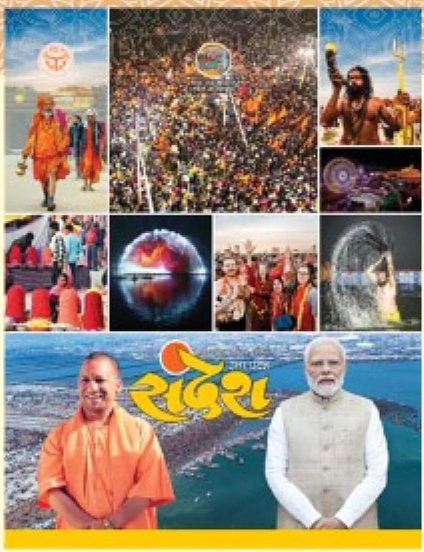

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :
संजय प्रसाद
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :
शिशिर
सूचना निदेशक

सम्पादकीय परामर्श :
अंशुमान राम त्रिपाठी
अपर निदेशक, सूचना

डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक निदेशक, सूचना

प्रभारी सम्पादक :
दिनेश कुमार गुप्ता
उपसम्पादक, सूचना

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
ईमेल : upsandesh20@gmail.com
दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522-2239132-33, 9415632448, 9412674759

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित

भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं है। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

इस अंक में

स्वच्छता, सुरक्षा और सुव्यवस्था...	-अंशुमान राम त्रिपाठी	1
विश्व इतिहास में महाकुम्भ 2025	-विश्व भूषण	5
प्रयागराज महाकुम्भ में अद्वितीय...	-प्रोफेसर हेरंब चतुर्वेदी	9
अद्भुत, अभूतपूर्व, अविस्मरणीय	-अमी गणात्रा	13
एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं	-रामधनी द्विवेदी	17
प्रयागराज महाकुम्भ : एक समग्र...	-आचार्य श्री अमिताभ जी	21
प्रयागराज महाकुम्भ ने दिया...	-अनिल श्रीवास्तव	25
महाकुम्भ ने रचा इतिहास	-डॉ. सौरभ मालवीय	30
भव्य और दिव्य महाकुम्भ	-सियाराम पांडेय 'शांत'	35
भारत की अमूर्त सांस्कृतिक...	-डॉ. कृष्णानंद पाण्डेय	41
अद्भुत व्यवस्था का साक्षी...	-सुनील राय	45
महाकुम्भ जिस पर रीझी दुनिया	-सरिता त्रिपाठी	53
न भूतो न भविष्यति	-प्रदीप उपाध्याय	59
महाकुम्भ ने रचे कई कीर्तिमान	-सुरेन्द्र अग्निहोत्री	66
आस्था, अध्यात्म और भव्यता...	-डॉ. सुयश मिश्रा	72

◆ महाकुम्भ में दिखी समृद्ध भारत की झलक	-यशोदा श्रीवास्तव	77
◆ उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को बल देगा महाकुम्भ	-विभा कनन	79
◆ महाकुम्भ प्रयागराज 2025 : अविस्मरणीय, अद्‌भुत, अकल्पनीय अनुभव	-प्रदीप कुमार गुप्ता	83
◆ दिग्गजों की श्रद्धा और आस्था	-उपमा शुक्ला	88
◆ महाकुम्भ जिसने तोड़े सारे रिकॉर्ड	-डॉ. अजय कुमार मिश्रा	94
◆ एकता-समरसता का महाकुम्भ	-रंजना मिश्रा	99
◆ महाकुम्भ की वैश्विक गूंज के नायक बने योगी आदित्यनाथ	-सुधा मिश्रा	105
◆ दिव्य, भव्य, डिजिटल तथा सुरक्षित महाकुम्भ-2025	-उपेन्द्र कुमार	107
◆ सनातन गर्व-महाकुम्भ पर्व	-रजनीश वैश्य	111
◆ आस्था और उमंग का महाकुम्भ	-रेनू सैनी	114
◆ मानव संस्कृति का महासमागम	-डॉ. शरद प्रकाश पाण्डेय	121
◆ अनहद की गूंज, अमृत की प्यास	-रतिभान त्रिपाठी	129
◆ सनातन संस्कृति का महाकुम्भ	-वृजनंदन चौबे	133

◆◆◆

सम्पादकीय

महाकुम्भ प्रयागराज 2025 : सनातन परंपरा का गौरव, नवभारत का विश्वास

जब-जब पृथ्वी पर धर्म की पुनर्स्थापना की आवश्यकता होती है, तब-तब भारत अपनी आध्यात्मिक चेतना से समूचे विश्व को दिशा देता है। महाकुम्भ इसी चेतना का विराट स्वरूप है- वह आयोजन, जो समय की गति से ऊपर है, वह परंपरा, जो सहस्राब्दियों से निरंतर प्रवाहित हो रही है।

प्रयागराज की पुण्यभूमि पर 13 जनवरी से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित महाकुम्भ 2025 ने भारत की आस्था, परंपरा और प्रशासनिक क्षमता-तीनों को एक मंच पर अद्वितीय संतुलन के साथ प्रस्तुत किया। करोड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति, हजारों संतों और अखाड़ों का जमावड़ा, सैकड़ों विदेशी प्रतिनिधियों और पर्यटकों की सहभागिता भरा यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और वैश्विक दृष्टि से भी ऐतिहासिक रहा।

इस अद्वितीय आयोजन के मूल में जिस दूरदर्शी नेतृत्व की प्रेरणा थी, वह देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का दृढ़ संकल्प और समर्पण था। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में 'विरासत और विकास' को साथ लेकर चलने की जो राष्ट्रीय नीति बनी, उसने महाकुम्भ को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने महाकुम्भ को केवल एक धार्मिक आयोजन के रूप में नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश की प्रशासनिक क्षमता, सांस्कृतिक गरिमा और तकनीकी प्रगति का सशक्त प्रदर्शन बनाया।

उत्तर प्रदेश सरकार ने जिस प्रतिबद्धता, संवेदनशीलता और समग्र सोच से इस आयोजन को साकार किया, वह भारतीय प्रशासनिक इतिहास में अनुकरणीय उदाहरण बन गया। स्वच्छता, सुरक्षा, चिकित्सा, यातायात, पर्यावरण संरक्षण और डिजिटल समन्वय-हर पहलू को प्राथमिकता देते हुए महाकुम्भ को 'डिजिटल डिवाइन अनुभव' के रूप में प्रस्तुत किया गया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित भीड़

प्रबंधन प्रणाली, GPS ट्रैकिंग युक्त सेवाएँ, रियल टाइम सूचना प्रणालियाँ, विशिष्ट तीर्थ-नगरियों की स्थापना, बहुभाषी सुविधा केंद्रों की स्थापना और संस्कृति से ओतप्रोत कार्यक्रमों की श्रृंखला-ये सब दर्शाते हैं कि कैसे उत्तर प्रदेश ने आस्था और आधुनिकता के मध्य एक आदर्श सेतु का निर्माण किया।

'संदेश' पत्रिका का यह विशेषांक इस भव्य आयोजन का न केवल अभिलेखीय दस्तावेज है, बल्कि एक सांस्कृतिक संवाद भी है- जिसमें संतों की वाणी है, विद्वानों की दृष्टि है, अनुभवों की गहराई है और प्रशासनिक प्रबंध का आत्मविश्वास भी। इस अंक में लब्धप्रतिष्ठ विचारकों, पत्रकारों, प्रशासकों एवं प्रतिभागियों के विचार, आलेख और संस्मरण संकलित किए गए हैं- जो पाठकों को महाकुम्भ की दिव्यता और व्यापकता से जोड़ेंगे।

यह अंक उन असंख्य कर्मयोगियों के प्रति भी समर्पित है, जिन्होंने इस आयोजन को बिना किसी बाधा के सम्पन्न कराने में अपनी भूमिका निभाई। महाकुम्भ प्रयागराज 2025 केवल एक आयोजन नहीं था- यह था नवभारत की आत्मा का उत्सव, जहाँ परंपरा और प्रौद्योगिकी, आस्था और अनुशासन, सनातन और समकालीनता-एक साथ झिलमिलाए।

—सम्पादक

स्वच्छता, सुरक्षा और सुव्यवस्था का अनुकरणीय उदाहरण

-अंशुमान राम त्रिपाठी
(अपर निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग)

प्रयागराज की पुण्यभूमि पर महाकुम्भ 2025 का आयोजन न केवल एक धार्मिक पर्व था, बल्कि यह आयोजन भारत की प्रशासनिक क्षमता, सांस्कृतिक गरिमा और जनसंपर्क व्यवस्था की पराकाष्ठा का प्रतीक बन गया। करोड़ों श्रद्धालुओं की सहभागिता, विश्वभर से आए संत–महात्माओं का समागम और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की उत्सुक उपस्थिति के बीच जो सबसे अधिक प्रभावी और उल्लेखनीय रहा, वह था इस आयोजन का सुव्यवस्थित, स्वच्छ और सुरक्षित स्वरूप। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के केंद्र में थे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, जिनके स्पष्ट विजन, कार्य के प्रति समर्पण और अद्वितीय नेतृत्व क्षमता ने महाकुम्भ 2025 को एक वैश्विक स्तर की पहचान दिलाई।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आरंभ से ही यह सुनिश्चित किया कि महाकुम्भ का आयोजन केवल धार्मिक या पारंपरिक अनुष्ठान न बनकर आधुनिक भारत की शासन क्षमता और तकनीकी दक्षता का प्रतीक बने। उनका यह दृष्टिकोण स्पष्ट था कि आस्था और सुव्यवस्था के बीच संतुलन बैठाते हुए, महाकुम्भ को स्वच्छ, सुरक्षित और श्रद्धालुओं के लिए पूरी तरह सुगम बनाया जाए। उन्होंने महाकुम्भ को 'डिजिटल डिवाइन कुंभ' की संज्ञा देते हुए इसे तकनीक और अध्यात्म के समन्वय से युक्त एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया। उनके मार्गदर्शन में महाकुम्भ की योजना वर्षों पूर्व आरंभ की गई, जिसमें राज्य सरकार के सभी विभागों ने समन्वयपूर्वक कार्य किया और समयबद्ध ढंग से तैयारियों को अमलीजामा पहनाया।

स्वच्छता की दृष्टि से महाकुम्भ 2025 को नि:संदेह एक ऐतिहासिक आयोजन कहा जा सकता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यह सुनिश्चित किया कि संगम के तट पर होने वाला यह आयोजन पुण्यसलिला गंगा और यमुना जैसी ही निर्मल

और स्वच्छ छवि प्रस्तुत करे। प्रयागराज के संपूर्ण मेला क्षेत्र में स्वच्छता के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग किया गया। कूड़ा प्रबंधन के लिए रियल टाइम ट्रैकिंग सिस्टम, सफाईकर्मियों की शिफ्टवार तैनाती, मोबाइल टॉयलेट्स और अपशिष्ट निस्तारण की जैविक व्यवस्था जैसे उपायों ने आयोजन को पर्यावरणीय संतुलन की दृष्टि से भी उत्कृष्ट बना दिया। गंगा जल की शुद्धता बनाए रखने के लिए नालों के डायवर्जन, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांटों की स्थापना और नियमित जल परीक्षण की व्यवस्था की गई, जिससे श्रद्धालुओं को स्नान का अनुभव न केवल आध्यात्मिक रहा, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी आश्वस्त करने वाला था। यह योगी सरकार के प्रयासों का ही परिणाम था कि महाकुम्भ 2025 को स्वच्छता के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी स्थान मिला।

जहाँ इतनी बड़ी संख्या में लोगों का समागम होता है, वहाँ सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौती बन जाती है। लेकिन महाकुम्भ 2025 में यह चुनौती अवसर में परिवर्तित हो गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था को लागू कराया, जिसमें आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षित बल और संवेदनशील निगरानी प्रणाली का समावेश किया गया। पूरे मेला क्षेत्र को सीसीटीवी कैमरों से आच्छादित किया गया, ड्रोन के माध्यम से आकाशीय निगरानी की गई और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित भीड़ प्रबंधन प्रणाली ने प्रत्येक क्षण की गतिविधियों पर सतर्क दृष्टि रखी। गुमशुदा व्यक्तियों को पहचानने और उन्हें उनके परिजनों से मिलाने के लिए फेस रिकग्निशन तकनीक का उपयोग किया गया, जिससे हजारों परिवारों को मदद मिली। राज्य पुलिस, पीएसी,

एनडीआरएफ और विभिन्न सुरक्षा बलों की संयुक्त तैनाती ने यह सुनिश्चित किया कि महाकुम्भ का प्रत्येक क्षण श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षित और निर्बाध बना रहे।

सुव्यवस्था के क्षेत्र में भी महाकुम्भ 2025 ने नए कीर्तिमान स्थापित किए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेला क्षेत्र की योजनाबद्ध बसावट, यातायात नियंत्रण, आवागमन की सुगमता और श्रद्धालुओं को समय पर सूचना प्रदान करने के लिए एक अभिनव प्रणाली विकसित कराई। इलेक्ट्रॉनिक साइनबोर्ड्स, वर्चुअल मैपिंग, मोबाइल एप्स और हेल्पलाइन नंबरों ने यात्रियों को न केवल दिशा निर्देशित किया, बल्कि उन्हें समय की बचत और सुविधा भी प्रदान की। रेलवे स्टेशन, बस अड्डे और हवाई अड्डे से लेकर संगम तट तक की कड़ी निगरानी और क्रमबद्ध परिवहन व्यवस्था ने यह सुनिश्चित किया कि भीड़ नियंत्रण में रहे और किसी भी स्थिति में अव्यवस्था उत्पन्न न हो। प्रमुख स्नान पर्वों पर क्लस्टर आधारित बैरिकेडिंग, समयबद्ध प्रवेश और निकलने की योजना तथा महिला यात्रियों के लिए पृथक सुविधाओं की व्यवस्था ने आयोजन को सर्वसुलभ और समावेशी बना दिया। महाकुम्भ 2025 ने वैश्विक स्तर पर भी भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रबंधकीय क्षमता का एक प्रभावशाली प्रदर्शन किया। योगी आदित्यनाथ की पहल पर विदेश मंत्रालय के सहयोग से कई देशों में महाकुम्भ की थीम पर आधारित प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं। इससे दुनिया भर के श्रद्धालुओं, पर्यटकों और मीडिया का ध्यान प्रयागराज की ओर आकृष्ट हुआ। 70 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने महाकुम्भ में भाग लिया, जिसने इस पर्व को

महाकुम्भ 2025 ने वैश्विक स्तर पर भी भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रबंधकीय क्षमता का एक प्रभावशाली प्रदर्शन किया। योगी आदित्यनाथ की पहल पर विदेश मंत्रालय के सहयोग से कई देशों में महाकुम्भ की थीम पर आधारित प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं। इससे दुनिया भर के श्रद्धालुओं, पर्यटकों और मीडिया का ध्यान प्रयागराज की ओर आकृष्ट हुआ। आयोजन के दौरान 70 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने महाकुम्भ में भाग लिया, जिसने इस पर्व को विश्व की सबसे बड़ी और सुव्यवस्थित धार्मिक सभा के रूप में स्थापित कर दिया।

विश्व की सबसे बड़ी और सुव्यवस्थित धार्मिक सभा के रूप में स्थापित कर दिया। प्रयागराज के स्थानीय उद्योग, पर्यटन, हस्तशिल्प और परिवहन क्षेत्र को इसका प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ मिला और स्थानीय नागरिकों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए।

महाकुम्भ 2025 न केवल एक धार्मिक पर्व था, बल्कि यह आयोजन उस भारत की तस्वीर थी जो अपने प्राचीन मूल्यों को आधुनिक व्यवस्थाओं से जोड़ते हुए विश्व के समक्ष आत्मविश्वास से खड़ा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि इच्छा शक्ति हो, दूरदर्शिता हो और प्रशासनिक समन्वय हो, तो किसी भी आयोजन को अभूतपूर्व सफलता में बदला जा सकता है। महाकुम्भ की इस सफलता ने न केवल राज्य का गौरव बढ़ाया, बल्कि आने वाले समय के लिए एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत किया, जिसे अन्य राज्यों और देशों द्वारा भी अपनाया जा सकता है। यह आयोजन एक बार फिर सिद्ध कर गया कि जब नेतृत्व जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है, तब परंपरा और प्रगति एक साथ चल सकती हैं और आस्था भी सुरक्षित रह सकती है। प्रयागराज का महाकुम्भ 2025 इसी आस्था, सुव्यवस्था और संकल्प का जीवंत उदाहरण बन चुका है। ◆

महाकुम्भ 2025 न केवल एक धार्मिक पर्व था, बल्कि यह आयोजन उस भारत की तस्वीर थी जो अपने प्राचीन मूल्यों को आधुनिक व्यवस्थाओं से जोड़ते हुए विश्व के समक्ष आत्मविश्वास से खड़ा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि इच्छा शक्ति हो, दूरदर्शिता हो और प्रशासनिक समन्वय हो, तो किसी भी आयोजन को अभूतपूर्व सफलता में बदला जा सकता है।

मो. : 9415044837

विश्व इतिहास में महाकुम्भ 2025

-विश्व भूषण
(सीईओ, श्री काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी)

महाकुम्भ 2025 संपन्न हुआ। अनेक घटनाओं परिघटनाओं की पृष्ठभूमि में आस्था का महापर्व अनेकानेक स्मृतियाँ सदैव के लिए हमारी स्मृतियों में अंकित कर गया है। विश्व का सब से बड़ा शांतिपूर्ण मानवीय जमावड़ा जहाँ कोई हिंसक संघर्ष नहीं हुआ, सब से बड़ा सामूहिक स्नान जहाँ कोई संक्रामक बीमारी नहीं फैली, सब से वृहद् सामूहिक भोजन के अनेकानेक प्रकल्प जिनमे फूड पोइजनिंग जैसी कोई घटना दर्ज नहीं की गयी, लाखों की संख्या में कल्पवासियों का एक आकस्मिक अस्थायी नगर में पूर्णतः कपड़े कागज से बने शिविरों में प्रवास, जहाँ कोई संज्ञेय अपराध घटना नहीं पाया गया और अंत में परन्तु अंतिम नहीं, करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं को समाहित करते हुए पूरा आयोजन संपन्न कर पुनः स्वच्छ संगम तट के साथ गौरव से अपनी गरिमा को प्रदर्शित करता प्रयागराज तीर्थ, ऐसी ही स्मृतियों में उल्लेखनीय हैं।

कुम्भ पर्व की पौराणिकता, ऐतिहासिक घटनाएं और कुम्भ के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ के विषय में इस पर्व के पूर्व और सम्पूर्ण आयोजन की अवधी में बहुत कुछ लिखा और बोला जा चुका है। यह भी कह सकते हैं कि हर दो चार वर्ष में यत्र तत्र चार भिन्न-भिन्न कुम्भ नगरों में आयोजित होने वाले उत्सवों में सदैव ही कुछ कथानक एवं आख्यान दोहराये ही जाते रहते हैं। परन्तु फिर भी प्रत्येक पर्व का उल्लास सदैव नवीनता के कलेवर से आच्छादित रहता है। संभवतः सांझी पौराणिक ऐतिहासिक

पृष्ठभूमि और बार-बार नवीन उत्साह से पर्व उल्लास पुनर्जीवित करने का महा आयोजन होने के कारण ही सनातन संस्कृति की ''अर्वाचीन में नवीन'' विज्ञता को सर्वोत्कृष्ट स्वरूप में पह कुम्भ पर्व ही अभिव्यक्त करते हैं।

परन्तु महाकुम्भ 2025 कई मायनों में इस अनादि परंपरा के अनंत प्रवाह में स्मरणीय रहेगा। यह स्नान करने वालों की संख्या के कारण तो स्मरणीय है ही, परन्तु आध्यात्मिक चेतना के साथ सनातन प्रज्ञा के पुनरुत्थान का स्पष्ट एवं प्रभावी विमर्श प्रारम्भ करने का महा आयोजन भी है। ध्यातव्य है कि विश्व में अब तक फैली सब से भयानक संक्रमणीय बीमारी कोविड अथवा कोरोना के बाद यह पहला इतना बृहद आयोजन था जिसमे एक ही स्थल पर करोड़ों की संख्या में जल स्नान की परंपरा का निर्वहन किया जाना था। परन्तु श्रद्धालुओं की संख्या जिस रूप में उमड़ कर आयी उसने विपदा जनित भय पर धर्म की श्रद्धा के विजय का शंखनाद कर दिया।

महाकुम्भ 2025 कई मायनों में इस अनादि परंपरा के अनंत प्रवाह में स्मरणीय रहेगा। यह स्नान करने वालों की संख्या के कारण तो स्मरणीय है ही, परन्तु आध्यात्मिक चेतना के साथ सनातन प्रज्ञा के पुनरुत्थान का स्पष्ट एवं प्रभावी विमर्श प्रारम्भ करने का महा आयोजन भी है।

महाकुम्भ 2025 में कल्पवासी सन्यासी शिविरों में आध्यात्मिक संवाद के सामानांतर चले बौद्धिक एवं वैज्ञानिक सत्रों ने भी सनातन प्रज्ञा के प्राचीन अभ्यास को इस महाकुम्भ में अमृत पान कराने का कार्य किया है। भाषा, जाति, सम्पन्नता, विपन्नता, क्षेत्रीयता इत्यादि समस्त बंधनों को तोड़ कर समस्त सनातन मानस को एक भाव में एक स्थान पर एक जल में अमृत खोज लेने को प्रेरित करने की सनातन शक्ति का प्रकटीकरण इस कुम्भ पर्व में और भी जिजीविषा के साथ प्रत्यक्ष हुआ। जनसहयोग से ले कर परसेवा और मेले के अल्हड़पन से ले कर आध्यात्मिक उत्कंठा सभी कुछ इस वर्ष विशेष था। महाकुम्भ 2025 इस मायने में भी विशिष्ट था कि यह 5 जी इंटरनेट क्रांति के दौर का पहला महाकुम्भ था। तेज इंटरनेट स्पीड से भयानक तौर पर फैल चुके रील मेकर और यूट्यूबर वर्ग की उत्पत्ति के बाद उन के लिए भी यह पहला महा आयोजन था। हजारों वर्ष से रहस्यों में लिपटी नागा संन्यासियों की दुनिया के सारे रहस्य एक मिनट की रील और 10 मिनट के पॉडकास्ट में अनावृत्त कर देने का करतब भी इस कुम्भ के प्रारम्भ से ही मुख्य विमर्श की गंभीर आध्यात्मिक पहचान के समानांतर ही लोक चर्चित रहा।

यह महाकुम्भ आज तक संगम तट पर आयोजित सब से बड़ा, सब से विस्तृत क्षेत्रफल में विस्तारित, एक आयोजन हेतु कार्यरत सर्वाधिक संख्या में एकत्र श्रमिकों के सहकार एवं सर्वाधिक मनुष्यों की सहभागिता के पर्व का ऐसा महा आयोजन सिद्ध हुआ जहाँ सनातन विचार की समस्त अर्वाचीन, प्राचीन, मध्य-युगीन, पूर्व आधुनिक तथा आधुनिक धाराओं से ले कर उत्तर आधुनिक विचारों के संवाहक युवा भी अमृत स्नान की डुबकी लेते दिखाई दिए। वैदिक, उत्तर वैदिक, वैशेषिक, नैयायिक, सांख्यकार, मीमांसक, योगी, वेदांती, अद्वैतवादी,

द्वैतवादी, विशिष्टाद्वैत के समर्थक, द्वैताद्वैतवादी, बौद्ध, जैन, तांत्रिक, शैव, वैष्णव, भक्तिपंथी, रामनामी संप्रदाय, कृष्णभक्त, रैदासी, कबीरपंथी, आर्य समाजी, ब्रह्मसमाजी, रामकृष्ण एवं विवेकानंद के अनुयायी, इस्कॉन के अनुयायी, वभिन्न धर्माचार्य एवं उनके भक्त, अनेकानेक कथावाचक एवं मशीनी विज्ञान के विश्वासियों से ले कर कंप्यूटर और उत्तराधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता अथवा आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस के अनुगामियों तक ने इस आयोजन में अमृत स्नान का लाभ लिया। और भी विस्मयकारी तथ्य यह है कि विश्व के समस्त कथानक वृत्तांत में देह को अमर कर देने की आकांक्षा के साथ अमृत ग्रहण करने की स्वाभाविक मानवीय आकांक्षा के ठीक उलट सनातन संस्कृति के इन समस्त संवाहकों ने अनेक मतभिन्नताओं के बाद भी इस मतैक्य के साथ यह अमृत स्नान किया कि इस स्नान पर्व में सम्मिलित हो अर्जित पुण्य लाभ से वह इस जन्म के अंत में नश्वर देह से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष के अधिकारी होंगे। अमृत प्राप्त कर देह और संसार से स्थायी मुक्ति का यह सनातन चरित्र ही वैश्विक सभ्यताओं में भारतवर्ष की विशिष्ट, उत्कृष्ट एवं परिष्कृत संस्कृति का ध्वज सब से ऊपर और सब से मुखर हो कर फहराता है।

हालांकि इस उत्कृष्ट दिव्य एवं भव्य कुम्भ की प्रशंसा सर्वत्र की जा रही है परन्तु इस गौरव की आत्मश्लाघा में सनातनधर्मी होने के दृष्टिगत हमें कुछ उत्तरदायित्वों एवं भविष्य के लिए प्राप्त अनुभवों को भी अनिवार्यत: अपनी स्मृति में संजो लेना चाहिए। इतने वृहद् आस्था के आयोजन में पुण्य लाभ एवं मोक्ष के आकांक्षी इस देश में और विशेषत: सनातन धर्म के अनुयायियों में स्वत: स्फूर्त धर्म स्थल तथा धार्मिक आयोजन में पहुँचने की उत्कंठा होती है। अत: भविष्य के आयोजनों में जोर इस पर होना चाहिए कि किस प्रकार आयोजनों को स्थानीय पर्व के रूप में स्थानीयकरण के द्वारा विकेन्द्रित किया जाय। इससे मुख्य आयोजन स्थल पर भीड़ का दबाव काम होगा तथा प्रबंधन और भी गुणवत्तापरक हो सकेगा। स्थानीय नदी, तालाब, झील

एवं अन्य जलाशयों में स्नान पर्व के आयोजन का एक परिणाम यह भी होगा कि सभी स्थानीय निकाय एवं पंचायतें स्नान पर्वों के ठीक पहले जलस्रोतों तथा जलाशयों की सफाई के लिए बाध्य भी होंगी और संवेदनशील भी। कुम्भ पर्व 2025 ने भव्यता और स्वच्छता के जो नए प्रतिमान स्थापित किये हैं, अब आवश्यकता उन मानकों एवं उन स्टैंडर्ड्स के प्रसार की है। अब गाँव, कसबे, नगर इत्यादि के स्तर पर जलाशयों को चिन्हित कर स्नान पर्वों को स्थानीय स्तर पर पुनरुज्जीवित करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही प्रत्येक ग्राम, नगर अथवा स्थानीय स्नान पर्व पर स्थानीय मेले, स्थानीय विमर्श तथा धर्म संवाद के कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने पर विचार किया जा सकता है। इस तरह से एक सफल मेगा मॉडल के स्थानीयकरण द्वारा सनातन प्रज्ञा, सनातन विश्वास एवं सनातन धर्मियों की सामूहिकता का शक्ति प्रदर्शन अनेकानेक स्थलों पर रचनात्मक रूप लेगा और अपने आस पास की समस्याओं के निस्तारण हेतु सामूहिक आयोजनों के माध्यम से सामाजिक जुड़ाव का वह ताना बाना खड़ा कर सकेगा जो इस सामाजिक बिखराव के समप की एक बड़ी आवश्यकता है। जिस प्रकार कुम्भ पर्व के समय देश विदेश से सनातन वंशी कुम्भ स्थलों तक खिंचे चले आते हैं, यह आशा की जा सकती है कि इसी प्रकार रोजगार और अन्य कारणों से अपने मूल गाँव, नगर आदि से पलायन किये हुए अनेक परिवार पुनः अपनी जड़ों से जुड़ेंगे। यह जुड़ाव शहरीकरण के कारण एकल हो चुके परिवारों को संस्कार तो देगा ही, बड़े शहरों की समृद्धि का समावेशी प्रवाह गाँव और छोटे नगरों की ओर करते हुए आर्थिक समरसता लाने का भी महनीय कार्य सिद्ध करेगा।

महाकुम्भ 2025 में कल्पवासी संन्यासी शिविरों में आध्यात्मिक संवाद के समानांतर चले बौद्धिक एवं वैज्ञानिक सत्रों ने भी सनातन प्रज्ञा के प्राचीन अभ्यास को इस महाकुम्भ में अमृत पान कराने का कार्य किया है। भाषा, जाति, सम्पन्नता, विपन्नता, क्षेत्रीयता इत्यादि समस्त बंधनों को तोड़ कर समस्त सनातन मानस को एक भाव में एक स्थान पर एक जल में अमृत खोज लेने को प्रेरित करने की सनातन शक्ति का प्रकटीकरण इस कुम्भ पर्व में और भी जिजीविषा के साथ प्रत्यक्ष हुआ।

समस्त सनातन जगत को इस ''सर्व सिद्धिः प्रदः कुम्भ'' के लक्ष्य के साथ आयोजित महा महोत्सव के सकुशल संपन्न होने की अगणित शुभकामनाओं के साथ यह कामना भी है कि उपरिवर्णित कुछ दृष्टांतों समेत अनेक नवीनताएँ हमारी समेकित प्रज्ञा में यह कुम्भ पर्व छोड़ जायेगा जो भविष्य के सनातन विमर्श एवं सनातन सांस्कृतिक पुनरोत्थान के मार्ग प्रकाशक सिद्धांत एवं व्यवहार के रूप में सनातन विवेक को आलोकित करते रहेंगे। ♦

मो. : 9454321022

महाकुम्भ में अद्वितीय मेला प्रबंधन

-प्रोफेसर हेरंब चतुर्वेदी
(पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, इलाहाबाद वि.वि.)

1954 का कुम्भ मेला स्वतंत्र भारत का पहला कुम्भ था अतः अत्यधिक उत्साह का संचार होना स्वाभाविक था! इस मेले में छह मिलियन से अधिक लोग एकत्रित हुए थे। 1977, 1989 तथा 2001 ई. के कुम्भ का क्षेत्र तथा तीर्थयात्रियों आदि की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। 1989 के कुम्भ पर टेलीविजन का स्पष्ट प्रभाव था तो 2001 वाले कुम्भ पर कंप्यूटर क्रांति का प्रभाव था और ये तकनीकि परिवर्तन कुम्भ के स्वरूप को भी परिवर्तित करने में कारक तत्व बने। और अब क्रात्रिम मेधा और उपभोक्तावाद के युग में जो स्वरूप यह कुम्भ-मेला धारण कर चुका है वह तो होना ही था। यह एक अपरिहार्य प्रगति का संकेत है! 2019 के कुम्भ के बाद अनेक अवसरों का प्रथम दृष्ट्या बी. बी.सी. के पूर्व संवाददाता मार्क टुली ने आउटलुक में गरीब गुरबों को इन पर्वों की आत्मा ही माना और उनके लिए अधिक सुविधाओं की वकालत की है!

प्रयाग में कुम्भ मेला आयोजित करने के लिए हम किसी को यदि सर्वाधिक श्रेय दें तो वह है वार्षिक माघ मेला का आयोजन। यही प्रतिवर्ष की प्रक्रिया-प्रशिक्षण है शासन-प्रशासन में बैठे सत्ताधीशों और अधिकारियों का। इसीलये बढ़ती आबादी के अनुरूप बढ़ते स्नानार्थियों के लिए उपयुक्त व्यवस्था निर्मिति संभव हो पाती है। अक्टूबर 16, 2017 को मंत्रिमंडल की बैठक में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री ने इलाहाबाद का नाम बदलकर प्रयागराज करने की घोषणा की और इसी तरह अक्टूबर 24, 2017 की अपने मंत्रिमंडल की बैठक में वे अर्ध कुम्भ (प्रत्येक छह वर्ष) और कुम्भ (प्रत्येक बारहवें वर्ष) को क्रमशः कुम्भ और महा कुम्भ घोषित कर चुके थे। चूंकि औपनिवेशिक काल से इस वार्षिक, छह वर्षीय एवं बारहवर्षीय मेलों का आयोजन 1938 के ''यूनाइटेड प्रोविंसेस मेलास एक्ट'' के तहत होता रहा था अतः इस नए नामकरण के साथ ही ''प्रयागराज मेला प्राधिकरण'' की स्थापना की घोषणा एक अध्यादेश के द्वारा 2017 के अंत में की गई। जहाँ स्वतंत्रता तक एक संयुक्त मजिस्ट्रेट मेला करवा लेता था वहीं स्वातंत्रोत्तर काल में जिलाधिकारी को यह दायित्व सौंपा गया किंतु इस नए प्राधिकरण बनने से इसका प्रत्यक्ष दायित्व मंडलायुक्त के ऊपर आ गया हालांकि वह इससे पूर्व भी (2013 में) मेला के सर्वोच्च अधिकारी एवं समन्वयक की भूमिका निभा रहा था अब उसको ये भूमिका अध्यादेश के द्वारा प्राप्त हो गई।

यह पूरा मेला क्षेत्र जुलाई से सितंबर के मध्य तक बाढ़ के पानी से आप्लावित रहता है और पानी उतरने के बाद ही इसके आयोजन की व्यवस्था का कोई काम शुरू हो पाता है। पुराने नक्शों और गंगा के कटान के अनुसार कुछ योजना बनाई जाती है

किंतु मेला क्षेत्र को विभिन्न सेक्टरों में विभाजित करने का कार्य देवोत्थान एकादशी को गंगा-पूजन से शुरू होता है।

वस्तुतः इस पूरे मेला नियोजन/प्रबंधन को पाँच चरणों में समझा जा सकता है-प्रथम जैसा कि ऊपर इशारा किया गया मेला नियोजन द्वितीय निर्माण कार्य तृतीय विभिन्न विभागों के समन्वय से मेला-प्रबंधनय चतुर्थ चरण इसका सकुशल पालनय तथा मेला समापन के पश्चात पूरे मेला क्षेत्र का विघटन या समेटना। इनको विस्तार समझने के लिये जहाँ 2013 में प्रयाग के कुम्भ मेले के समावेशी अध्ययन करने वाली संयुक्त राज्य अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय के नौ विशेषज्ञों वाली टीम की प्रकाशित रिपोर्ट, जो ''कुम्भः मैपिंग द एफेमरल मेगा सिटी'' (प्रकाशित, 2016) उपयोगी है वहीं 2013 के कुम्भ के दौरान नियुक्त मंडलायुक्त डा. देवेश चतुर्वेदी की पुस्तक ''द होली डिप'' भी कुम्भ के नियोजन और प्रबंधन पर एक अधिकारी की विस्तृत कृति है जिसमें शासन-प्रशासन के अंतर्सबंधों और उनके मध्य समन्वय के व्यावहारिक पहलुओं को सहजता से समझा जा सकता है- कैसे जटिलताओं को सुलझाते हुए इतने बड़े आयोजन को संपन्न किया जाता है!

कुम्भ को ''स्वस्थ कुम्भ'' बनाने के नजरिये से प्रयागराज में कुल 6000 बेडों की व्यवस्था सुनिश्चित किया गया; इनमें से 360 बेड का केंद्रीय अस्पताल मेला स्थल पर स्थापित किया गया। इनके अतिरिक्त सरकारी अस्पतालों में लगभग 3000 तथा उतने ही निजी अस्पतालों में उपलब्ध होंगे। मरीजों की दुविधा को ध्यान में रखते हुए 125 एम्बुलेंस सदैव उपलब्ध रहेंगी; इनके अतिरिक्त सात नदी एम्बुलेंस तथा एक हवाई एम्बुलेंस भी मेला क्षेत्र में उपलब्ध करवाई गई है।

पूरे मेला-क्षेत्र को पच्चीस सेक्टरों में विभाजन के साथ लौह की चेकर्ड प्लेटों से सड़कों की निर्मिति, पीपा पुलों का निर्माण, विद्युत वितरण, जल-आपूर्ति और सीवेज की व्यवस्था को अंजाम दिया जाता है। यानी जल निगम, विद्युत परिषद, सिंचाई विभाग, लोक निर्माण विभाग, स्वास्थ्य विभाग आदि प्रमुख विभागों के कार्य शुरू हो जाते हैं। इसी के साथ देवोत्थान एकादशी को ही कुल तेरह अखाड़ों के लिए भी भूमि आवंटन का कार्य प्रारंभ होता है।आइए कुम्भ 2025 के कुछ आयामों पर प्रकाश डालते हुए इसके प्रबंधन के बदलते स्वरूप को समझने का प्रयास किया जाए क्योंकि समस्त आयामों

को निश्चित ही एक लेख में समेटा जा ही नहीं सकता!!

2013 में मेला क्षेत्र का क्षेत्रफल 1936 हेक्टेयर था, वह 2019 को बढ़कर 3200 हेक्टेयर में और 2025 में 4000 हेक्टेयर हो गया। इसके प्रबंधन के लिए 3000 प्रशासनिक कर्मचारी नियुक्त किए गएय 10,000 स्वच्छता कर्मी नियुक्त किए गए; व्यवस्था बनाये रखने के लिए कुल 56 थाना क्षेत्रों में इसे विभक्त किया गयाय तथा 40000 पुलिसकर्मी नियुक्त किये गए। इसके साथ ही कुल बीस वॉच टावर बनाए गए जहाँ से व्यापक क्षेत्र की निगरानी संभव हो सके। मेला क्षेत्र में आगजनी की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए भी विशेष सतर्कता बरतने की दृष्टि से कुल 50 फायर स्टेशन बनाए गए थे और कुल 1300 फायर कर्मी तैनात किए गए।

जहाँ 1989 के कुम्भ में 23 ट्यूबवेल थे वहीं 2013 में 46; और अब उससे लगभग दुगनी (85) हो गई। इसी तरह 1989 में कुल 242 किलोमीटर पाइपलाइन बिछाई गई थी वहीं 2013 में 690 किलोमीटर और अब 2025 में लगभग सवा हजार (1249) किलोमीटर लंबी पाइपलाइन हो गई है, जिससे 56000 नलों में आपूर्ति की जाएगी। जलनिगम के अभियंताओं और कर्मचारियों को प्रत्येक सेक्टर में उचित प्रबंधन हेतु नियुक्त किया गया है।

इसी तरह जहाँ नदी पार करने के लिए 2013 में मात्र 18 पीपा पुल बने थे वहीं 2025 में 31 बने क्योंकि पूरे क्षेत्र को 25 सेक्टर में विभाजित किया गया है और इन पुलों से ही विभिन्न सेक्टरों में आवागमन संभव होता है। स्वच्छता को प्रमुखता प्रदान करने के उद्देश्य से 20000 सफाईकर्मी नियुक्त किये गए हैं इनके साथ ही 5000 घाट सेवा मित्र (कर्मी) तथा 2500 गंगादूत सिर्फ स्नान घाटों पर सफाई करने के लिए तैनात किए गए हैं। इसी के साथ डेढ़ लाख शौचालय तथा 5000 टॉयलेट बनाए गए हैं। स्नानार्थियों की सिविधा के लिए 44 पक्के घाट सुव्यवस्थित किए गए हैं जिनमें से नौ (9) नवीन हैं।भले ही नेशनल ग्रीन ट्रिब्युनल की रिपोर्ट बहुत नकारात्मक है फिर भी अप्रत्याशित भीड़ के चलते शायद व्यवस्था और बढ़ाने की आवश्यकता है क्योंकि स्वच्छता के लिए ही 350 ''सक्शन मशीनों'' को लगाया गया था। इसके अतिरिक्त 120 ''हॉपर टिपर ट्रक'' और 40 ''कॉम्पैक्टर'' लगाये गए और पूरे मेला क्षेत्र में जगह-जगह 2500 ''डिस्टबिन'' रखी गयीं थीं ताकि आगंतुक कूड़ा उसी में फेंके! तकनीकि प्रगति के साथ कदमताल करते हुए मेले पर निरंतर निगरानी बनाये रखने के उद्देश्य से ही प्रसासनिक ''कंट्रोल कमांड सेंटर'' को भी मजबूत किया गया है अब यहाँ 80 मेसेज डिसप्लेज, 2750 सी.सी.टी.वी. कैमरों के अलावा 240 क्रात्रिम मेधा वीडियो विश्लेषण सिस्टम लगाए गए हैं। इतना ही नहीं कुम्भ का एक विशेष ऐप निर्मित करके इसे ''डिजिटल'' बनाया गया कोई भी इसे डाउनलोड कर के अपने मतलब की जानकारी और सहायता प्राप्त कर सकता है- इसीलये यह ऐप ग्यारह (11) विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध है।

एक नजर पुलिस व्यवस्था पर भी डालनी चाहिए क्योंकि इनके बिना तो कानून-व्यवस्था का प्रबंधन सोचा भी नहीं जा सकता। चूँकि विभिन्न राज्यों, मंत्रालयों यथा रक्षा, रेलवे,

टी.एस.'' तथा ''स्पेशल टास्क फोर्स'' के प्रशिक्षित कमांडो भी किसी भी आपातकालीन परिस्थितियों से निबटने के लिए तैनात किए गए। इतना ही नहीं रेल यातायात के मद्दे नजर राज्य रेलवे पुलिस (जी.आर.पी.)। इस व्यवस्था को और मजबूत बनाने की नियत से पी.ए.सी., एस.डी.आर.एफ., घुड़सवार पुलिस, जल पुलिस और महिला पुलिस टीम भी नियुक्त की गई।

नागरिक उड्डयन, रक्षा-संपदा, आयकर, जी एस टी, पुलिस, संचार आदि-आदि के मध्य समन्वयक के दायित्व के निर्वहन के चलते मंडलायुक्त को मेला प्राधिकरण का अध्यक्ष बनाया जाता है। पुलिस महानिरीक्षक तथा जिलाधिकारी प्रयागराज इस प्राधिकरण के पदेन उपाध्यक्ष होते हैं। इसके अतिरिक्त मेला अधिकारी मेला जनपद का जिलाधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक भी नियुक्त किए जाते हैं। पुलिस को सुरक्षा, भीड़ नियंत्रण, यातायात/ट्रैफिक व्यवस्था, जल-सुरक्षा आदि के दायित्व निभाने पड़ते हैं। जहाँ 1954 के कुम्भ में कुल 5264 पुलिसकर्मी नियुक्त किए गए थे; 1966 में 6116; 1977 में 6007; 1989 में 10,704; 2001 में 14, 223; 2013 में 17, 160 पुलिस कर्मी नियुक्त हुए थे वहीं 2025 में इनकी कुल संख्या बढ़कर 37,000 हो गई।

इतना ही नहीं मेला को सुरक्षित संपन्न करने के लिए पूरे क्षेत्र को तीन भागों में बांटा जाता है- बाह्य भाग, जहाँ से स्नानार्थी मेला क्षेत्र में प्रवेश करते हैं; आंतरिक भाग, मुख्य मेला क्षेत्र एवं पीपा पुलों के प्रवेश द्वार तथा पृथक/केंद्र भाग अर्थात् स्नानघाट एवं ''सर्क्युलेटिंग एरिया''। इन्हीं के साथ आतंकविरोधी ''ए.

सुरक्षा के साथ ही कुम्भ को ''स्वस्थ कुम्भ'' बनाने के नजरिये से प्रयागराज में कुल 6000 बेड़ों की व्यवस्था सुनिश्चित किया गया; इनमें से 360 बेड़ का केंद्रीय अस्पताल मेला स्थल पर स्थापित किया गया। इनके अतिरिक्त सरकारी अस्पतालों में लगभग 3000 तथा उतने ही निजी अस्पतालों में उपलब्ध होंगे। मरीजों की दुविधा को ध्यान में रखते हुए 125 एम्बुलेंस सदैव उपलब्ध रहेंगी; इनके अतिरिक्त सात नदी एम्बुलेंस तथा एक हवाई एम्बुलेंस भी मेला क्षेत्र में उपलब्ध करवाई गई है।

14 फरवरी, 2025 को लखनऊ में विकासनगर के खुर्रमनगर फ्लाइओवर के उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति में केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि कल्पवास की अवधि समाप्त होने तथा कुम्भ मेला समापन के समय तक उत्तर प्रदेश की जी.डी.पी. में तीन लाख करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है! ◆

मो. : 9452799008

अद्भुत अभूतपूर्व अविस्मरणीय

–अमी गणात्रा
(लेखक और वक्ता)

जब मैं यह लिख रही हूँ, महाकुम्भ 2025 का अंतिम अमृत स्नान, माघ पूर्णिमा स्नान, अभी-अभी समाप्त हुआ है। मेले में लगभग 2 सप्ताह बिताकर मैं वापस लौटी हूँ। मैं वहां के पैमाने, भव्यता और श्रद्धा को देखकर विस्मय में हूँ। अब तक 48 करोड़ लोग त्रिवेणी संगम में पावन डुबकी लगा चुके हैं। 48 करोड़ लोग! और मेला अगले 2 सप्ताह और चलेगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत की आधी आबादी कुम्भ में डुबकी लगाने तब तक प्रयागराज पहुंच जाएगी। मैं हिंदुओं की उस आधी आबादी में से एक हूँ यह विचार मुझे रोमांचित कर रहा है।

दो सप्ताह में मैंने कई डुबकी लगाई, अखाड़ों में घूमी, कुछ नागा साधुओं और सन्यासियों से बात की, मौनी अमावस्या के अमृत स्नान से पहले नए नागा साधुओं के दीक्षा समारोह की झलक देखी, आचार्यों के प्रवचनों के साथ-साथ भावपूर्ण प्रदर्शनों सहित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया, भंडारों में खाया, लेटे हनुमानजी और अकबर किले में अक्षयवट के दर्शन किए, और विभिन्न तीर्थयात्रियों और पर्यटकों से बातचीत की। मेले का आनंद लेने आपको चलने के लिए तैयार रहना होगा। भीड़ और कतारों में धैर्य रखना होगा। लेकिन यहां यह धैर्य स्वाभाविक रूप से आ जाता है क्योंकि आप करोड़ों लोगों के साथ होते हैं।

हर अनुभव अनूठा था, हर बातचीत संजोने लायक थी। पर अगर मुझे यहां आने पर तीन 'अवश्य करने वाली' चीजों की सूची बनानी हो, तो मेरा पहला मत होगा-स्नान अवश्य करियेगा। पर उसी के लिए तो कुम्भ जाना हैं, आप कहेंगे। हां, परन्तु फिर भी मैंने देखा है कि यहां बहुत सारे लोग हैं, खासकर वे जो पहली बार आ रहे हैं, जो देखना तो चाहते हैं लेकिन सबके साथ सबके बीच स्नान नहीं करना चाहते। मैं सभी से आग्रह करूंगी कि वे अपने सारे डर और संकोच को किनारे कर डुबकी जरूर लगाएं।

अपनी मां की उपस्थिति में ही अनुभव किया जा सकता है। उसकी उपस्थिति में, हम उसके बच्चे बन जाते हैं।

महाकुम्भ की एक छवि जो हमेशा मेरे साथ रहेगी, वह संगम में एक साथ डुबकी लगाते हुए पूज्य आचार्यों और महामंडलेश्वरों द्वारा प्रदर्शित बालसुलभ आनंद की है। वे एक-दूसरे पर पानी उड़ा रहे थे, वे छोटे बच्चों की तरह सहजता और निर्दोषता से अपनी मैय्या के पानी में खेल रहे थे। कोई आश्चर्य नहीं कि हम अपनी नदियों को मां के रूप में पूजते हैं। उनका पानी उस अखंड, निश्चिंत आनंद को जगाता है, जो केवल अपनी मां की उपस्थिति में ही अनुभव किया जा सकता है। उसकी उपस्थिति में, हम उसके बच्चे बन जाते हैं।

मैंने अपने सभी प्रियजनों को याद करते हुए डुबकी लगाते समय उस आनंद का अनुभव किया है। मैंने डुबकी लगाने वालों के चेहरों पर वही खुशी देखी है, यहां तक कि उन लोगों के चेहरे पर भी जो पानी में उतरने से हिचकिचा रहे थे। वे स्पष्ट रूप से अधिक खुश, शांत, तरोताजा, स्वच्छ...हल्के दिखाई दिए। मुझे नहीं पता कि डुबकी लगाना से पाप धुलते है या नहीं, लेकिन मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि कुछ हद तक चित्त शुद्धि अवश्य होती है!

मेरी दूसरी सलाह है, अखाड़ों में जाएँ, विशेषकर सात शैव अखाड़ों में, नागा साधुओं और संतों से मिलें। उनके पास श्रद्धापूर्वक जाएँ, उनसे बातचीत करें। मैं कई बार सोचती हूँ कि नागा साधु बनने के लिए किस तरह की प्रेरणा की आवश्यकता होती होगी! नागा दीक्षा प्रक्रिया और उसके बाद का जीवन मानवीय संकल्प शक्ति और धीरज की पराकाष्ठा है। नागा साधु समाज के हित के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं न की संसार से भागने के लिए सन्यास लेते हैं। अगर भागना ही लक्ष्य होता तो आसान रास्ते भी हैं, कोई स्वयं से इतना कठिन मार्ग नहीं चुनेगा। ''आपने नागा बनाना क्यों चुना?'' मैंने महानिर्वाणी

अखाड़े के एक साधु से पूछा। 'कोई भी चुन कर नागा नहीं बन सकता। यह प्रारब्ध की बात है कि कैसे गुरु मिलते हैं', उन्होंने संतोष की मुस्कान के साथ कहा। मैंने यही प्रश्न जूना अखाड़ा की एक महिला नागा साधु से पूछा। 'यह प्रारब्ध ही है, बेटा। मेरे तुम जैसे चार बच्चे हैं और आज मैं यहाँ हूँ। वरना वर्षों तक भगवा वस्त्र पहनने के पश्चात भी नागा नहीं बन पाते', उसने अपने सामान्य तंबू में मुझे चाय पिलाते हुए कहा। मैंने ऐसे भी नागा साधुओं को देखा है जो अपने जीवन में काफी समृद्ध थे, पेशेवर थे, और फिर भाग्यवश उन्होंने नागा बनने का फैसला किया। मेरा मन अभी भी हैरान है कि कोई अपनी मर्जी से यह रास्ता कैसे चुन सकता है। यह प्रारब्ध का ही कमाल हो सकता है, जैसा कि उन साधुओं ने कहा था।

महाकुम्भ की एक छवि जो हमेशा मेरे साथ रहेगी, वह संगम में एक साथ डुबकी लगाते हुए पूज्य आचार्यों और महामंडलेश्वरों द्वारा प्रदर्शित बालसुलभ आनंद की है। वे एक-दूसरे पर पानी उड़ा रहे थे, वे छोटे बच्चों की तरह सहजता और निर्दोषता से अपनी मैय्या के पानी में खेल रहे थे। कोई आश्चर्य नहीं कि हम अपनी नदियों को मां के रूप में पूजते हैं।

मेरा तीसरी सलाह है, 'बस सहज रहो'। कुम्भ के अनुभव में अपने आप को बहने दो। भ्रमण करो, लंगर में प्रसाद खाओ और लोगों को देखो। घर वाली सुविधाएं यहाँ नहीं हैं, उनकी कामना भी मत करो। परमार्थ निकेतन की साध्वी भगवतीजी का यह कथन हमेशा मेरे साथ रहेगा, उन्होंने कहा 'व्यवस्था के लिए नहीं, आस्था के लिए आओ'। करोड़ों लोग आपके साथ होंगे। उनकी सारी प्रार्थनाएँ और सकारात्मकता आपके साथ होगी। उस सकारात्मकता को, आध्यात्म को आत्मसात करो, बस सहज बने रहो! यह मेरा कुम्भ का तीसरा अनुभव था। मैंने अपने पिछले अनुभवों के बारे में पहले भी लिखा है। मैंने उस लेख का शीर्षक 'कुम्भः श्रद्धा की शक्ति' रखा था। इस महाकुम्भ ने उस अनुभव को और पुष्ट किया है। सबसे अमीर से लेकर सबसे गरीब, धार्मिक नेताओं से लेकर राजनेताओं तक, व्यापारियों से लेकर फिल्म अभिनेताओं तक, खेल हस्तियों से लेकर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स तक, शहरी पेशेवरों से लेकर ग्रामीण किसानों तक, पुरुष, महिलाएं और यहां तक कि तृतीय प्रकृति के लोग भी सनातन धर्म के इस महापर्व का हिस्सा बनने के लिए प्रयागराज आये। कुछ आस्था से प्रेरित होकर आए, कुछ जिज्ञासा से और कुछ 'FOMO' -सब गए मैं रह गया - के डर से आये। वे न केवल आए, बल्कि उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि सोशल मीडिया पर अपनी फोटो डालकर कुम्भ में अपनी उपस्थिति दर्ज कराए, जैसे गर्व से अपने दोस्तों कह रहे हों- मैं यहाँ हूँ, आप कहाँ हो?

इस प्रकार समाज के हर वर्ग के लोगों का अपनी हिन्दू आस्था को खुलकर अपनाना और ऐसे विशेष सनातनी महापर्व का हिस्सा बनाना, इस महान सभ्यता की चेतना और आत्मविश्वास के जागृत होने का स्पष्ट संकेत है; एक ऐसी सभ्यता जो समय और नियति के प्रहारों से क्षतिग्रस्त अवश्य हुई पर नष्ट नहीं, जो फिर एक बार अपनी पहचान सुदृढ़ कर रही है और विश्व अपने सम्मान का स्थान पा रही है।

और ऐसा क्यों न हो? विनाशकारी विचारधाराओं, अत्यंत संकीर्ण और आत्मकेंद्रित विश्वदृष्टि से त्रस्त दुनिया में, यह एक

ऐसी सभ्यता है जो शांति और समरसता की शिक्षा प्रदान करती है। कुम्भ मेला समरसता का प्रतीक है। हर वर्ग और हर प्रकार के लोग एक साथ स्नान करते हैं, सभी एक साथ चलते हैं, सभी एक साथ खाते हैं, सभी एक साथ प्रार्थना करते हैं। हमारे भगवान, हमारी गंगा, हमारी यमुना सभी पर अपना आशीर्वाद बरसाते हैं। इतना ही नहीं, वे आस्तिक और नास्तिक के बीच भी भेदभाव नहीं करते। हमारी संस्कृति में सभी को आध्यात्मिक उत्थान का अधिकार है, सभी को 'सत्-चित-आनंद' प्राप्त करने का अधिकार है। केवल इतना ही मायने रखता है व्यक्ति का कर्म और भाव कैसे हैं। यह एक ऐसी सभ्यता है जो विविधता को सहजरूप से अपना लेती है, जो विविधता का जश्न मनाती है, जो एकता का सन्देश देती हैं, जबरदस्ती थोपे गए एकरूपता का नहीं।

अपनी बात समाप्त करने से पहले, मैं भारत सरकार और यूपी सरकार की उनके बेहतरीन प्रबंधन के लिए सराहना करना चाहूंगा। लोगों के ठहरने को आरामदायक बनाने पर पूरा ध्यान दिया गया है। सुरक्षा और सफाई पर खास ध्यान दिया गया है। इतने लोगों को प्रबंधित करना अपने आप में एक उपलब्धि है और प्रशासन इस मामले में बहुत सफल रहा है। मुझे विश्वास है कि हम जल्द ही इस पर कई केस स्टडीज देखेंगे।

अंत में बस इतना कहना है कि इस बार प्रयागराज में जो हुआ वह अभूतपूर्व है। इस महाकुम्भ को इतिहास में सनातन चेतना, समरसता और प्रबंधन कौशल के प्रदर्शन के लिए याद किया जाएगा। मुझे विश्वास है कि यह भारत की श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने की शुभ शुरुवात है।

हर हर गंगे! हर हर महादेव! ♦

मो. : 8928351754

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं

–रामधनी द्विवेदी
(वरिष्ठ पत्रकार)

जब आप यह लेख पढ़ रहे होंगे, विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन महाकुम्भ संपन्न हो चुका होगा और पवित्र प्रयागराज की धरती से संत समाज और श्रद्धालु अपने आश्रमों और घरों में पहुंच चुके होंगे। यह महाकुम्भ कई कारणों से स्मृति में हमेशा के लिए बना रहेगा, जो लोग वहां पहुंच सके, उनके लिए भी और जो किन्हीं कारणों से नहीं पहुंच पाए, उनके लिए भी। सनातन के विशाल भाव-स्पंदन, आस्था और विराट सांस्कृतिक वैभव का यह जीवंत दृश्य जिसने देखा है, वह इसे भूल नहीं सकता। यह अब तक के ज्ञात सभी कुम्भों में सबसे विशाल आयोजन था और इसने विश्व रिकॉर्ड भी बनाया। सीमित समय और सीमित क्षेत्र में करोड़ों लोगों के आगमन, अमृत स्नान और वापसी का यह रिकॉर्ड अब तक का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है। 13 जनवरी से 26 फरवरी, 2025 तक 45 दिनों का यह आयोजन भारत की विशालता, विविधता, उदारता, समग्र एकता, समेकित संस्कृति और वैभव का भी कुम्भ था।

देश के सभी मार्ग एक दिशा में चल रहे थे, एक विचार के साथ चल रहे थे, एक लक्ष्य से चल रहे थे। सिर्फ एक उद्देश था उनके समक्ष गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पवित्र संगम में स्नान कर अपने मन-मानस को कलुषमुक्त करना और इससे जीवन के लिए नई ऊर्जा प्राप्त करना। कुल पचास करोड़ से अधिक लोगों ने विभिन्न पर्वों पर पुण्य स्नान किया।

कुमारिल भट्ट और आदि शंकराचार्य के मिलन और सम्राट हर्ष के सर्वस्व दान से सुगंधित संगम की रेती हर कुम्भ में धर्म-ज्ञान चर्चा और सनातन विश्वासों का भी संगम बनती है।

श्रद्धालुओं की देह भाषा और चेहरे पर बिखरी प्रसन्नता से ही अनुमान लगाया जा सकता है। वे प्रयागराज जाकर, संगम स्नान कर पुण्यानुभूति से रोमांचित, गदगद थे। लगभग सभी श्रद्धालुओं की यही स्थिति थी। इसी अनुभव को पाने के लिए ठीक से न चल पाने वाले वृद्ध झुकी कमर लिए भी यहां पहुंचे थे। वे जीवन के अंतिम अमृत को पाने से वंचित नहीं रहना चाहते थे। वे न थके, न उन्हें भूख-प्यास लगी। संगम के शीतल जल ने उनकी देह के साथ आत्मा को जो तृप्ति प्रदान की उसे वह शेष जीवन के लिए संजो लेना चाहते थे। सित और असित (गंगा और यमुना) नदियों का मिलन स्थल देखना उनके लिए अनोखी घटना थी जहां दोनों पौराणिक नदियां काफी दूर तक अलग-अलग रहते हुए भी एक साथ चलती हैं और फिर आगे एकाकार हो गंगा का नाम धारण कर लेती हैं- देखत स्यामल धवल हिलोरें। पुलकि सरीर भरत कर जोरे।

यहां सिर्फ जीवन को अमरत्व प्रदान करने वाला अमृत ही नहीं, जीवन को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करने वाला ज्ञान भी प्रवाहित होता है। यहां सनातन के विविध रूप श्रद्धालुओं को न केवल रोमांचित और मोहित करते हैं अपितु उनके मन की अनेक जिज्ञासाओं का भी समाधान करते हैं। महाकुम्भ में आना, इसे देखना, इसे अनुभव करना, गंगा, यमुना और उनके संगम में स्नान करने की अनुभूति को शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। मीलों पैदल चले, थके लोगों से जब उनसे उनकी अनुभूति पूछी गई तो उनका कहना था कि संगम स्नान से सब भूल गए। जीवन का यह अलौकिक अनुभव था। कैसा लगा यह बताया नहीं जा सकता। ऐसी ही स्थिति में तुलसी बाबा कहते हैं-गिरा अनयन नयन बिनु बानी-। जिह्वा जो बोल सकती है, उसके पास देखने के लिए नेत्र नहीं हैं और जिन नेत्रों ने देखा, उनके पास बोलने की शक्ति नहीं है। सब कुछ वर्णनातीत है। महाकुम्भ में अमृत स्नान का आनंद सिर्फ अनुभव किया जा सकता है, उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह सिर्फ

सनातन के विशाल भाव-स्पंदन, आस्था और विराट सांस्कृतिक वैभव का यह जीवंत दृश्य जिसने देखा है, वह इसे भूल नहीं सकता। यह अब तक के ज्ञात सभी कुम्भों में सबसे विशाल आयोजन था और इसने विश्व रिकार्ड भी बनाया। सीमित समय और सीमित क्षेत्र में करोड़ों लोगों के आगमन, अमृत स्नान और वापसी का यह रिकॉर्ड अब तक का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है।

इतने विशाल और सफल आयोजन के लिए उप्र की योगी सरकार को साधुवाद मिलना चाहिए। पूरे आयोजन की तैयारी उन्होंने खुद अपनी देखरेख में कराई। उनके पास 2019 के कुम्भ आयोजन का अनुभव था। उसी समय प्रयागराज का स्वरूप बदल गया था। इस बार उसे और संवारा गया, मेला क्षेत्र का विस्तार हुआ, व्यवस्था में सहयोग करने वाले विभागों और संगठनों की संख्या बढ़ी और 13 दिसंबर को मेला में

प्रधानमंत्री ने पूजन कर इसका शुभारंभ किया। ठीक एक महीने बाद 13 जनवरी 2025 को पौष पूर्णिमा के पहले ही स्नान में श्रद्धलुओं का अपार समुद्र देख कर लगने लगा था कि इस महाकुम्भ में अमृत स्नान करने वालों का रिकार्ड टूटने वाला है और ऐसा ही हुआ। इस महाकुम्भ में सिर्फ अपने देश के ही नहीं दुनिया के अनेक देशों के लोग आए। कितने भारतीय तो विदेशों से सिर्फ महाकुम्भ स्नान के लिए भारत आए। माघी पूर्णिमा के दिन 35 देशों के श्रद्धालुओं ने एक साथ संगम में डुबकी लगाई। जो भी विदेशी आए उनका अनुभव अलौकिक था। वे भारत के इस धर्म आयोजन को देख चकित ही नहीं भाव विभोर भी थे। नदियों में इस तरह का स्नान उनके लिए नया था। नार्वे के पूर्व जलवायु और पर्यावरण मंत्री ऐरिक सोलहेम ने कहा कि संगम स्नान का उनका अनुभव जीवन में एक बार ही मिलने वाला अनुभव था जो अविस्मरणीय है। दुनिया के मानव इतिहास में इतना बड़ा आयोजन कहीं नहीं हुआ, न अमेरिका में, न चीन में, न यूरोप में, न कहीं और।

देश के अनेक बड़े और चर्चित लोगों, विभिन्न दलों के राजनेताओं, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना स्थान बनाने वाले प्रमुख लोगों ने भी महाकुम्भ के इस आयोजन में भाग लिया और पुण्य स्नान किया। यह महाकुम्भ पहला ऐसा आयोजन था जिसमें लगभग सभी शंकराचार्यो ने भाग लिया और अपने भक्तों को धर्म के गूढ़ तत्व समझाए। सभी अखाड़ों, मठों, आश्रमों के शीर्षस्थ संतों की उपस्थिति भी इस महान आयोजन की सफलता में योगदान कर रही थी। मेला क्षेत्र के अनेक सेक्टरों में दस लाख से अधिक लोग महीने भर का कल्पवास कर रहे थे। माघी पूर्णिमा के साथ उनका यह कल्पवास पूरा हुआ। इस दौरान उन्होंने त्रिकाल गंगा स्नान, जप, तप, दान और भजन कीर्तन के साथ कथा श्रवण के कठोर नियमों का पालन करते हुए अपने को पवित्र किया। यह भी ध्यान देने की बात है कि इतने बड़े आयोजन में कोई भी भूखा नहीं रहा। प्रतिदिन अनेक आश्रमों और दानदाताओं के निरंतर भंडारे चलते थे जिनमें निशुल्क भोजन की व्यवस्था थी, इस संकल्प के साथ कि त्रिवेणी के तट पर कोई भी भूखा न रहे। पूरा मेला क्षेत्र अन्न क्षेत्र बन गया था। कई आश्रमों ने भीड़ को देखते हुए अपने पंडालों को सबके लिए खोल दिया था और भंडारे शुरू कर दिए थे। अन्न दान सबसे बड़ा दान है। अन्न को ही अष्टावक्र जैसे ऋषियों ने ब्रह्म की संज्ञा दी है। अन्न से प्राप्त ऊर्जा ही हमें ब्रह्म चिंतन की शक्ति देती

है। अन्न पाने से हुई तृप्ति आत्मा की तृप्ति जैसी अनुभूति देती है।

यह मेला धार्मिक जिज्ञासुओं और श्रद्धालुओं के लिए था। यहां पहुंचे लोग तरह-तरह से अपनी जिज्ञासा शांत करने में लगे थे। सबके आकर्षण के केंद्र अलग थे। कोई व्यवस्था पर मुग्ध था, कोई नागाओं के अक्खड़पन और उनके कठिन तप पर, कोई संतों के चमत्कारों पर तो कोई आइआइटियन बाबा में रुचि ले रहा था। इस महाकुम्भ ने कई लोगों को रातोंरात लोकप्रिय भी किया। जाकी रही भावना जैसी के अनुसार जो मेले को जैसा देखना चाहता था, देख रहा था, अपनी स्मृतियों में कैद कर रहा था, अपने मन को संतुष्ट कर रहा था।

मेले में कुछ अप्रिय घटनाएं भी हुईं। दो एक जगह आग लगी और मौनी अमावस्या के स्नान पर रात में भगदड़ मचने से कई लोग हताहत हुए। यह दुखद था। मुख्यमंत्री सहित सभी लोग इससे मर्माहत थे। इससे व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लग रहा था। राजनीतिक विरोधियों ने सरकार की आलोचना की, तरह-तरह के आरोप लगाये। सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाने की भी कोशिश हुई और छोटी-मोटी घटनाओं को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया गया। बाद में ऐसे दर्जनों सोशल मीडिया अकाउंट पर कार्रवाई हुई और एफआइआर दर्ज की गई। लेकिन प्रशासन ने इससे सबक सीखा और भीड़ नियंत्रण को और चुस्त किया जिससे आगे के सभी स्नान कुशलता पूर्वकर संपन्न हुए और कहीं से भी किसी तरह की अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली। इतने बड़े मानव महासागर को संभाल पाना कठिन कार्य था लेकिन शासन और प्रशासन ने दृढ़ इच्छाशक्ति से यह किया और विश्व के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। सभी विभागों ने इस आयोजन को सफल बनाने में अपनी जान लगा दी। रेलवे ने प्रतिदिन तीन सौ से अधिक ट्रेनों का प्रयागराज से संचालन किया, हजारों पुलिस और सुरक्षाकर्मी बिना खाए-सोए ड्यूटी पर तैनात रहे। स्वास्थ्य विभाग सजग रहा और जैसी जरूरत हुई चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई। सफाई कर्मचारियों का विशेष सहयोग रहा जिससे किसी को भी मेले में कहीं भी गंदगी की शिकायत नहीं मिली। जल पुलिस लगातार गश्त करती रही जिससे कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। एक तरह से देखा जाए तो वास्तविक पुण्य के अधिकारी तो इस महा आयोजन की व्यवस्था में लगे लोग थे। यह उनके लिए एक चुनौती थी जिसे उन्होंने स्वीकारा और सफलता पूर्वक इसे संपन्न कराया।

अंत में तुलसी बाबा के शब्दों में -

सकल काम प्रद तीरथराऊ।

बेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ।।

◆

मो. : 9560798111

प्रयागराज महाकुम्भ : एक समग्र परिदृश्य

-आचार्य श्री अमिताभ जी 'महाराज'
(लेखक श्रीमद् भागवत के सुविख्यात व्याख्याता हैं)

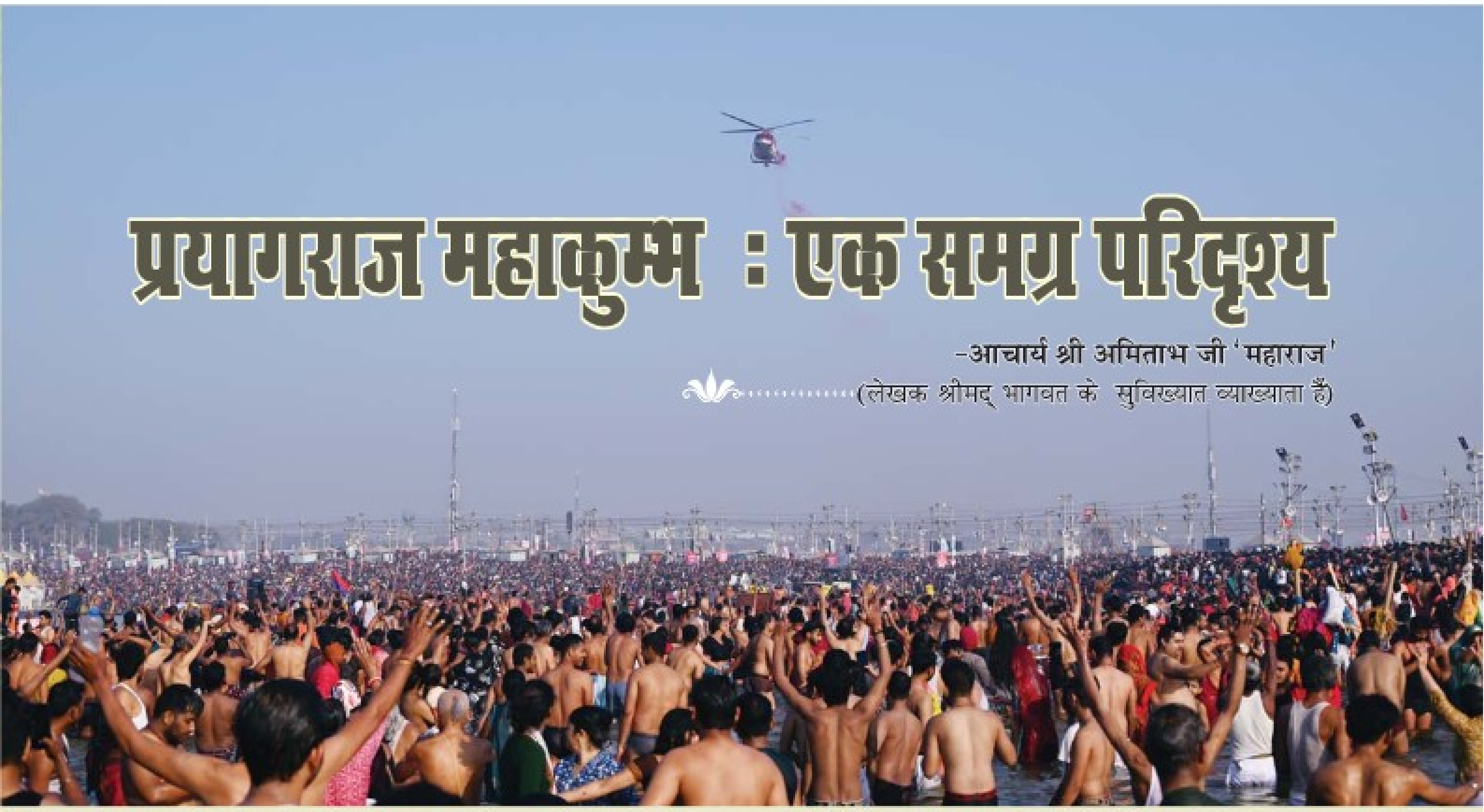

पौष पूर्णिमा से प्रारंभ हुए प्रयागस्थ कुम्भ ने समग्र रूप से अनेक अप्रत्याशित संदर्भों को संकेत किया है। यह सनातन हिंदू पुनर्जागरण के परिप्रेक्ष्य को गति प्रदान कर रहा है। जाति, संप्रदाय, आर्थिक स्थिति आदि समस्त सीमाओं को पार करके भारतवर्ष की समस्त जनसंख्या का एक बहुत बड़ा अंश प्रयाग आकर त्रिवेणी संगम स्नान करने के लिए कृत संकल्पित दिखाई दे रहा है। सनातन की प्रतिष्ठा के लिए यह एक महत्वपूर्ण क्षण है। कुम्भ की मान्यता तो अनंत काल से है, किंतु इस बार इसने देश के तथा विदेश के प्रभावशाली प्रभुत्व युक्त शासक वर्ग तथा बहुत बड़ी संख्या में युवा वर्ग को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। इस आधुनिक युग में कुम्भ के आयोजन का यह महत्वपूर्ण अवदान है।

सनातन की प्रतिष्ठा के लिए यह एक महत्वपूर्ण क्षण है। कुम्भ की मान्यता तो अनंत काल से है, किंतु इस बार इसने देश के तथा विदेश के प्रभावशाली प्रभुत्व युक्त शासक वर्ग तथा बहुत बड़ी संख्या में युवा वर्ग को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। इस आधुनिक युग में कुम्भ के आयोजन का यह महत्वपूर्ण अवदान है।

प्राचीन परंपरा तथा आधुनिक तकनीक संयुक्त युवाओं का यह सम्मेलन या योग एक नवीन संस्कृति को उदय प्रदान करता है। जिसके अंतर्गत तकनीक के सहयोग से धार्मिक मान्यताओं और नैतिक परंपराओं को और अधिक गति प्रदान करते हुए सकारात्मक रूप से बहुत बड़े वर्ग तक प्रसारित किया जा सकता है। शासकीय सत्ता के सुदृढ़ राजनीतिक सामाजिक जीवन दर्शन एवं समर्थन ने कुम्भ के इस आयोजन को विशेष आयाम प्रदान किए हैं। आज प्रयागराज वेटिकन सिटी तथा मक्का मदीना की तरह सनातनी हिंदुओं की आस्था के एक असंदिग्ध केंद्र के रूप में स्थापित हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रयागराज की पवित्र धरती पर पवित्र कुम्भ मेला क्षेत्र में प्रवेश करके त्रिवेणी संगम का स्नान यदि नहीं किया तो जीवन व्यर्थ हो जाएगा। भारतवर्ष की बहुत बड़ी जनसंख्या ने इस संकल्पना को अपने हृदय में स्थापित कर लिया है। जिसका परिणाम हमें प्रयागराज में आ रही भारी भक्तों की भीड़ के रूप में दिखाई देता है। ऐसी संभावना है भविष्य में भी प्रयागराज में त्रिवेणी संगम स्नान एक अनिवार्य धार्मिक कृत्य के रूप में संपूर्ण सनातनी हिंदुओं के मध्य स्थापित हो जाए। अर्थात इसको किए बिना

जीवन को पूर्णता प्राप्त नहीं होगी ऐसी संकल्पना सुनिश्चित हो जाए।

राजकीय सत्ता के असंदिग्ध समर्थन एवं सहयोग से सनातन के इस अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण कुम्भ मेला के स्वरूप ने स्वयं को न केवल अधिक स्थायित्व प्रदान किया है अपितु इसकी मान्यताओं एवं संकल्पनाओं का अपरिमित भाव से अकल्पनीय विस्तार भी हुआ है। यदि विदेश के संदर्भ में इसका मूल्यांकन करें तो स्पष्ट होता है केवल स्वयं के लिए जीवित रहने की संकल्पना, जिस पर विदेशी संस्कृति अपने प्राणों को धारण करती है, वह इस मेले के परिप्रेक्ष्य में बड़ी खोखली प्रतीत होती है। बहुत से विदेशी युवाओं ने प्रयागराज आकर के अपने जीवन की व्यर्थता एवं स्वयं के आत्म केंद्रित होने का एहसास किया है तथा सामाजिक मूल्यों के प्रसार के लिए एवं ''मानव सेवा माधव सेवा'' की संकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए भारतीय धार्मिक परंपराओं को न केवल स्वीकार किया है अपितु स्वयं संन्यास आश्रम में प्रवेश करने में भी उनको कोई हिचकिचाहट दिखाई नहीं देती।

यह सनातन की वैश्विक विजय का उद्घोष भी है। अपनी पूर्वकालिक राजनीतिक व्यवस्थाओं के कारण अपने धर्म एवं अपने मूल्यों के प्रति लज्जा का अनुभव करने वाले हिंदू आज गर्व से संपूर्ण विश्व में स्वयं के हिंदू होने का उद्घोष करने में किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं करते। अपितु अब हिंदू होने पर उन्हें गर्व की अनुभूति होती है। संपूर्ण कुम्भ मेला क्षेत्र में चल रहे बड़े-बड़े भंडारे, निःशुल्क चिकित्सा शिविर तथा सेवा हेतु किए जाने वाले अनेक प्रकल्प मानवता की सेवा के लिए स्वयं को एवं स्वयं के साधनों को समर्पित कर देने की भारतीय परंपरा को स्पष्ट रूप से स्थापित करते हैं तथा इस संपूर्ण कुम्भ मेले की प्रक्रिया और क्रियान्वयन को एक जीवंत मानवीय स्वरूप भी प्रदान करते हैं।

यह एक प्रकार से कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन को भी श्रद्धांजलि है। जिसने शासकीय सत्ता के सकारात्मक उपयोग से कुम्भ की संरचना एवं प्रक्रिया को प्रयागराज में महादानभूमि के रूप में स्थापित किया था। हम सभी को इससे सीखने की आवश्यकता है कि हम अपने साधनों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तो उपभोग करें किंतु इसका एक अंश समाज के हित के लिए भी विनियोग करें तभी मानवीयता चरितार्थ होती है, तभी धर्म का पालन किए जाने की संकल्पना व्यर्थ होने की अपेक्षा प्रभावी रूप से स्थापित होती है।

मेरा अपना मानना है भारतीय युवा वर्ग एवं वैदेशिक युवा वर्ग मानव सेवा की भावना से इस कुम्भ के माध्यम से बहुत बड़े स्तर पर अनुप्राणित एवं प्रेरित हुए हैं। जिसका प्रभाव हमको आगे आने वाले समय में अवश्य दिखाई देगा। जाति और संप्रदाय की मान्यताओं में सनातन के फंसे रहने को लेकर जो आलोचना करते हैं। उनको देखना चाहिए पवित्र त्रिवेणी संगम में स्नान करने वालों से उनकी जाति या धर्म नहीं पूछा जाता। जो सामर्थ्यवान है उनके साथ निर्धन भी स्नान करते हैं। जितने भी सेवा प्रकल्प चल रहे हैं। उनमें भी कोई किसी की जाति और धर्म को पूछ करके उनकी

सेवा नहीं कर रहा है। मानव मात्र की सेवा का उद्घोष सनातन के अंतर्गत गतिशील होने वाले इस कुम्भ मेला में स्पष्ट रूप से बिना किसी संदेह के स्थापित होता है। आवश्यकता मात्र इस बात की है इस वैचारिक एकता के प्रवाह की निरंतरता को बनाए रखा जाए तथा विकृत वोट बैंक की राजनीति के चक्कर में पड़कर इसको नष्ट न कर दिया जाए। मात्र इस कुम्भ के आयोजन ने सनातन की संकल्पना को जिस परिमाण में गतिशील किया है वह प्रभाव 10 या 20 वर्ष के प्रयास से भी होना संभव नहीं था। आवश्यकता मात्रा इतनी सी है इस उत्पन्न हुई ऊर्जा तथा एकत्व की भावना को स्थिर रखा जाए। जिससे सनातन एक नवीन ऊंचाई को प्राप्त कर सके तथा एक सामान्य सनातनी हिंदू में भी अपनी तथाकथित अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से उत्पन्न लज्जा की भावना समाप्त हो तथा हिंदू होने के प्रति गर्व की भावना का उदय हो।

आध्यात्मिक रूप से यदि विचार करें तो इस कुम्भ के माध्यम से हमको अपने इस मानव शरीर को, अपनी आत्मा को अनंत ब्रह्मांड के साथ जोड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। जिस प्रकार से इस अद्भुत खगोलीय घटना को प्रयागराज की पवित्र कुम्भ भूमि में घटित होता हुआ हम देख रहे हैं। उसमें सनातन के बहुसंख्य अनुयाई इस पवित्र घटना के प्रत्यक्ष साक्षी एवं सहभागी होकर अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।

यह सनातन की वैश्विक विजय का उद्घोष भी है। अपनी पूर्वकालिक राजनीतिक व्यवस्थाओं के कारण अपने धर्म एवं अपने मूल्यों के प्रति लज्जा का अनुभव करने वाले हिंदू आज गर्व से संपूर्ण विश्व में स्वयं के हिंदू होने का उद्घोष करने में किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं करते। अपितु अब हिंदू होने पर उन्हें गर्व की अनुभूति होती है।

यदि हम आध्यात्मिक पक्ष को एक तरफ कर दें। तब भी शासन सत्ता के द्वारा जिस प्रकार से कुम्भ मेला क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई है, पूरे मेला क्षेत्र को साफ सुथरा बनाए रखने के लिए जो उच्च स्तरीय प्रतिमान स्थापित किए गए हैं। वह आगे के आयोजनों के स्तरीय परीक्षण के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के प्रतिमान एवं मापदंड के रूप में स्थापित किए जा सकते हैं। यह मेरा ही नहीं कहना है अभी तो अंतरराष्ट्रीय मीडिया के द्वारा भी इस बात को प्रशंसात्मक शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। जिन विदेशियों को इन चिकित्सालय्यों में चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई है। वह भी इसकी पुष्टि करते हैं। अर्थात एक प्रकार से कुम्भ के आयोजन से अनेक आयाम स्पष्ट होते हैं। यह आध्यात्मिक कुम्भ भी है। यह सामाजिक कुम्भ भी है। यह दायित्व बोध को स्थापित करने के लिए प्रेरित करने वाला कुम्भ भी है।

जिस प्रकार से एक झरना प्रवाहित हो करके संपूर्ण वातावरण को सरसता प्रदान करता है। इस प्रकार से महाकुम्भ पर्व के इस आध्यात्मिक झरने ने सनातन को हरा भरा करने में, पुष्पित पल्लवित होने में अद्भुत योगदान प्रदान किया है। जन मानस में एक अलग तरह की बेचैनी है। जो यह दर्शाती है किसी भी प्रकार से त्रिवेणी संगम के जल की बूंद मस्तक पर पड़ जाए तो जीवन धन्य हो जाएगा। यही भाव सामाजिक स्तर पर धर्म के विस्तार को तथा उसके विविध आयाम की सामर्थ्य को प्रदर्शित करता है। ठाकुर जी कृपा करें इस भाव की निरंतरता बनी रहे तथा सनातन को इसी प्रकार से विस्तार एवं सुव्यवस्थित संगठन की अनुकूलता प्राप्त हो। इसके साथ ही अपने परंपरागत धार्मिक मूल्यों का अनुपालन करने के लिए उत्पन्न हुई प्रेरणा सभी के हृदय में सदैव जीवंत रहे।

राज्य शासन व्यवस्था ने अपने समस्त शासकीय उपादान एवं उपकरणों के साथ जिस कर्मठता के साथ तथा सुनिश्चित संकल्प के साथ इस आयोजन की निरंतरता को सफलतापूर्वक पूर्णता तक पहुंचाया है। वह साधुवाद के पात्र हैं। ♦

।। शुभम भवतु कल्याणम्।।

मो. : 9415308509

प्रयागराज महाकुम्भ ने दिया वसुधैव कुटुंबकम् का संदेश

–अनिल श्रीवास्तव
(वरिष्ठ पत्रकार)

> योगी आदित्यनाथ सरकार ने महाकुम्भ को यादगार बनाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखी। संख्या के लिहाज से यह आयोजन में मानव इतिहास का अब तक की सबसे बड़ा समागम बन चुका है। दुनिया में केवल भारत और चीन की जनसंख्या ही यहां आने वाले लोगों की संख्या से अधिक है। डेढ़ महीने के इस अनूठे समागम ने सही मायने में वसुधैव कुटुंबकम का संदेश दिया है।

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश का शायद ही कोई ऐसा कोना हो, जहां से श्रद्धालुओं का जत्था 144 वर्ष बाद अद्भुत संयोग में संपन्न हुए महाकुम्भ में अमृत स्नान का पुण्य फल प्राप्त करने के लिए तीर्थराज प्रयाग न पहुंचा हो। देश ही विदेशों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु, राष्ट्रध्यक्ष व राजनयिक भी न सिर्फ पुण्य स्नान करने बल्कि दुनिया के इस सबसे बड़े समागम का हिस्सा बनने और इसकी दिव्यता का अनुभव करने संगम तट पर पहुंचे। प्रयागराज महाकुम्भ महज एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि अध्यात्म, आस्था, सेवा और समर्पण का महासंगम भी है। प्रयागराज की ओर जाने वाले हर रास्ते पर वाहनों की लंबी कतारें, रेलवे और बस स्टेशनों पर भीड़ इस बात का संकेत है कि महाकुम्भ में शामिल होने का स्वप्न संजोए करोड़ों लोग संगम में आस्था की डुबकी लगाकर खुद को कृतार्थ करना चाहते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें थोड़ा बहुत कष्ट ही क्यों न सहना पड़े। हुआ भी यही, आस्था के आगे श्रद्धालुओं के समक्ष आईं छोटी-मोटी कठिनाईयां भी बेमानी साबित हुईं और 60 करोड़ से ज्यादा लोगों ने अमृत स्नान करके इतिहास ही रच दिया। योगी

आदित्यनाथ सरकार ने महाकुम्भ को यादगार बनाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखी। संख्या के लिहाज से यह आयोजन में मानव इतिहास का अब तक की सबसे बड़ा समागम बन चुका है। दुनिया में केवल भारत और चीन की जनसंख्या ही यहां आने वाले लोगों की संख्या से अधिक है। डेढ़ महीने के इस अनूठे समागम ने सही मायने में वसुधैव कुटुंबकम का संदेश दिया है। गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी में हर किसी ने बिना भेदभाव के एक साथ डुबकी लगाई। यहां सामाजिक समरसता का अद्‌भुत मेल देखने को मिला। संगम की पवित्र भूमि से लोग

वहां की मिट्टी लेकर लौटे हैं। यह दिखाता है कि महाकुम्भ में आने वाले सभी लोगों की सोच एक जैसी है। यह एकता और समरसता नए भारत का प्रतिबिंब है। यह तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर हो रहे भारत की सकारात्मक ऊर्जा का संकेत भी है।

कोई असम से तो कोई बंगाल, कोई तमिलनाडु तो कोई कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, कोई महाराष्ट्र तो कोई गोवा, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा से पहुंचा। यानी अलग-अलग भाषाई और संस्कृति के लोगों का जमावड़ा। भाषा, खानपान व सांस्कृतिक विविधता के बावजूद संगम की ओर बढ़ने वाले कदमों में हमारी एकता और वसुधैव कुटुंबकम की भावना की झलक दिखाई दी। भीड़ में एक साथ चल रहे श्रद्धालु भले ही एक-दूसरे की भाषा न समझते हों या उनकी संस्कृति को न जानते हों, लेकिन लक्ष्य सभी एक ही, संगम में डुबकी लगाकर मां गंगा से मोक्ष का आशीर्वाद प्राप्त करना। इस बार का महाकुम्भ कुछ अलग ही रंगत लिए हुए था जिसमें धर्म, अध्यात्म, आस्था के साथ नवीनतम तकनीक का भी खूब इस्तेमाल हुआ जिसने युवाओं को महाकुम्भ में खूब आकर्षित किया। संगम की रेत पर विभिन्न प्रदेशों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने नाचते-गाते और मां गंगा और बाबा भोलेनाथ के जयकारे लगाते हुए अमृत स्नान करके कुछ अलग ही नजारा प्रस्तुत किया। संभवतः पहली बार इतनी बड़ी संख्या में युवाओं में पौराणिक काल से होते आ रहे महाकुम्भ के प्रति लोगों का इतना ज्यादा आकर्षण दिखा और करोड़ों युवाओं में महाकुम्भ के महात्म्य और इससे जुड़े विषयों के बारे में जानने-समझने की ललक दिखाई दी। यह कहना गलत नहीं होगा कि इस बार महाकुम्भ में युवाओं की भागीदारी बहुत ज्यादा रही जो सनातन संस्कृति के प्रति उनके बढ़ रहे रुझान को दर्शाती है। यह महाकुम्भ कई मायनों में बेहद सफल रहा। अभी तक जो जानकारी निकल कर सामने आई है, उसके मुताबिक इस बार देश के युवा वर्ग की इसमें सर्वाधिक भागीदारी रही। महाकुम्भ में इस बार 50 प्रतिशत से ज्यादा युवा 30 वर्ष से कम उम्र के थे। ये इस बात का प्रमाण है कि युवाओं में सनातन के

प्रति आस्था तेजी से बढ़ रही है। बड़ी संख्या में युवा अकेले या अपने परिजनों को लेकर महाकुम्भ पहुंचे। यही नहीं, बड़ी संख्या में युवा न केवल महाकुम्भ में सत्संग-कीर्तन का हिस्सा बने बल्कि मेले में चल रही राम कथा, भागवत समेत तमाम प्रवचनों में जाकर सनातन के विचारों और आध्यात्म को जानने-समझने का प्रयास भी कर रहे थे। यह महाकुम्भ युवाओं को जागृत करने वाला साबित हुआ है जो भविष्य के लिए अच्छे संकेत हैं।

इस बार महाकुम्भ में 10 लाख से अधिक लोगों ने विधिपूर्वक कल्पवास किया। महाकुम्भ में कल्पवास करना विशेष फलदायी माना जाता है। परंपरा के अनुसार 12 फरवरी को माघी पूर्णिमा के दिन कल्पवास समाप्त हो गया। सभी कल्पवासियों ने विधि पूर्वक पूर्णिमा तिथि पर पवित्र संगम में स्नान कर कल्पवास का पारण कर दिया तथा पूजन और दान के बाद अपने अस्थायी आवास को छोड़कर अपने घरों को लौट गए। इस वर्ष महाकुम्भ में देश के कोने-कोने से आए लोगों ने संगम तट पर कल्पवास किया। इस बार एक खास बात यह भी रही कि प्रयागराज महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं में नई पीढ़ी की नारी शक्ति की संख्या में उत्साहजनक वृद्धि दिखाई दी। एक अध्ययन के अनुसार पौष पूर्णिमा से लेकर बसंत पंचमी तक विभिन्न प्रवेश बिंदुओं पर किए गए सर्वे में सामने आया कि महाकुम्भ में आ रहे हर 10 आगंतुकों में 4 महिलाएं थीं, जिसमें नई पीढ़ी की संख्या 40 फीसदी रही। अध्ययन में यह भी सामने आया कि नई पीढ़ी ती महिलाओं में सनातन को समझने की ललक तेजी से बढ़ी है। दिलचस्प बात यह है कि इस बार विदेशों से आए बड़े संख्या में श्रद्धालु भी सनातन संस्कृति के रंग में रंगे नजर आए। तमाम विदेशियों ने न सिर्फ श्रद्धा के साथ त्रिवेणी संगम में पुण्य स्नान किया बल्कि उत्साह के साथ गंगा मइया की जय और बम-बम भोले के नारे लगाते हुए दिखाई दिए।

देश की सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक बन चुके महाकुम्भ के इस आयोजन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा और भी बढ़ा दी है। कई देशों के लोगों महाकुम्भ में हिस्सा लेकर भारत की संस्कृति का अनुभव किया।

इस बार विदेशी पर्यटक सिर्फ नागा साधुओं के जीवन को देखने नहीं बल्कि महाकुम्भ की व्यवस्थाओं और सनातन संस्कृति का गहराई से अध्ययन करने के लिए भी पहुंचे। विदेशी श्रद्धालु भारत की सनातन संस्कृति से काफी प्रभावित भी दिखाई दिए। इसका अंदाजा पाकिस्तान सिंध और पंजाब प्रांत से महाकुम्भ में शामिल होने के लिए पहुंचे श्रद्धालुओं की आस्था को देखकर लगाया जा सकता है। महाकुम्भ की दिव्य-भव्य व्यवस्था को देखकर अभिभूत पाकिस्तान के श्रद्धालुओं का कहना था कि सनातन आस्था की डोर और महाकुम्भ की पुकार उन्हें यहां खींच

लाई है। न केवल उनकी वर्षों से ये चाहत थी बल्कि उनके पूर्वजों की भी आस थी कि वे महाकुम्भ में सम्मिलित हो पवित्र त्रिवेणी में स्नान कर सकें और यहां का जल अपने साथ ले जा सकें। पाकिस्तानी श्रद्धालुओं ने भारत सरकार और योगी सरकार का बहुत-बहुत आभार जताया जिनकी वजह से उन्हें ऐसे दिव्य-भव्य आयोजन में शामिल होने का सौभाग्य मिला। श्रद्धालुओं ने महाकुम्भ की व्यवस्था की भी काफी सराहना की।

इस बार महाकुम्भ में सभी अमृत स्नान के दिन संगम का तट भारतीय और विदेशी श्रद्धालुओं का सैलाब नजर आया।

विदेशों से आए बड़े संख्या में श्रद्धालु भी सनातन संस्कृति के रंग में रंगे नजर आए। तमाम विदेशियों ने न सिर्फ श्रद्धा के साथ त्रिवेणी संगम में पुण्य स्नान किया बल्कि उत्साह के साथ गंगा मइया की जय और बम-बम भोले के नारे लगाते हुए दिखाई दिए। देश की सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक बन चुके महाकुम्भ के इस आयोजन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा और भी बढ़ा दी है।

संगम के किनारे आस्था का ऐसा ज्वार पहली बार दिखाई दे रहा था। जिस ओर, जहां तक नजर पहुंच रही थी केवल श्रद्धालु ही थे। सभी की एक ही अभिलाषा थी कि किसी तरह संगम में पवित्र डुबकी लगाकर पुण्य अर्जित करने का अवसर प्राप्त हो जाए। महाकुम्भ भारत की सांस्कृतिक विविधता में समायी हुई एकता और समता के मूल्यों का सबसे बड़ा प्रतीक है। यहां सब एक समान हैं। असंख्य लोगों ने बिना किसी भेदभाव के एक साथ त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई। महाकुम्भ में दुनिया भर से आए पर्यटक भी यह देखकर हैरान थे कि कैसे अलग-अलग भाषायी, रहन-सहन,

रीति-रिवाज को मानने वाले एकता के सूत्र में बंधे संगम में स्नान करने चले आते हैं। साधु-संन्यासियों के अखाड़े हों या प्रयागराज के मंदिर और घाट, बिना रोक टोक श्रद्धालुओं ने दर्शन-पूजन किया। संगम क्षेत्र में चलने वाले तमाम अन्न भण्डार सभी श्रद्धालुओं के लिए दिन-रात खुले रहे, जहां सभी लोग एक साथ पंगत में बैठ कर भोजन ग्रहण कर रहे हैं। महाकुम्भ मेले में भारत कि विविधता इस तरह आपस में मिल जाती है कि उनमें किसी तरह का भेद कर पाना संभव नहीं है।

त्रिवेणी संगम में स्नान के अलावा एक अलग नजारा साधु-सन्यासियों के शिविरों व अखाड़ों के शानदार पंडालों में था। कहीं प्रवचन-कीर्तन चल रहा था तो कहीं तपस्वी अपनी तपस्या में लीन। पुण्य स्नान के बाद श्रद्धालुओं में साधु-संन्यासियों का आशीर्वाद लेने की होड़ लगी रही। यह क्रम बसंत पंचमी के अमृत स्नान तक निरंतर जारी रहा। बसंत पंचमी के स्नान के बाद बहुत से साधु-संत प्रयागराज से रवाना हो गए। हालांकि मेला क्षेत्र के कुछ पंडालों में अंतिम अमृत स्नान तक कथा-प्रवचन का क्रम चलता रहा। इन पंडालों में बसंत पंचमी और माघी पूर्णिमा के बाद संगम स्नान के लिए पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। आम श्रद्धालुओं के अलावा खास लोग भी संगम में आस्था की डुबकी लगाने से पीछे नहीं रहे। इनमें दिग्गज नेताओं से लेकर बॉलीवुड स्टार, खिलाड़ी, तमाम जाने-माने उद्योगपति व तमाम अन्य प्रमुख लोग शामिल थे। जिन प्रमुख लोगों ने संगम ने पुण्य स्नान किया उनमें राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला, राज्यपाल आनंदी बेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ व उनके मंत्रिमंडल के सदस्य, भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांग्चुक, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल, हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी, मणिपुर के सीएम एन बीरेन सिंह, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, अर्जुन राम मेघवाल, श्रीपद नाइक, सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव, नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडे, डी.के. शिवकुमार, दिग्विजय सिंह, मुकेश अंबानी, गौतम अडाणी, राज कुमार राव, एकता कपूर, नीना गुप्ता, आशुतोष राणा, विद्युत जामवाल, विक्की कौशल, श्रीनिधि शेट्टी हेमा मालिनी, भाग्यश्री, ओलंपिक पदक विजेता साइना नेहवाल, क्रिकेटर सुरेश रैना, अनिल कुंबले, मयंक अग्रवाल, अंतरराष्ट्रीय रेसलर खली, कोरियोग्राफर रेमो डिसूजा समेत अन्य तमाम विशिष्ट लोग शामिल हैं। ◆

मो. : 9935097410

महाकुम्भ ने रचा इतिहास

-डॉ. सौरभ मालवीय
(प्रो. लखनऊ वि.वि.)

उत्तर प्रदेश के प्रयाग में आयोजित महाकुम्भ सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। चूंकि उत्तर प्रदेश धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है, इसलिए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। इसके अंतर्गत योगी सरकार ने महाकुम्भ के भव्य आयोजन के लिए 6,990 करोड़ रुपये आवंटित किए थे। उन्होंने महाकुम्भ के सफल आयोजन के लिए संबंधित अधिकारियों को विशेष निर्देश दिए थे।

प्रयागराज में 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा स्नान के साथ कुम्भ मेले का शुभारंभ हुआ था तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान के साथ इसका समापन हो गया। इस समयावधि में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया।

उल्लेखनीय है कि प्रयागराज में 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा स्नान के साथ कुम्भ मेले का शुभारंभ हुआ था तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान के साथ इसका समापन हो गया। इस समयावधि में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया। शाही स्नान 14 जनवरी को मकर संक्रांति पर, 29 जनवरी को मौनी अमावस्या पर, 3 फरवरी को बसंत पंचमी पर, 12 फरवरी को माघी पूर्णिमा पर तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि पर हुआ। इन विशेष दिनों में श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ अधिक देखी गई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ सहित देश के लगभग सभी राजनेता, अभिनेता,

खिलाड़ी, व्यवसायी आदि संगम में स्नान कर चुके हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संगम में डुबकी लगाई। इसके पश्चात उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि महाकुम्भ में आज पवित्र संगम में डुबकी लगाकर मैं भी करोड़ों लोगों की तरह धन्य हुआ। मां गंगा सभी को असीम शांति, बुद्धि, सौहार्द और अच्छा स्वास्थ्य दें।

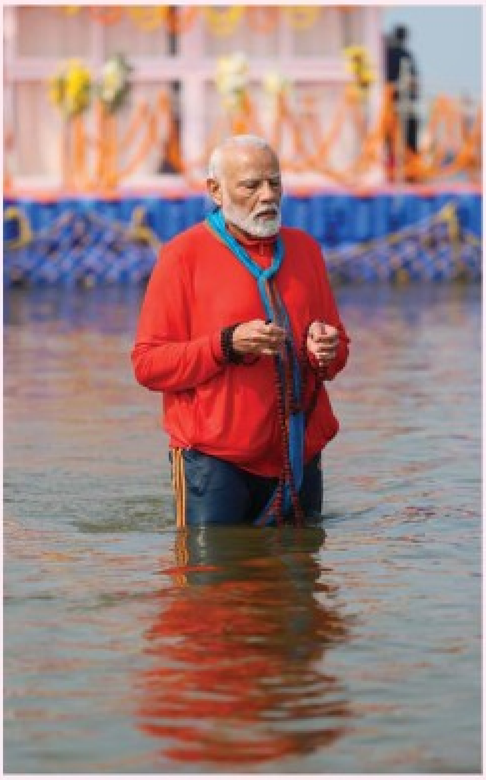

गृहमंत्री अमित शाह ने संगम में स्नान करने के पश्चात कहा कि कुम्भ हमें शांति और सौहार्द का संदेश देता है। कुम्भ आपसे यह नहीं पूछता है कि आप धर्म, जाति या संप्रदाय से हैं। यह सभी लोगों को गले लगाता है। इससे पूर्व उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा था कि महाकुम्भ' सनातन संस्कृति की अविरल धारा का अद्वितीय प्रतीक है। कुम्भ समरसता पर आधारित हमारे सनातन जीवन-दर्शन को दर्शाता है। आज धर्म नगरी प्रयागराज में एकता और अखंडता के इस महापर्व में संगम स्नान करने और संतजनों का आशीर्वाद लेने के लिए उत्सुक हूं।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भी संगम में डुबकी लगाई। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

आज तीर्थराज प्रयागराज में, भारत की शाश्वत आध्यात्मिक विरासत और लोक आस्था के प्रतीक महाकुम्भ में स्नान-ध्यान करके स्वयं को कृतार्थ अनुभव कर रहा हूं।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विगत दिसंबर में महाकुम्भ के दृष्टिगत प्रयागराज में लगभग 5500 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया था। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह विश्व के सबसे बड़े समागमों में से एक है, जहां 45 दिनों तक चलने वाले महायज्ञ के लिए प्रतिदिन लाखों श्रद्धालुओं का स्वागत किया जाता है और इस अवसर के लिए एक नया नगर बसाया जाता है। प्रयागराज की धरती पर एक नया इतिहास लिखा जा रहा है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि महाकुम्भ, देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को नए शिखर पर ले जाएगा। उन्होंने कहा कि एकता के ऐसे महायज्ञ की चर्चा संपूर्ण विश्व में होगी।

भारत को पवित्र स्थलों और तीर्थों की भूमि बताते हुए उन्होंने कहा कि यह गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा और कई अन्य असंख्य नदियों की भूमि है। प्रयाग को इन नदियों के संगम, संग्रह, समागम, संयोजन, प्रभाव और शक्ति के रूप में वर्णित करते हुए तथा कई तीर्थ स्थलों के महत्व और उनकी महानता के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रयाग केवल तीन नदियों का संगम नहीं है, अपितु उससे भी कहीं अधिक है। यह एक पवित्र समय होता है जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, तब सभी दिव्य शक्तियां, अमृत, ऋषि और संत प्रयाग में उतरते हैं। प्रयाग एक ऐसा स्थान है जिसके वर्णन के बिना पुराण अधूरे रह जाएंगे। प्रयाग एक ऐसा स्थान है जिसकी स्तुति वेदों की ऋचाओं में की गई है। प्रयाग एक ऐसा स्थान है, जहां हर कदम पर पवित्र स्थान और पुण्य क्षेत्र हैं। प्रयागराज के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने एक संस्कृत श्लोक पढ़ा और इसे समझाते हुए कहा कि त्रिवेणी का प्रभाव, वेणीमाधव की महिमा, सोमेश्वर का आशीर्वाद, ऋषि भारद्वाज

की तपस्थली, भगवान नागराज वसु जी की विशेष भूमि, अक्षयवट की अमरता और ईश्वर की कृपा यही हमारे तीर्थराज प्रयाग को बनाती है। प्रयागराज एक ऐसी जगह है, जहां धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों तत्व उपलब्ध हैं। प्रयागराज केवल एक भूमि का टुकड़ा नहीं है, यह आध्यात्मिकता का अनुभव करने की जगह है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संगम में डुबकी लगाई। इसके पश्चात उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि महाकुम्भ में आज पवित्र संगम में डुबकी लगाकर मैं भी करोड़ों लोगों की तरह धन्य हुआ। मां गंगा सभी को असीम शांति, बुद्धि, सौहार्द और अच्छा स्वास्थ्य दें।

उन्होंने कहा कि महाकुम्भ हमारी आस्था, आध्यात्म और संस्कृति के दिव्य पर्व की विरासत की जीवंत पहचान है। हर बार महाकुम्भ धर्म, ज्ञान, भक्ति और कला के दिव्य समागम का प्रतीक होता है। संगम में डुबकी लगाना करोड़ों तीर्थ स्थलों की यात्रा के बराबर है। पवित्र डुबकी लगाने वाला व्यक्ति अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है। आस्था का यह शाश्वत प्रवाह विभिन्न सम्राटों और राज्यों के शासनकाल, यहां तक कि अंग्रेजों के निरंकुश शासन के दौरान भी कभी नहीं रुका और इसके पीछे प्रमुख कारण यह है कि कुम्भ किसी बाहरी ताकतों द्वारा संचालित नहीं होता है। कुम्भ मनुष्य की अंतरात्मा की चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, वह चेतना जो भीतर से आती है और भारत के हर कोने से लोगों को संगम के तट पर खींचती है। गांवों, कस्बों, शहरों से लोग प्रयागराज की ओर निकलते हैं और सामूहिकता और जनसमूह की ऐसी शक्ति शायद ही कहीं और देखने को मिलती है। एक बार महाकुम्भ में आने के बाद हर कोई एक हो जाता है, चाहे वह संत हो, मुनि हो, ज्ञानी हो या आम आदमी हो और जाति-पंथ का भेद भी खत्म हो जाता है। करोड़ों लोग एक लक्ष्य और एक विचार से जुड़ते हैं। महाकुम्भ के दौरान विभिन्न राज्यों से अलग-अलग भाषा, जाति, विश्वास वाले करोड़ों लोग संगम पर एकत्र होकर एकजुटता का प्रदर्शन करते हैं। यही उनकी मान्यता है कि महाकुम्भ एकता का महायज्ञ है, जहां हर तरह के भेदभाव का त्याग किया जाता है और यहां संगम में डुबकी लगाने वाला हर भारतीय एक भारत, श्रेष्ठ भारत की सुंदर तस्वीर पेश करता है।

उन्होंने भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा में कुम्भ के महत्व पर बल दिया और बताया कि कैसे यह हमेशा से संतों के बीच महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों और चुनौतियों पर गहन विचार-विमर्श का मंच रहा है। उन्होंने कहा कि जब अतीत में आधुनिक संचार के माध्यम मौजूद नहीं थे, तब कुम्भ महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों का आधार बन गया, जहां संत और विद्वान राष्ट्र के कल्याण पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए और वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया, जिससे देश की विचार प्रक्रिया को नई दिशा और ऊर्जा मिली। आज भी कुम्भ एक ऐसे मंच के रूप में अपना महत्व बनाए हुए है, जहां इस तरह की चर्चाएं जारी रहती हैं, जो पूरे देश में सकारात्मक संदेश भेजती हैं और राष्ट्रीय कल्याण पर सामूहिक विचारों को प्रेरित करती हैं। भले ही ऐसे समारोहों के नाम, उपलब्धि और मार्ग अलग-अलग हों, लेकिन उद्देश्य और यात्रा एक ही है। कुम्भ राष्ट्रीय विमर्श का प्रतीक और भविष्य की प्रगति का एक प्रकाश स्तंभ बना हुआ है।

उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर मौजूदा सरकार के तहत भारत की परंपराओं और आस्था के प्रति गहरा सम्मान है। केंद्र और राज्य दोनों की सरकारें कुम्भ में आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए सुविधाएं प्रदान करना अपनी जिम्मेदारी मानती हैं। सरकार का लक्ष्य विकास के साथ-साथ भारत की विरासत को समृद्ध करना भी है।

कुम्भ सहायक

केंद्र एवं राज्य सरकारों ने महाकुम्भ में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा। कुम्भ के लिए पहली बार एआई और चैटबॉट तकनीक के उपयोग को चिह्नित करते हुए 'कुम्भ सहायक' चैटबॉट का शुभारंभ किया गया, जो

से पूर्व प्रयागराज के ऐतिहासिक मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। इसके साथ-साथ मंदिरों का नवीनीकरण भी किया गया। इसके अतिरिक्त राज्य में हरित क्षेत्र के विस्तार को बढ़ावा दिया गया। विशेषकर प्रयागराज जिले में सड़कों के किनारे पौधे लगाए गए। यह भी उल्लेखनीय है कि स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान दिया गया। क्षेत्रों को पॉलीथिन से मुक्त रखने का भी प्रयास किया गया। इसके अंतर्गत महाकुम्भ में सिंगल यूज्ड प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया था। मेले में प्राकृतिक उत्पाद जैसे दोना, पत्तल, कुल्हड़ एवं जूट व कपड़े के थैलों के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया। योगी सरकार ने श्रद्धालुओं की प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखा। इसके अंतर्गत यातायात की भी समुचित व्यवस्था की गई। प्रयागराज आने वाली बसों, रेलगाड़ियों एवं वायुयान की संख्या में वृद्धि की गई। महाकुम्भ के लिए रेलवे द्वारा लगभग 1200 रेलगाड़ियां तथा परिवहन विभाग द्वारा सात हजार बसों का संचालन किया गया।

ग्यारह भारतीय भाषाओं में संवाद करने में सक्षम है। इससे लोगों को बहुत लाभ हुआ।

प्रयागराज की धरती पर एक नया इतिहास लिखा जा रहा है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि महाकुम्भ, देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को नए शिखर पर ले जाएगा। उन्होंने कहा कि एकता के ऐसे महायज्ञ की चर्चा संपूर्ण विश्व में होगी।

कुम्भवाणी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गत 10 जनवरी को प्रयागराज स्थित सर्किट हाउस से महाकुम्भ 2025 को समर्पित आकाशवाणी के विशेष एफएम चौनलकुम्भवाणी एवं 'कुम्भ मंगल ध्वनि का लोकार्पण किया। उन्होंने कुम्भ मंगल ध्वनि का भी लोकार्पण किया। उन्होंने कहा था कि कुम्भवाणी द्वारा प्रसारित आंखों देखा हाल उन लोगों के लिए विशेष रूप से लाभदायक होगा, जो कुम्भ में भाग लेने के लिए प्रयागराज नहीं आ सकेंगे। यह इस ऐतिहासिक महाकुम्भ के माहौल को देश व दुनिया तक पहुंचाने में सहायक होगा। देश के लोक सेवा प्रसारक प्रसार भारती की ये पहल न केवल भारत में आस्था की ऐतिहासिक परंपरा को बढ़ावा देगी, अपितु श्रद्धालुओं को महत्वपूर्ण जानकारी देगी व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का घर बैठे अनुभव करवाएगी। उल्लेखनीय है कि योगी सरकर ने महाकुम्भ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वयं हवाई जहाज से मेला स्थल का निरीक्षण किया। इसलिए यह कहना उचित है कि महाकुम्भ के सफल आयोजन के लिए योगी सरकार बधाई की पात्र है। ◆

मो. : 8750820740

भव्य और दिव्य महाकुम्भ

-सियाराम पांडेय 'शांत'
(पत्रकार)

प्रयागराज देश-दुनिया के आकर्षण का केंद्र रहा। महाकुम्भ से पहले भी और महाकुम्भ के बाद भी। विश्व पटल पर जितनी चर्चा यहां के महाकुम्भ की हुई, उतनी शायद ही किसी अन्य राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आपराधिक या फिर सामरिक प्रकरण की हुई हो। देश-विदेश की प्रमुख हस्तियों ने न केवल प्रयागराज के धार्मिक, सांस्कृतिक गौरव के दीदार किए, बल्कि अपना हाथ फैलाए मुक्त ह्रदय से हर आगंतुक अतिथि का स्वागत करते हुए प्रयागराज को भी देखा। व्यावहारिक समानता का ऐसा मंजर दुनिया में शायद ही कहीं देखने को मिले।

डेढ़ माह तक महाकुम्भ मेले में पूरी दुनिया सिमटी नजर आई। जाति, धर्म, भाषा 'संस्कृति, सभ्यता और परंपरा का यहां कोई भेद नहीं था। सब पर केवल आस्था और उल्लास का रंग ही चढ़ा हुआ था। दुनिया का कदाचित ही कोई ऐसा देश रहा हो, जहां के लोगों ने तीर्थराज प्रयाग को प्रणिपात न किया हो। उनके पवित्र दरबार में अपनी हाजिरी न लगाई हो। कुछ विदेशी तो पर्यटन की दृष्टि से यहां आए थे, लेकिन उन पर भक्ति का प्रभाव कुछ ऐसा हुआ कि खुद संन्यासी बन गए। समुद्र की लहरों की तरह श्रद्धालुओं का रेला यहां आता-जाता रहा।आवागमन का यह चक्र अनवरत चलता रहा। श्रद्धा और विश्वास के समक्ष विज्ञान बहुधा हतप्रभ, चकित, नत मस्तक और अनुत्तरित होता रहा। दरअसल यह संगम केवल धार्मिक नहीं था बल्कि बहु आयामी भी था। यह भाव संगम था। यहां राग और विराग दोनों ही स्वयं को सिद्ध करने का पुरजोर प्रयास कर रहे थे। भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का मानवीयकरण यहां देखते ही बन रहा था। महाकुम्भ में अगर हठयोगियों का योग प्रकट हो रहा था तो संतों की साधना भी अपने अंतिम सोपान पर खड़ी नजर आ रही थी।साधना की सभी पद्धतियां और धर्म के दसों स्वरूप यहां मूर्तमान होकर प्रयागराज की आध्यात्मिक विभूतियों को द्विगुणित कर रहे थे।

श्रद्धालुओं पर अगर ड्रोन और विमान से पुष्पवर्षा हो रही थी तो स्वच्छता और सादगी की मिसाल पेश करने भी प्रयागराज पीछे नहीं था। यहां अनेक संस्कृतियों के लोगों का एक साथ चलना, एक साथ स्नान करना, भोजन-भजन करना भारतीय संस्कृति और सभ्यता के चरमोत्कर्ष की दिग्विजयी घोषणा कर

रहा था। अनेकता में एकता का यह समागम जहां बौद्धिक विमर्श का विषय बना रहा, वहां इसमें जीवन के अनेक नजारे देखने को मिले। एक ओर साधु-संन्यासियों का संसार था तो दूसरी ओर गृहस्थों का। इस धार्मिक समागम में आबाल, वृद्ध नर-नारी तो शामिल थे ही, विदेशी परिंदे भी गंगा-यमुना की लहरों पर अपनी समवेत उपस्थिति दर्ज करा रहे थे। हर आम और खास को अपनी अठखेलियों से अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे और उनका सहज स्नेहभाजन बन रहे थे।

हर आयोजन का अपना ठोस अभिप्राय होता है। इस आयोजन के साथ भी कमोवेश यही बात थी, तभी तो यहां कहीं ज्ञान का महाकुम्भ हो रहा था तो कहीं चिकित्सा का। कहीं साहित्य का महाकुम्भ हो रहा था तो कहीं कला, संस्कृति और शिल्प का। राजनीति का कुम्भ भी यहां लगा। उत्तर प्रदेश सरकार की तो पूरी कैबिनेट ही यहां बैठी और प्रदेश के व्यापक हित में उसने कई प्रस्ताव भी पारित किया। उत्तर प्रदेश के सभी मंत्रियों ने यहां स्नान किया। राजस्थान और मणिपुर के मुख्यमंत्रियों ने भी अपनी पूरी कैबिनेट के साथ यहां के त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई। राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और अनेक केन्द्रीय मंत्रियों ने संगम में डुबकी लगाकर तीर्थराज का स्नेहाशीष प्राप्त किया। यहां अगर सभी अखाड़ों के धमार्चार्यों का सम्मेलन हुआ तो बौद्ध समागम भी हुआ। साधु-संन्यासियों के शिविर अगर जनजागरण और उत्कंठा के केंद्र बने रहे तो विश्व के सबसे बड़े इस धार्मिक समागम ने दुनिया को यह संदेश दिया कि दुनिया को जोड़ने और साथ लेकर चलने, उसे सही राह दिखाने का सामर्थ्य सिर्फ भारत में है। इस धार्मिक समागम से यह बात भी प्रमाणित हुई कि धर्म और कर्म से जुड़कर ही जीवन के वास्तविक लक्ष्य की प्राप्ति संभव है।

प्रयागराज को तीर्थराज यूं ही नहीं कहा जाता बल्कि इसके अपने ठोस आधार हैं। महाकुम्भ वह अवसर होता है जब सभी प्रयागराज की ओर खिंचे चले आते है। माघ मकरगत रवि जब होई। तीरथ पतिहिं आव सब कोई। सारे तीर्थ, नदी-नद, सारे जलस्रोत, सभी देवी-देवता, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, नाग, नग, सिद्ध-संत मनुष्य रूप धारण कर यहां पहुंचे। प्रयागराज में जनवरी के पूर्वार्द्ध से फरवरी के उत्तरार्द्ध तक आस्था का जनज्वार उमड़ता रहा। भक्ति का सैलाब उमड़ता रहा। महाकुम्भ का एक भी दिन ऐसा नहीं गया, जब लाखों की तादाद में देश-विदेश से आए श्रद्धालुओं ने गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र जल में अवगाहन कर ज्ञान, भक्ति और वैराग्य से जीवंत साक्षात्कार न किए हों। त्याग और तपस्या का चरमोत्कर्ष न देखा हो। इस आयोजन ने कदम-कदम पर विज्ञान को चुनौती दी।

अपार जन समूह ने यहां कांटों पर लेटे साधु देखे तो उर्ध्वबाहु संन्यासी भी देखे। खड़ेश्वरी और तपेश्वरी भी देखे।

बड़ी तादाद में नागाओं का अमृत स्नान देखा तो अपने ही हाथ से अपना पिंडदान कर जीवन का रूपांतरण भी देखा। देश-विदेश के धनपतियों का सेवाभाव देखा तो साधु-संतों के प्रति उनकी भक्ति भी देखी। भक्ति-आस्था, ज्ञान और वैराग्य के विविध रंगों से ओत-प्रोत इस महाकुम्भ में साहित्य, संस्कृति, कला और व्यापार पर भी चिंतन हुआ। देश-काल, परिस्थिति पर भी मंथन हुआ। यह महाकुम्भ स्नान-दान तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि ज्ञान, विज्ञान, प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण, विश्व शांति, युद्ध और बुद्ध पर भी यहां चिंतन और मंथन हुआ। सेवा के अनेक प्रकल्प यहां चलते नजर आए। यह महाकुम्भ धमार्नुशासन की पराकाष्ठा का रहा। जितनी कुछ देशों के लोगों की आबादी नहीं है, उससे अधिक लोग प्रयागराज में रोज स्नान कर रहे थे। जितने प्रयागराज में थे, उससे कहीं अधिक रेल, बस और निजी वाहनों से सफर कर रहे थे। महाकुम्भ के रणनीतिकारों की अपेक्षा से कहीं अधिक था आस्था का साम्राज्य।

प्रयागराज महाकुम्भ में दुनिया के कई देशों के भंते, लामा, बौद्ध भिक्षुओं एवं सनातन के धर्माचार्यों ने तो शिरकत की ही, इस अवसर पर सनातन बौद्ध एकता का संदेश भी दिया गया। बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघम शरणं गच्छामि का उद्घोष करते बौद्ध भिक्षुओं ने शोभायात्रा निकाली। इस यात्रा का समापन जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि के प्रभु प्रेमी शिविर में हुआ। इस अवसर पर महाकुम्भ में बांग्लादेश, पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बंद करने, तिब्बत को स्वायत्तता देने और सनातन व बौद्ध एकता को बढ़ावा देने संबंधी प्रस्ताव पास किए गए।

प्रयागराज देश-दुनिया के आकर्षण का केंद्र रहा। महाकुम्भ से पहले भी और महाकुम्भ के बाद भी। विश्व पटल पर जितनी चर्चा यहां के महाकुम्भ की हुई, उतनी शायद ही किसी अन्य राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आपराधिक या फिर सामरिक प्रकरण की हुई हो। देश-विदेश की प्रमुख हस्तियों ने न केवल प्रयागराज के धार्मिक, सांस्कृतिक गौरव के दीदार किए, बल्कि अपना हाथ फैलाए मुक्त हृदय से हर आगंतुक अतिथि का स्वागत करते हुए प्रयागराज को भी देखा।

दुनिया के अलग-अलग देशों में जहां युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं से अशांति का माहौल बना हुआ है, वहीं शांति का संदेश देता भारत का सनातन धर्म विदेशियों को भी अपनी ओर खींचता नजर आया। महाकुम्भ नगर के सेक्टर-17 में स्थित शक्ति धाम आश्रम में वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच 61 विदेशी श्रद्धालुओं ने जगद्‌गुरु साईं मां लक्ष्मी देवी से दीक्षा ली और सनातन धर्म को अपनाया। बेल्जियम में अस्थि रोग विशेषज्ञ कैथरीन गिल्डेमिन ने माना कि रोजमर्रा की भागदौड़ ने उनके जीवन में काफी तनाव बढ़ा दिया था और व्यक्तिगत जीवन भी ठीक नहीं चल रहा था। लेकिन जगद्‌गुरु सांई मां के सानिध्य में आने के बाद वह सनातन से रूबरू हुईं और उनके जीवन को एक नयी दिशा मिली। आयरलैंड के व्यापारी डेविड हैरिंगटन बताते हैं कि सनातन की सरलता उन्हें सात समंदर पार भारत की तरफ खींच लाई। सनातन एक ऐसी अकेली जीवन पद्धति है जो व्यक्ति पर कुछ थोपती नहीं हैं। महाकुम्भ के अद्‌भुत और पावन अवसर पर मैंने सनातन धर्म स्वीकार किया है। इससे मुझे असीम शांति और आनंद की अनुभूति हो रही है।

फ्रांस के सॉफ्टवेयर इंजीनियर ओलिवियर गिउलिरी के जीवन में सब कुछ था फिर भी वह एक अधूरापन महसूस कर रहे थे लेकिन जगद्‌गुरु साईं मां से गुरु दीक्षा लेकर जैसे उनका जीवन परम आह्लाद से भर गया है। दीक्षा लेने वालों में अमेरिका के वास्तुकार मैथ्यू लॉरेंस, कनाडा के चिकित्सक आंद्रे अनात, अमेरिका में ऊर्जा के क्षेत्र में काम करने वाले जेनी मिलर, कनाडा में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने वाले मैथ्यू सावोई, बेल्जियम में स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सलाहकार क्रिस्टेल डी कैट भी शामिल रहे। त्रिवेणी दास महाराज की मानें तो महाकुम्भ में अकेले शक्तिधाम में अभी तक 200 से अधिक विदेशियों ने सनातन की दीक्षा प्राप्त की है।

शैव संप्रदाय के अखाड़ों में नागा साधु-बनने वाले विदेशियों की संख्या भी हजारों में है।

महाकुम्भ मेले में सांस्कृतिक महाकुम्भ भी अपने चरम पर रहा। बसंत पंचमी के स्नान के बाद सात फरवरी से फिर से महाकुम्भ मेले के गंगा पंडाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आगाज हुआ। इस दौरान यहां देश की विविध संस्कृतियों का संगम हुआ। सात फरवरी से चार दिवसीय सांस्कृतिक महाकुम्भ की सांझ सजी, जिसमें देश के नामचीन कलाकारों ने अपनी मोहक प्रस्तुतियां दीं। डोना गांगुली के ओडिशी नृत्य, योगेश गंधर्व, आभा गंधर्व के सूफी गायन, सुमा सुधींद्र के गायन और डॉ. देवकी नंदन शर्मा की रासलीला ने जहां श्रद्धालुओं के दिल पर राज किया, वहीं कविता कृष्णमूर्ति, सुरेश वाडेकर, सोनल मान सिंह और हरिहरन की प्रस्तुति ने महाकुम्भ की शोभा और गौरव गरिमा में चार चांद लगा दिया। डॉ. एल सुब्रमण्यम का सुगम संगीत, प्रीति पटेल का मणिपुरी नृत्य, नरेंद्र नाथ का सरोद वादन श्रद्धालुओं के सिर चढ़कर बोला। पद्मश्री मधुप मुद्गल का हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, सोनल मान सिंह और शुभदा वराडकर का ओडिसी नृत्य और सुधा कर्नाटक संगीत की प्रस्तुति से गंगा पंडाल पूरी तरह भावविभोर हो उठा।

कुंभ में अगर देवी-देवताओं की चर्चा हुई तो उनके वाहनों यानी पशु-पक्षियों का भी जिक्र किया गया और भारतीय संस्कृति में उनके संरक्षण की उपादेयता पर भी प्रकाश डाला गया। यह भी बताया गया कि भारतीय संस्कृति हमें गणेश जी के पूजन से ही नहीं जोड़ती बल्कि उनके वाहन मूषक के प्रति भी मानवीय संवेदनाओं को जोड़ने का उपक्रम करती है। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने तो गाय को राष्ट्रमाता का दर्जा दिए जाने और गौवंश की तस्करी पर सर्वथा रोक लगाने की मांग की। इस दौरान यह बात भी प्रमुखता के साथ उठी कि सनातन संस्कृति ने लोगों को पर्यावरण से जोड़ रखा है। हरित महाकुम्भ में महाकुम्भ और ज्ञान महाकुम्भ को पर्यावरण के प्रति भारतीय संवेदनाओं को एक बार फिर जागृत करने का जरिया करार दिया गया। महाकुम्भ में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ओर से सेक्टर आठ में 10 जनवरी से 10 फरवरी, 2025 तक ज्ञान महाकुम्भ का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और अनेक केन्दीय मंत्रियों ने संगम में डुबकी लगाकर तीर्थराज का स्नेहाशीष प्राप्त किया। यहां अगर सभी अखाड़ों के धमार्चार्यों का सम्मेलन हुआ तो बौद्ध समागम भी हुआ।

महाकुम्भ में कनाडा, जर्मनी, रूस और दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने 13 जनवरी से लाखों श्रद्धालुओं के उपचार में अपनी महती भूमिका निभाई। एलोपैथी के 23 अस्पतालों में साढ़े चार लाख से अधिक मरीजों का उपचार किया गया। दो लाख 18 हजार मरीजों का आयुर्वेद और होम्योपैथी के जरिए उपचार

किया गया। 3.71 लाख श्रद्धालुओं की पैथोलॉजी जांच की गई। दिल्ली स्थित एम्स से सात विशेषज्ञ चिकित्सकों के अलावा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के डीन डॉ. वीके जोशी और कनाडा के डॉक्टर थॉमस समेत कई देशों के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने श्रद्धालुओं का उपचार किया और उनकी जांचें कर दवाएं भी उपलब्ध कराईं। महाकुम्भ के दौरान यहां के आयुर्वेदिक अस्पतालों में पंचकर्म, जड़ी-बूटी आधारित उपचार, योग चिकित्सा एवं प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों का उपचार किया गया। इसके अतिरिक्त श्रद्धालुओं को आयुष डॉकेट, योगा डॉकेट, कैलेंडर, औषधीय पौधे और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता सामग्री भी बांटी गई। दिल्ली के मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान से पांच-पांच योग प्रशिक्षकों की टीमों ने महाकुम्भ क्षेत्र में योग सत्र का संचालन किया। इन सत्रों में विदेशी श्रद्धालुओं ने भी सहभाग किया। जर्मनी, स्वीडन, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, नेपाल आदि देशों से आए श्रद्धालुओं ने भारतीय चिकित्सा पद्धति की मुक्त कंठ से सराहना की।

प्रयागराज में नमामि गंगे मिशन और ग्रामीण जलापूर्ति विभाग द्वारा बसाए गए स्वच्छ सुजल गांव यहां आए तकरीबन 11 लाख श्रद्धालुओं ने देखा और बुंदेलखंड के गांव-गांव में हर घर जल पहुंचने की नई तस्वीर से रूबरू भी हुए। यहां धार्मिक विरासत के सम्मान में जहां आकाश से श्रद्धालुओं पर पुष्पवर्षा की गई, वहीं स्वास्थ्य संबंधी किसी भी समस्या से निपटने के लिए जल, थल और नभ में 133 एंबुलेंस की व्यवस्था की गई थी। 40 किलोमीटर के दायरे में फैले प्रयागराज महाकुम्भ में कुछ साधु-महात्मा महामण्डलेश्वर की उपाधि से विभूषित किए गए तो कुछ लोग सनसनी भी बने। महाकुम्भ के पहले अमृत स्नान के दिन शाही रथ पर बैठने के कारण मॉडल और एंकर हर्षा रिछारिया संतों के भारी विरोध के केंद्र में रहीं। संतों ने जब इसे अपमान से जोड़कर देखा तो अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत रवीन्द्र पुरी ने हर्षा को अपनी धर्मपुत्री बताया और फिर से उन्हें शाही रथ पर बैठाने और अमृत स्नान कराने की बात कही। 90 की दशक में सिल्वर स्क्रीन की सनसनी रहीं ममता कुलकर्णी ने

भी इस महाकुम्भ में संन्यासी का चोला धारण कर लिया। ममता जिस तेजी के साथ किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर बनीं, उसी तेजी के त्याग से उन्होंने वह पद छोड़ भी दिया। ऐसा उन्होंने संतों के उस आरोप के बाद किया है कि ऐसे ही हर किसी को महामण्डलेश्वर बनाया जाता रहा तो सनातन धर्म का बंटाधार हो जाएगा। फिर वह अवसर भी आया जब वह महामंडलेश्वर बने रहने पर सहमत हो गईं। आईआईटी बाबा के नाम से मशहूर हरियाणा के अभय सिंह भी इस महाकुम्भ में चर्चा के केंद्र में रहे। अपने गुरु के प्रति आपत्तिजनक टिप्पणी के चलते उन्हें भी

अखाड़े से बाहर होना पड़ा। अभय सिंह श्मशान में हड्डियां खाने का भी दावा करते रहे। कभी उन्होंने लंबी दाढ़ी और बिखरे बाल रखे तो कभी क्लीन सेव नजर आए।

महाकुम्भ में मध्यप्रदेश के महेश्वर से माला बेचने आई मोनालिसा भी जबरदस्त चर्चा के केंद्र में रहीं। मोनालिसा ने एक दिन अपना वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड क्या कर दिया, वह उनके गले की फांस बन गई। लोग उनकी नीली आंखों के इतने फैन हो गए कि दूसरे दिन से उनके यहां यूट्यूबरों की लाइन लगने लगी। उनका रहना-खाना-सोना तक दुश्वार हो गया। दिन हो या रात उनके ठिकाने पर यूट्यूबरों की भीड़ जुटने लगी। माला बिकना बंद हो गया। इससे वह रोने लगी। आखिर में उनके पिता को उन्हें वापस घर भेजना पड़ा।

महाकुम्भ में 8 साल के नागा संन्यासी गोपाल गिरी भी मीडिया की सुर्खियां बने रहे। हिमाचल प्रदेश के चंबा के रहनेवाले गोपाल गिरी को उनके माता-पिता ने 3 वर्ष की कच्ची उम्र में जूना अखाड़े को सौंप दिया था। बाद में अखाड़े ने उन्हें शास्त्र और शास्त्र की शिक्षा देकर दीक्षित किया। अब उनका परिवार से कोई नाता नहीं रह गया है। गोपाल गिरी कहते हैं कि उनका मन न तो खिलौनों से खेलने में लगता है न ही सांसारिक दुनिया में वापस जाना चाहते हैं। वह शास्त्रार्थ करते रहते हैं और भजन गुनगुनाते रहते हैं। महाकुम्भ में सात फीट लंबे बॉडी बिल्डर बाबा उर्फ आत्म प्रेम गिरी महाराज भी सोवियत रूस के नागरिक हैं। वह पहले स्कूल टीचर थे। करीब 30 साल पहले भारत घूमने आये थे। उनका मन अध्यात्म और भारत की सनातन परंपरा में रम गया और वे यहीं के होकर रह गए। लोग उनकी लंबी कद काठी देखकर भगवान परशुराम का अवतार भी बताते नजर आए। एपल कंपनी के को- फाउंडर स्टीव जॉब्स की पत्नी लॉरिन पावेल भी खूब चर्चा में रहीं। लॉरिन की कुल संपत्ति जानी-मानी पत्रिका फोर्ब्स के मुताबिक 15.2 बिलियन डॉलर है। महामंडलेश्वर कैलाशानंद गिरी ने उन्हें गुरुमंत्र और कमला नाम दिया है। प्रयागराज महाकुम्भ में अब तक 73 देशों के लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई है। लोकप्रिय नृत्यांगना सपना चौधरी, कई फिल्मी हस्तियां और उद्योगपति मुकेश अंबानी, गौतम अडाणी और अनिल अंबानी सहित अनेक नामचीन लोग संगम में डुबकी लगा चुके हैं। कुंभ में लोक आस्था और जीवन मूल्यों के अनेक रंग बरबस ही यह जिज्ञासा हर आम और खास के मन में पैदा करते हैं कि क्या तुमने महाकुम्भ देखा और यदि नहीं तो फिर क्या देखा ? ◆

प्रयागराज महाकुम्भ में दुनिया के कई देशों के भंते, लामा, बौद्ध भिक्षुओं एवं सनातन के धर्माचार्यों ने तो शिरकत की ही, इस अवसर पर सनातन बौद्ध एकता का संदेश भी दिया गया। बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघम शरणं गच्छामि का उद्घोष करते बौद्ध भिक्षुओं ने शोभायात्रा निकाली। इस यात्रा का समापन जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि के प्रभु प्रेमी शिविर में हुआ।

मो. : 7459998968

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को मूर्त रुप देता नज़र आया 'महाकुम्भ'

-डॉ. कृष्णानंद पाण्डेय
(पूर्व सहा. कार्यक्रम अधिकारी)

अथर्ववेद के वैदिक ऋषि का कथन है कि 'ब्रह्मा जी ने मानव को लोक-परलोक में सुख देने वाले 'कुम्भ' को प्रदान किया। ये कुम्भ, महाकुम्भ पर्व प्रयाग हरिद्वारादि स्थलों में आयोजित होने लगे। भारत भूमि के भौमतीर्थों में होने वाले 'कुम्भ' से तात्पर्य पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति से था-

'चतुर: कुम्भां चतुर्णां ददामि क्षीरेण पूर्णान उदकेन् दध्म:' की वैदिक ऋचा इसी का संकेत देती है। हमारे ऋषि-मुनियो, योगियों व संतों ने सनातन संस्कृति की सर्वसमावेशी जीवन-दर्शन की इस रसमयि धारा को 'कुम्भ-महाकुम्भ' पर्वों के माध्यम से संरक्षित रखा। ज्ञानयज्ञ, यज्ञानुष्ठान, चिन्तन-मनन, योगादि क्रियाएं, अनुष्ठान व जाति-पाति रहित सर्व कल्याणकारी विमर्श-उपदेश 'कुम्भ-महाकुम्भ' पर्व का श्रृंगार रहा है। गंगा-यमुना व अन्त:सलिला सरस्वती के पवित्र संगम पर होने वाला यह 'महाकुम्भ' ऋषि परम्परा का ऋणी है जो कालखण्डों के झंझावातों के बाद भी आज भव्य-दिव्य और दुनिया के विशालतम आध्यात्मिक समागम के कारण वैश्विक स्वरुप ले चुका है। 2025 के 'महाकुम्भ' में अब तक साठ करोड़ से अधिक श्रद्धालु तीर्थयात्री-प्रवासी-अप्रवासी भारतीय व विदेशी पर्यटक आ चुके हैं और यह क्रम अभी भी आस्था के इस विशालतम महापर्व का प्रत्यक्ष साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा है।

प्रयागराज में आयोजित 'महाकुम्भ' 2025 जिस दिव्य-भव्यता के साथ अपनी पूर्ण मौलिक आध्यात्मिक आभा के साथ प्रारम्भ हुआ, उसका श्रेय वर्तमान शासन तंत्र के प्रचार/प्रसार और उस दूरदर्शी नेतृत्व के कारण ही सम्भव हो पाया, जिसका नेतृत्व सनातन संस्कृति के प्रति समर्पित स्वयं ही एक वीतरागी योगी कर रहा है। वैसे तो कुम्भ-महाकुम्भ में देश के सभी अंचलों के श्रद्धालु तीर्थयात्री, देशी-विदेशी पर्यटक आते रहे है, लेकिन 2025 के महाकुम्भ में तीर्थयात्रियों के साथ-साथ युवाओं के जनसैलाब का दृश्य अद्भुत था। सनातन आस्था के महापर्व में युवाओं की बढ़-चढ़कर सहभागिता, सुखद आश्चर्य थी। युवाओं में भारतीय धर्म-दर्शन व उसकी परम्परा के संवाहक शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, शैव-वैष्णव संतों, नागाओं, योगियो आदि के प्रति आस्था व जिज्ञासा का भाव मेरी नज़र में इस महाकुम्भ की एक विशेष उपलब्धि है जो पहले इतने वृहद रूप में नही मिलता था। भारत की अमूर्त सांस्कृति विरासत की जो परिकल्पना मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ की थी वह साकार रूप लेती नज़र आयी।

गंगा-यमुना व अन्तःसलिला सरस्वती के पवित्र संगम पर होने वाला यह 'महाकुम्भ' ऋषि परम्परा का ऋणी है जो कालखण्डों के झंझावातों के बाद भी आज भव्य-दिव्य और दुनिया के विशालतम आध्यात्मिक समागम के कारण वैश्विक स्वरूप ले चुका है।

महाकुम्भ 2025 के व्यवस्थापन और संचालन में परिवर्तनशील भू-संरचना के बावजूद सीमित समय में लक्ष्यित लक्ष्य को पूर्ण करना, उसे भव्यतम सुविधा सम्पन्न महानगर का सम्मोहक मूर्त रूप देना इस महापर्व के महाआयोजन की विशेष विशिष्टिता थी। तीर्थयात्रियों का अपार जनसमूह आने जाने वाले देशी-विदेशी श्रद्धालु-पर्यटक महाकुम्भ 2025 के नियोजन, निर्माण, समन्वय और संचालन की मोहक बानगी देखकर हतप्रथ थे। महाकुम्भ की संरचना, यहां की आध्यात्मिकता उनके लिए आश्चर्य का विषय थी। वे कह रहे थे कि कैसे इस अल्पावधि के अद्भुत महानगर मे टेंटों, शिविरों, सड़को व मूलभूत आधुनिक सुविधाओं से युक्त लगभग 4,000 एकड़ में विस्तृत टेंट सिटी, अस्पतालों आदि की नियोजित संरचना की गयी। यहां यह कहना समीचीन जान पड़ता है कि 'विश्व के सबसे विशाल आध्यात्मिक 'महाकुम्भ' का आयोजन प्रयाग में होता है। यहां की भू-संरचना और बसावट का क्षेत्रफल अन्य कुम्भ स्थलों से बड़ा होता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ जी ने वर्ष 2019 के कुम्भ को जैसी दिव्य भव्यता के साथ आयोजित व प्रचारित किया था, उसे पूरा विश्व निहारता रहा। 'कुम्भ-महाकुम्भ' का महत्व व रहस्य क्या है? इसे जानने की देखने-समझने की जिज्ञासा का बीज वर्ष 2019 में ही हो गया था। वर्ष 2025 के महाकुम्भ के प्रति वैश्विक जिज्ञासा-सम्मोहन और यहां उमड़ा जनसैलाब उसी का फलन प्रतीत होता है।

महाकुम्भ 2025 के आयोजन की विशालता और उसके भव्यतम आध्यात्मिक स्वरुप का जो स्वरुप इस बार दिखायी दिया उसने अब तक आयोजित महाकुम्भ पर्वों के आयोजन को

पीछे छोड़ दिया। महाकुम्भ के नैसर्गिक आभामंडल में आधुनिक तकनीक के समावेश की परिकल्पना का साकार रूप कोटि-कोटि जन मानस व विदेशी पर्यटको के आकर्षण का केन्द्र था। गत कुम्भ की अपेक्षा इस 'महाकुम्भ' में 25 प्रतिशत अधिक सुविधाए थी। महाकुम्भ 4,000, हेक्टेयर क्षेत्र में स्थापित था। गंगा-यमुना पर 30 पांटून पुल, संगम के समीप 25,000, श्रद्धालुओं की क्षमता तथा 10,000 बेड से सज्जित गंगा पण्डाल। 4,000 हेक्टेयर क्षेत्रफल की टेंट सिटी, 67,000 हजार स्ट्रीट लाइटें, पर्यटको हेतु 2,000 टेंट और 25,000 आवास तथा हरित महाकुम्भ की परिकल्पना को साकार करता मेला क्षेत्र का वैभव एवं 'महाकुम्भ' का अद्‌भुत आध्यात्मिक आभामंडल करोड़ो की संख्या में आने वाले, श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र था। पर्यावरणीय सुरक्षा और आगत श्रद्धालुओं के लिए एक लाख से भी अधिक शौचालय, दस हजार स्वच्छताकर्मी आठ सौ स्वच्छता गैंग एवं पचीस हजार से भी ज्यादा डस्टबिन एवं महाकुम्भ की स्वच्छता को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु आसीटी बेस्ट सिस्टम का प्रयोग किया गया।

महाकुम्भ 2025 के मेला प्रबंधन में ए.आई. तकनीक, यातायात व भीड़ प्रबंधन हेतु आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस ए.आई. आधारित उत्कृष्ट भीड़ प्रबंधन प्रणाली, पार्किंग मैनेजमेन्ट सिस्टम के अन्तर्गत 120 अस्थायी पार्किग स्थल, 720 सी.सी.टी. बी. कैमरे, ए.आई. आधारित वाहन गिनने की प्रणाली, मेला क्षेत्र का गूगल मैप से इंटीग्रेशन, 40 काल सेंटर, करोड़ों श्रद्धालुओं के आवागमन को दृष्टिगत रखते हुए उत्कृष्ट ट्रैफिक प्रबंधन हेतु 'इंटीग्रेटेड कन्ट्रोल एण्ड कमाण्ड सेन्टर, यात्रियों के आने जाने हेतु 1,000 शटल बसे एवं सिविल एयरपोर्ट की क्षमता में वृद्धि, महाकुम्भ के ऐप व बेबसाइट को आधुनिकतम प्रणालियों से सज्जित कर संचार क्षमताओं में अभूतपूर्व कार्य, 'महाकुम्भ' 2025 के आयेजन की गरिमा को वैश्विक स्वरुप दे गया। जल-थल व नभ से अभूतपूर्व सुरक्षा व्यवस्था, चारों दिशाओं से प्रयाग आने प्रवेश मार्गों पर प्रयाग के महाकुम्भ की आध्यात्मिक गौरव गाथा के इतिहास को दर्शाने वाले प्रवेश द्वार, महानगर के चौराहों-मार्गों पर महाकुम्भ विषयक चित्र-गाथा व श्लोगन वर्ष 2025 के भव्यतम् 'महाकुम्भ' को एक ऐसा स्वरुप दे गया, जो लौकिक होते हुए भी अलौकिक आध्यात्मिकता की गहरी अनुभूति करा गया। कोटि-कोटि जनमानस 'महाकुम्भ' के इस गौरवपूर्ण स्वरुप को पहली बार इतने विशाल और नियोजित प्रबंधन के रूप में देखकर अभिभूत दिख रहा था।

प्रयागराज में आयोजित 2025 के 'महाकुम्भ' में आदि शंकराचार्य द्वारा भारत के चारों दिशाओं में स्थापित शांकर मठों के शंकराचार्य, और शैव अखाड़ों के नागा सन्यासी, वैष्णव अखाड़ो के शीर्ष धर्माचार्यों, देश के विविध क्षेत्रों से आये दण्डी सन्यासी, मण्डलेश्वर, महामंडलेश्वर, नाथ सम्प्रदाय के योगी, साधु-सन्त हठयोगी और विविध धार्मिक सम्प्रदायों व पंथों के आचार्य इस महाकुम्भ में आने वाले करोड़ो श्रद्धालु तीर्थयात्रियों के आस्था केन्द्र थे।

भव्यता और धार्मिक प्रतीक संकेतों से युक्त साधु-संतों के शिविर, भारतीय संस्कृति व धर्म के अविरल प्रवाह को गति देने वाले संतों के उपदेश के श्रवण हेतु उपस्थित होने वाला जनसमूह अपने धर्म के इस वैभव को देखकर गौरव की अनुभूति से सराबोर था। करोड़ों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं का जनसमूह सम्भवतः पहली बार भव्य और दिव्य महाकुम्भ का यह विलक्षण रूप देख रहा था।

सनातन संस्कृति के धार्मिक-आध्यात्मिक वैभव के साथ-साथ भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भारत की लोक व जनजातीय संस्कृति के विविध रूपों पर आधारित प्रस्तुतियाँ, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, बिहार, बंगाल व सुदूर पूर्वोत्तर व केन्द्र शासित राज्यो के साथ-साथ भारत के अन्य राज्यों के मंडप और वहां होने वाली इन्द्रधुनषी सांस्कृतिक गतिविधिया, सनातन संस्कृति के बहुलतावादी स्वरूप से तीर्थयात्रियों, प्रवासी अप्रवासी भारतीयों व विदेशी पर्यटकों को 'महाकुम्भ' 2025 के गौरवपूर्ण आयोजन व भारतीय लोक संस्कृति के सम्मोहक लोकरंगो से जोड़ती और संवाद करती दिख रही थी। कोटि-कोटि जनमानस भारतीय धर्म-दर्शन के इस सम्मोहक रंगो को देखकर अभिभूत था। सनातन संस्कृति के महापर्व 'महाकुम्भ' की समुद्र मंथन की कथा के रहस्य को उद्घाटित करते हुए आचार्य शंकर ने कहा था कि 'ज्ञान-यज्ञ' के इस महापर्व के दो लक्ष्य है 'प्रथम सभी व्यक्ति के अज्ञान का नाश और यथार्थ का ज्ञान हो। द्वितीय अज्ञान के नष्ट होने पर ही एकता और समरसता पर आधारित समाज का निर्माण और वास्तविक सुख की प्राप्ति हो।

2025 के महाकुम्भ में तीर्थयात्रियों के साथ-साथ युवाओं के जनसैलाब का दृश्य अद्भुत था। सनातन आस्था के महापर्व में युवाओं की बढ़-चढ़कर सहभागिता, सुखद आश्चर्य थी। युवाओं में भारतीय धर्म-दर्शन व उसकी परम्परा के संवाहक शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, शैव-वैष्णव संतो, नागाओं, योगियो आदि के प्रति आस्था व जिज्ञासा का भाव मेरी नज़र में इस महाकुम्भ की एक विशेष उपलब्धि है जो पहले इतने वृहद रूप में नही मिलता था। भारत की अमूर्त सांस्कृति विरासत की जो परिकल्पना मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ की थी वह साकार रूप लेती नज़र आयी।

माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के इसी रूप को दृष्टिगत रखते हुए जिस सर्व-समावेशी 'महाकुम्भ' का आयोजन सम्पन्न हुआ, वह एक ऐसी सनातन ज्योति जगा गया जिसने केवल भारत में ही नही विदेशों मे भी भारत के विश्व गुरु बनने के मार्ग को प्रशस्त कर गया। 'सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भ' का उद्घोष, भारत की धार्मिक परम्परा और विश्व के प्रति उसके सन्देश व गौरवपूर्ण ऐतिहासिक योगदान का जयघोष कर रहा था - जिसमें रसता है, समग्रता है, एक रस का भाव व आस्था है, वसुधैव कुटुम्बकम्, की उदात्त भावना तथा प्राणिमात्र के कल्याण की उत्कृष्ट अभिलाषा है -

न मे द्वेषरागौ-न मे जाति भेदः
अहं निर्विकल्पो निराकार रुपः।
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणां
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न मेयः
चिदानंदरूपः शिवोहंशिवोहम्।।

◆

मो. : 9889061108

अद्भुत व्यवस्था का साक्षी बना महाकुम्भ-2025

-सुनील राय
(पत्रकार)

महाकुम्भ मेले की शुरुआत पौष पूर्णिमा के साथ हुई। उसके बाद मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या और बसंत पंचमी के तीन अमृत स्नान सम्पन्न हुए। अमृत स्नान के बाद कढ़ी-पकौड़ा खाकर काशी की ओर रवाना हो गए। माघी पूर्णिमा के बाद कल्पवासी अपने-अपने घरों को लौट गये। शिवरात्रि के स्नान के बाद महाकुम्भ का समापन हो गया। 45 दिनों तक चलने वाले इस महाकुम्भ मेले में 66 करोड़ से अधिक हिंदू धर्मलावंबियों ने संगम पर डुबकी लगाई। यह कुम्भ अपनी अद्भुत व्यवस्था के लिए यादगार बना रहेगा।

स्वस्थ महाकुम्भ

महाकुम्भ में हार्ट अटैक वाले 100 से ज्यादा श्रद्धालुओं की जान बचा ली गई। इसके साथ ही आईसीयू में 183 मरीजों का इलाज और 580 का माइनर ऑपरेशन किया गया। अब तक 1,70,727 ब्लड टेस्ट और 1,00,998 लोगों ने खुद को ओपीडी में दिखाया। सेंट्रल हॉस्पिटल में देश की सबसे आधुनिक तकनीक से इलाज किया गया। मेला क्षेत्र में इलाज के लिए अस्पताल बनाये गए। श्रद्धालुओं से लेकर साधु-संतों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए 100 बेड के केंद्रीय अस्पताल के साथ ही झूंसी और अरैल समेत पूरे मेला क्षेत्र में 10 और अस्पताल बनाये गये। इन अस्पतालों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की बड़े पैमाने पर तैनाती की गई।

अस्पताल के आईसीयू में पहली बार एआई मैसेजिंग फ्लो सिस्टम का इस्तेमाल किया गया। यह एआई मैसेजिंग फ्लो सिस्टम देश या विदेश के किसी भी कोने से आने वाले रोगी की बात समझकर डॉक्टर को समझा सकता है। आईसीयू में भर्ती किसी मरीज की हालत खराब होने की स्थिति में यह तत्काल डॉक्टर को अलर्ट भेजकर चिकित्सा इंतजाम सुनिश्चित करने की सुविधा प्रदान करता है। नोडल चिकित्सा स्थापना, डॉ. गौरव दुबे ने बताया कि ''10 बेड वाले आईसीयू में मरीज के सिर के नीचे एक विशेष प्रकार का माइक लगाया गया। यह माइक एआई तकनीक से जुड़ा हुआ है। यह माइक 22 क्षेत्रीय और 19 अंतरराष्ट्रीय भाषाओं को तुरंत अनुवाद करके बता देगा। इससे

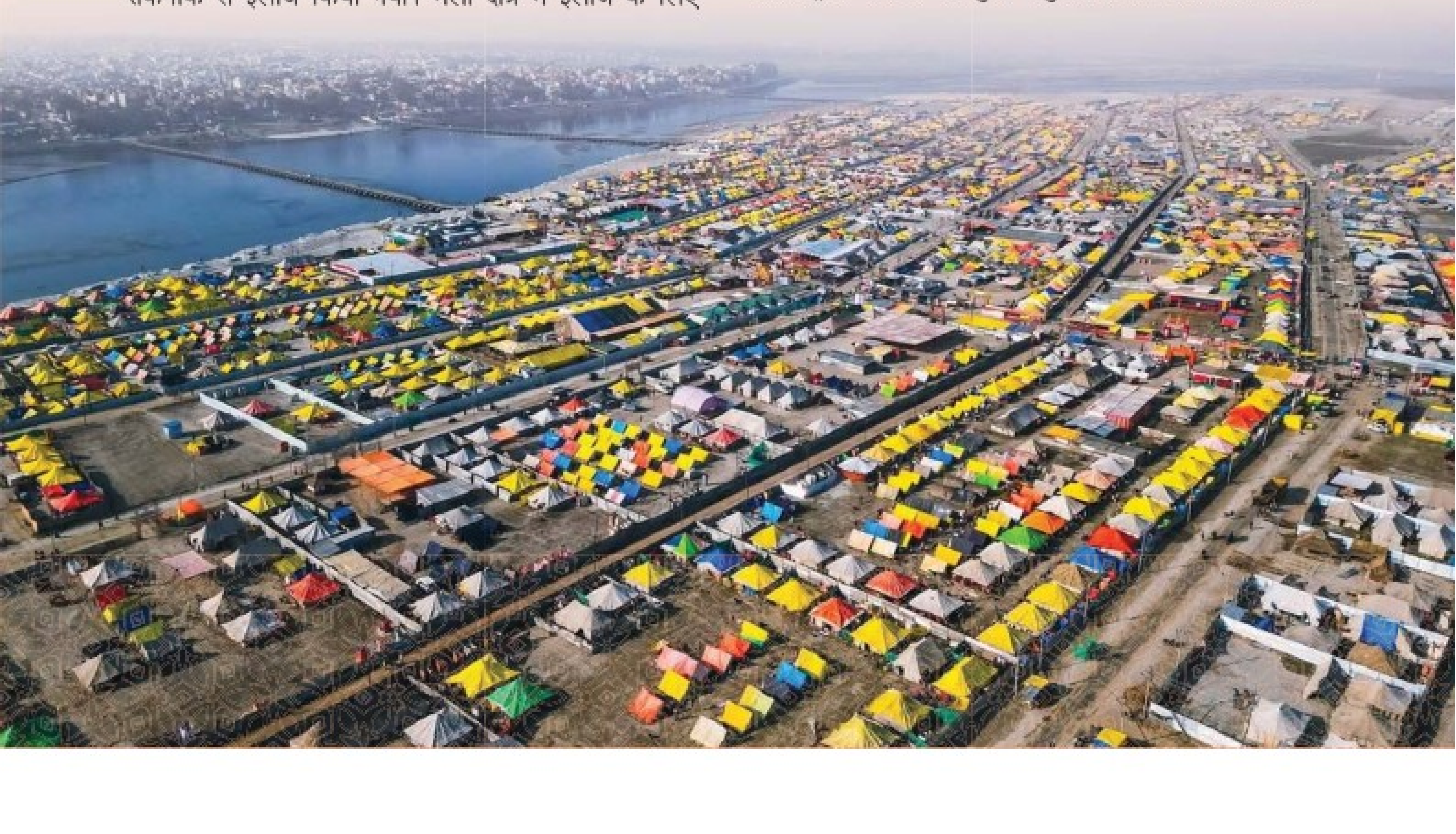

दूसरे देश और प्रदेश के मरीज की बात समझने में कोई भी दिक्कत नहीं होगी। इसके साथ ही आईसीयू में एआई कैमरे लगाए गए हैं। इन कैमरों की मदद से मरीजों की स्थिति पर नजर रखी जायेगी। इन कैमरों की एक विशेषता यह भी है कि कैमरा मरीज की स्थिति का अनुमान लगा लेगा कि मरीज को डॉक्टर की मदद की आवश्यकता है। कैमरे की तरफ से डॉक्टर को संदेश भेजा जाएगा। इसके साथ ही अरैल और झूंसी में 25 बेड के दो अस्पताल समेत विशेष सुविधाओं वाले 20-20 बेड के आठ छोटे अस्पताल भी श्रद्धालुओं के लिए बनाए गए हैं। संक्रामक बीमारियों के इलाज के लिए भी दो अस्पताल बनाये गए हैं।''

स्वच्छ महाकुम्भ

महाकुम्भ को स्वच्छ बनाये रखने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य किया गया। जल निगम ने प्रयागराज के सभी 22 नालों के ट्रीटमेंट के लिए जियो ट्यूब तकनीकी आधारित ट्रीटमेंट प्लांट लगाया। पूरे मेला क्षेत्र में कीटनाशक का छिड़काव किया गया। सभी 25 सेक्टर में एक-एक वाहनों को लगाया गया। हर गाड़ी में दो वर्कर और एक सुपरवाइजर तैनात किये गये। देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं, पर्यटकों एवं स्नानार्थियों को बेहतर सुविधा और अनुभूति के दृष्टिगत मेला क्षेत्र के पक्के घाटों, फुटपाथों, सड़कों तथा विभिन्न सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई के लिए कॉम्पैक्ट मैनुअल स्वीपिंग मशीन का उपयोग किया गया।

गत 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा के दिन सचिव नगर विकास अनुज कुमार झा ने स्वयं महाकुम्भ मेला क्षेत्र में सफाई अभियान की शुरुआत की और कहा कि ''मुझे आशा है कि सभी लोग मेले को स्वच्छ बनाये रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान अवश्य देंगे।'' पूरे मेला में डेढ़ लाख शौचालयों के स्लज का ट्रीटमेंट किया गया। प्रयागराज जनपद के अलोपी बाग में स्थित में पम्पिंग स्टेशन का कार्य शुरू किया गया। स्लज का निस्तारण करने के लिए जल निगम ने तीन अस्थाई और दो स्थाई एसटीपी शुरू कराया। इसके साथ ही फीकल स्लज ट्रीटमेंट भी शुरू किया गया। जल निगम के अधिशासी अभियंता सौरभ कुमार ने बताया कि ''महाकुम्भ के स्लज निस्तारण के लिये 4 हजार लीटर क्षमता के चार, तीन हजार लीटर की क्षमता के तीन और एक हजार लीटर की क्षमता के तीन वाहन मेला क्षेत्र में नियमित स्लज निस्तारण का कार्य किया। मेला क्षेत्र का शेष गंदा पानी सीवेज पाइप लाइन से सीधे एसटीपी तक पहुंच रहा है। अलोपी पम्पिंग स्टेशन की क्षमता 45 केएलडी से बढ़ाकर 80 केएलडी किया गया।''

गंगा टास्क फोर्स, गंगा विचार मंच, वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, सेंट्रल इनलैंड फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट, डिस्ट्रिक्ट गंगा कमेटी, राज्य स्वच्छ गंगा मिशन और

नेशनल बुक ट्रस्ट जैसी प्रमुख संस्था गंगा को स्वच्छ बनाये रखाने के लिए प्रयासरत थे। इसके साथ ही गंगा सेवा दूत, घाटों की नियमित सफाई कर रहे थे। पूरे महाकुम्भ क्षेत्र को प्लास्टिक मुक्त बनाने का हर संभव प्रयास किया गया। यही नहीं स्नान पर्व शुरू होने से एक दिन पहले बाबा जयगुरुदेव के संगत प्रेमियों ने महाकुम्भ नगर क्षेत्र में शाकाहारी फेरी निकाली। इस फेरी में कहा गया 'बाबा जी का कहना है, शाकाहारी रहना है'। लोगों को शाकाहारी भोजन के लिए प्रेरित किया गया।

45 दिनों में कुल 10 हजार 200 स्काउट एंड गाइड पूरे महाकुम्भ में अपनी सेवाएं दीं। घाटों की स्वच्छता को बनाए रखने के लिए मेला प्रशासन की ओर से बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी भी तैनात किए गए। स्नान संपन्न होने के बाद श्रद्धालु ज्यादा देर तक घाट पर न बने रहें, इसकी जिम्मेदारी पुलिसकर्मियों को दी गई थी। वो स्नान कर चुके श्रद्धालुओं को वापस घाट से जाने के लिए प्रेरित कर रहे थे, ताकि जो श्रद्धालु स्नान के लिए आ रहे थे उन्हें भी घाट खाली मिले। घाटों पर गंदगी को तेजी से साफ किया गया। सफाई कर्मी लगातार घाटों पर तैनात रहे और हर प्रकार की गंदगी को हटाने का कार्य किया गया। वहीं, शौचालयों में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। मेला क्षेत्र में कचरे को हटाने के लिए विशेष टीमों का गठन किया गया। श्रद्धालुओं द्वारा छोड़ी गई सामग्रियों को एकत्र कर उचित स्थान पर निस्तारित किया गया। एकत्रित कचरे को काले लाइनर बैग में जमा कर निस्तारित किया गया।

महाकुम्भ मेले की शुरुआत पौष पूर्णिमा के साथ हुई। उसके बाद मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या और बसंत पंचमी के तीन अमृत स्नान सम्पन्न हुए। अमृत स्नान के बाद कढ़ी-पकौड़ा खाकर काशी की ओर रवाना हो गए। माघी पूर्णिमा के बाद कल्पवासी अपने-अपने घरों को लौट गये। शिवरात्रि के स्नान के बाद महाकुम्भ का समापन हो गया। 45 दिनों तक चलने वाले इस महाकुम्भ मेले में 66 करोड़ से अधिक हिंदू धर्मावलंबियों ने संगम पर डुबकी लगाई। यह कुम्भ अपनी अद्भुत व्यवस्था के लिए यादगार बना रहेगा।

सुरक्षित महाकुम्भ

गत 13 फरवरी को महाकुम्भ मेले में गीता प्रेस के शिविर में आग लगी। कुछ देर ही आग पर काबू पा लिया गया। आग में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। घटना के समय मुख्यमंत्री योगी आदित्याथ मेले का निरीक्षण कर रहे थे। मुख्यमंत्री स्वयं घटना स्थल पर पहुंचे। सतर्कता और क्विक रिस्पांस से कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ।

मेले को सुरक्षित सम्पन्न कराने के लिए पहली बार 6 फायर बोट का संचालन किया गया। फायर बोट को मेला क्षेत्र के

काफी दूर तक पानी को पहुंचा कर आग को बुझाया जाता है। मेले में 351 से अधिक अग्निशमन वाहन, 2 हजार से अधिक ट्रेन्ड मैनपावर, 50 से अधिक अग्निशमन केंद्र व 20 फायर पोस्ट बनाए गए। प्रत्येक अखाड़ों के टेंट को फायर फाइटिंग इक्विपमेंट से भी लैस किया गया।"

घाटों पर तैनात किया गया। मुख्य अग्निशमन अधिकारी और महाकुम्भ के नोडल अधिकारी ने बताया कि "इन 6 फायर फाइटिंग बोट के लिए विभाग ने 1.38 करोड़ रुपए खर्च किये गए। नदियों के घाट पर अग्निशमन व रेस्क्यू ऑपरेशन को तेजी से पूरा करने में फायर बोट काफी कारगर है। इसमें फायर फाइटिंग रोबोट को भी तैनात किया जाता है। रोबोट की मदद से

महाकुम्भ मेले में सुरक्षा की दृष्टि से इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (आईसीसीसी) का निर्माण किया गया। इसमें एआई तकनीक का भी इस्तेमाल किया गया। मेला क्षेत्र में लगभग 1650 नये सीसीटीवी कैमरे, 24 एपीएनआर कैमरे, 40 वीएमसीडी, 100 स्मार्ट पार्किंग, क्राउड मैनेजमेंट और वाहनों की गिनती के लिए एआई कंपोनेट लगाये गए। वर्ष 2019 के कुम्भ मेले की अपेक्षा शिकायत निवारण के लिए कॉल सेंटर में 20 सीटें बढ़ाई गई। एआई नियंत्रित सीसीटीवी कैमरों की सहायता से 9 रेलवे स्टेशनों पर क्राउड मैनेजमेंट और निगरानी का कार्य किया गया।

मेले में पीएसी के साथ एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीम को भी तैनात किया गया। पीएसी, एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के जवान नाव पर ड्यूटी पर मुस्तैद रहे। इन जवानों को 700 नाव पर तैनात किया गया। नाव पर झंडे लगे हुए थे ताकि इन नावों को दूर से पहचाना जा सके। जवान लगातार 24 घंटे तैनात थे। जवानों के लिए अत्याधुनिक लाइफ जैकेट, 4 नई फ्लोटिंग जेटी और बड़े पैमाने पर रेस्क्यू ट्यूब मंगवाए गए। किसी भी विषम परिस्थिति से निपटने के लिए जवान पूरी तरह सतर्क

थे। विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए 7 कंपनी पीएसी तैनात की गई थी। महाकुम्भ मेला क्षेत्र में कुल 56 थाने बनाये गए थे। ऐसे पुलिसकर्मी जो प्रयागराज जनपद के मूल निवासी हैं, उनकी ड्यूटी मेले में नहीं लगाई गई।

मेले में साइबर अपराधी भी सक्रिय हो चुके थे। इसके लिए साइबर सुरक्षा का इंतजाम किया गया। मेला क्षेत्र में साइबर थाने की शुरुआत की गई। एआई, डार्क वेब और सोशल मीडिया का दुरुपयोग करने वालों पर नजर रखी गई। साइबर एक्सपर्ट्स को साइबर अपराध नियंत्रण के कार्य पर लगाया गया। साइबर सुरक्षा के लिये साइबर अपराध के जानकार पुलिस

अफसरों को भी तैनात किया गया। महाकुम्भ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने बताया कि ''फेक और डार्क वेबसाइट और सोशल मीडिया के शातिरों से श्रद्धालुओं को बचाने के लिए हम लोगों ने लगातार कार्य किया। अनुभवी पुलिस अफसरों को यहां पर तैनात किया गया। एआई, एक्स, फेसबुक और गूगल का किसी भी प्रकार से उसके दुरुपयोग को रोका गया।

महाकुम्भ में भीड़ प्रबंधन के लिए घोड़ा पुलिस को तैनात किया गया। पुलिस के जवान जहां नहीं पहुंच पाते हैं। वहां पर घोड़ा पुलिस पहुंचती है। मेला क्षेत्र में दारा, राका, शाहीन, जैकी, गौरी, अहिल्या और रणकुम्भ

नाम के घोड़े ड्यूटी पर तैनात किये गए। इस प्रकार कुल 130 घोड़े और 166 पुलिस कर्मी के साथ ही अन्य स्टाफ को तैनात किया गया। भारतीय नस्ल के साथ-साथ अमेरिकन और इंग्लैंड के घोड़े भी महाकुम्भ में अपनी सेवाएं दीं। उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार का कहना है कि ''इन घोड़ों को मुरादाबाद और सीतापुर ट्रेंनिंग सेंटर में विशेष ढंग से प्रशिक्षित किया गया। मेले को देखते हुए विशेष ढंग से प्रशिक्षण कराया गया। भीड़ को नियंत्रित करने में घोड़ा पुलिस की विशेष भूमिका रहती है। मेला शुरू होने के पहले ही घोड़ों को महाकुम्भ मेला में घुमाया गया था ताकि घोड़े मेला क्षेत्र के माहौल से पूरी तरह परिचित हो जाएं।''

जगमग महाकुम्भ

4 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में बसाए गए महाकुम्भ मेले में चौबीस घंटे निर्बाध गति से विद्युत आपूर्ति की गई। एक हजार चार सौ किलोमीटर की एल.टी. लाइन का जाल बिछाया गया। बिजली विभाग ने ऐसी व्यवस्था की थी कि अगर राष्ट्रीय ग्रिड फेल भी हो जाए या फिर किसी षड्यंत्र के कारण विद्युत आपूर्ति बाधित कर दी जाए। तब भी मेले में प्रकाश की व्यवस्था बनी रहेगी।

बिजली विभाग ने महाकुम्भ-2025 में विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए एंटी-ट्रिप बिजली आपूर्ति प्रणाली स्थापित की। इस प्रणाली को तीन स्तर पर तैयार किया गया। अगर एक प्रणाली के अंतर्गत विद्युत आपूर्ति बाधित होती है तो

दूसरी प्रणाली से विद्युत व्यवस्था को बहाल कर दिया जाता। इस प्रणाली में कुल 85 सबस्टेशन बनाये गए। 4.25 लाख कनेक्शनों दिए गए। इसके साथ ही 250 केवीए के 14 ट्रांसफार्मर विशेष रूप से 13 अखाड़ों के लिए स्थापित किये गए। अधीक्षण अभियंता द्धमहाकुम्भ नगरत्र्, मनोज गुप्ता के अनुसार, मेले को एक अद्वितीय बिजली आपूर्ति नेटवर्क द्वारा कवर किया गया, जहां मेले के विभिन्न क्षेत्रों के सब स्टेशन, रिंग

मेन यूनिट व्यवस्था के माध्यम से आपस में जुड़े हुए थे। यह व्यवस्था, प्राथमिक स्रोत के विफल होने पर दूसरे स्रोत से आपूर्ति को स्वचालित रूप से फिर से शुरू करने में सक्षम थी। प्रत्येक रिंग मेन यूनिट एक आपातकालीन-आधारित प्रणाली के रूप में कार्य कर रहा था। मेले में, रिंग मेन यूनिट को तीन अलग-अलग स्रोतों से विद्युत आपूर्ति प्राप्त हो रही थी।''

पहली परत की विद्युत सुरक्षा को इस तरह से तैयार किया गया कि इस व्यवस्था में 132/33 केवी के सात सब स्टेशन शामिल थे। इसको राष्ट्रीय ग्रिड से जोड़ा गया। दूसरी परत की सुरक्षा व्यवस्था में 33/11 केवी के 14 सब स्टेशनों को आपस में जोड़ा गया। तीसरी परत में 11 केवी क्षमता के 34 सबस्टेशन शामिल किये गए हैं। इनके माध्यम से मेले के विभिन्न सेक्टरों में विद्युत की आपूर्ति की जा रही थी। यदि एक 11 केवी फीडर सबस्टेशन से आपूर्ति बाधित होती, तो इसे दूसरे रिंग मेन यूनिट के माध्यम से विद्युत आपूर्ति को बहाल किया जाता। ऐसा बहुत ही दुर्लभ है मगर फिर भी राष्ट्रीय ग्रिड से जुड़े सात 132/33 केवी सबस्टेशनों में से एक भी फेल होता तो भी दूसरे सब स्टेशन के माध्यम से स्वचालित रूप से विद्युत आपूर्ति बहाल हो जाती।

अगर दुर्भाग्यवश राष्ट्रीय ग्रिड फेल हो जाती या जानबूझकर कोई इसको खराब करता तो 4 हजार हेक्टेयर में फैले इस मेले को अंधकार से बचाने के लिए बिजली विभाग ने 2 हजार हाई-पावर सोलर हाइब्रिड स्ट्रीट लाइट लगाई हैं। इन लाइट को सड़कों, घाटों, अखाड़ों के पंडालों, 30 पंटून पुलों के प्रवेश और निकास पर लगाया गया ताकि मेले में अंधेरा न होने पाए। बिजली विभाग ने 13 अखाड़ों के लिए अलग से बिजली आपूर्ति की व्यवस्था की। प्रत्येक अखाड़े के लिए 250 केवी क्षमता का ट्रांसफार्मर लगाया गया जो सीधे 33 केवी सबस्टेशन से जुड़ा हुआ था, जिससे निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित हो रही थी।

ठंड बढ़ जाने की स्थिति में अगर बिजली की खपत बढ़ जाती है तो ऐसी स्थिति से निपटने के लिए बिजली के खपत भार को दोगुना किया गया था। वर्ष 2019 के कुम्भ मेले के दौरान अधिकतम विद्युत का भार 30 एमवीए दर्ज किया गया था। इस बार 70 एमवीए तक का भार संभालने की व्यवस्था की गई।

महाकुम्भ का आर्थिक पक्ष : 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार

इस बार, महाकुम्भ-2025 में 3.50 लाख करोड़ रूपये से अधिक के कारोबार का अनुमान है। एक अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2013 में आयोजित पिछले महाकुम्भ से लगभग 12 हजार करोड़ रुपये का कुल राजस्व उत्पन्न हुआ था, जबकि कुम्भ मेला वर्ष 2019 ने 1.2 लाख करोड़ रुपये का कुल राजस्व अर्जित किया। कुम्भ से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों ने 2019 में विभिन्न क्षेत्रों में 6 लाख से अधिक श्रमिकों के लिए रोजगार पैदा किया। अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ के अनुसार, महाकुम्भ 2025 के दौरान श्रद्धालुओं की दैनिक जरूरतों की वस्तुओं का कारोबार करीब 17,310 करोड़ रुपये या उससे अधिक है। अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ के यूपी चौप्टर के अध्यक्ष महेंद्र कुमार गोयल के अनुसार, अकेले पूजा सामग्री का कारोबार करीब 2 हजार करोड़ रुपये होने की उम्मीद है, जबकि 45 दिवसीय मेले में फूलों का कारोबार करीब 8 सौ करोड़ रुपये होने का अनुमान है।

मेले के दौरान अन्य वस्तुओं के कारोबार की मात्रा में किराना सामान (गेहूं का आटा, चीनी, चाय, मसाले) 4 हजार करोड़ रुपये, खाद्य तेल 1 हजार करोड़ रुपये, सब्जियां 2 हजार करोड़ रुपये, बिस्तर, गद्दे, चादरें और अन्य घरेलू सामान 5 सौ करोड़ रुपये, दूध और अन्य डेयरी उत्पाद 4 हजार करोड़ रुपये, हीटर और ब्लोअर 50 करोड़ रुपये, जलाऊ लकड़ी 50 करोड़ रुपये, गंगा जल ले जाने के लिए गंगाजली 60 करोड़ रुपये, होटल 2500 करोड़ रुपये, यात्रा (कार किराए पर लेना, ई-रिक्शा) 300 करोड़ रुपये, नाविक 50 करोड़ रुपये और विविध 300 करोड़ रुपये शामिल हैं। नाविक प्रयागराज नाविक संघ में करीब 6 हजार पंजीकृत नाविक हैं। हाल ही में नाविकों की मांग को देखते हुए प्रति व्यक्ति 60 रुपये की नौका विहार शुल्क को बढ़ाकर 90 रुपये कर दिया गया है। प्रयागराज नाविक संघ के अध्यक्ष लल्लू लाल निषाद ने बताया कि ''मेले के दौरान

हर नाविक को हर दिन 800 से 1000 रुपये की कमाई होती है। अगर पूरी नाव बुक की जाती है, तो प्रतिदिन की कमाई और भी अधिक हो सकती है। सभी नाविकों को प्रतिदिन करीब 50 लाख रुपये की कमाई होती है, जो मेले के दौरान 22 करोड़ रुपये होती है।''

श्रद्धालु और पर्यटक ट्रेन, बस और हवाई जहाज से यात्रा करेंगे और होटल, गेस्ट हाउस सहित विभिन्न बुनियादी सुविधाओं का उपयोग करेंगे, भोजन, दवाइयों के अलावा अन्य आवश्यक चीजें खरीदेंगे। संगम नगरी में दो नवनिर्मित पांच सितारा होटलों सहित प्रयागराज और उसके आसपास के क्षेत्रों में करीब 150 होटल हैं। होटल उद्योग से जुड़े अन्य क्षेत्रों, जैसे भोजन और यात्रा से भी राजस्व की प्राप्ति हो रही है। मेले में अरैल में होम स्टे, लग्जरी टेंट सिटी, कॉटेज से लेकर सुपर लग्जरी डोम सिटी तक तैयार किए गए हैं। इनके लिए 7 हजार रुपये से लेकर 1.10 लाख रुपये प्रतिदिन के बीच की दरें तय की गई हैं। महाकुम्भ, दूधवाले से लेकर हेलीकश्रप्टर किराए पर देने वाली कंपनी तक सभी को आय हो रही है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है ''मेले में 45 करोड़ लोग आयेंगे। औसतन अगर एक व्यक्ति 5 हजार रूपए खर्च करता है तो महाकुम्भ में 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व प्राप्त होगा।'' इस बार महाकुम्भ क्षेत्र का भ्रमण कराने के लिए हेलीकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है। केवल हेलीकॉप्टर सेवा से ही प्रतिदिन औसतन 3.5 करोड़ रुपये की आय होने का अनुमान है, जो 45 दिनों की अवधि में 7 हजार तीर्थयात्रियों को मेले की सैर कराएगी, हेलीकॉप्टर सेवा से 45 दिनों में 157 करोड़ रुपये से अधिक की आय होगी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के पूर्व प्रोफेसर मनमोहन कृष्ण का मानना है कि पृथ्वी पर सबसे बड़े धार्मिक समागम महाकुम्भ-2025 जैसे मेले का कारोबार केवल अनुमानित किया जा सकता है, सटीक गणना नहीं की जा सकती। दैनिक उपयोग की वस्तुएं जैसे कंबल, ऊनी कपड़े, सिंदूर, खाद्य सामग्री विक्रेताओं तक के लिए आकर्षक बाजार है। चाहे नाविक हो, माला बेचने वाले हो, नारियल, अगरबत्ती, दीये से लेकर आलीशान आवास तक, इसकी रेंज बहुत बड़ी है और इसका सटीक आकलन करना आसान नहीं है। मोटे तौर पर कारोबार दो लाख करोड़ रुपये से अधिक बताया जा सकता है।''

महाकुम्भ के जिलाधिकारी विजय किरण आनंद ने बताया कि, ''निश्चित रूप से महाकुम्भ के दौरान आय प्राप्त होगी। वास्तविक आय का अनुमान लगाना मुश्किल है, लेकिन आने वाले देशी-विदेशी पर्यटकों के खर्च से उम्मीद से अधिक आय होगी।'' सरकार की ओर से सभी सरकारी विभागों को निर्देश दिए गए हैं कि वे सुनिश्चित करें कि जो भी काम हो, उस पर जीएसटी का भुगतान किया जाए। इस तरह सरकारी खजाने मे कर के रूप में भी राजस्व की प्राप्ति होगी।" ◆

मो. : 9415132728

महाकुम्भ जिस पर रीझी दुनिया

-सरिता त्रिपाठी
(पत्रकार)

संगम नगरी प्रयागराज में महाकुम्भ मेले का दिव्य और भव्य आयोजन पूरे विश्व को मंत्रमुग्ध किया है। पौष पूर्णिमा के साथ प्रारंभ महाकुम्भ में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के शामिल होने से आप इसकी विशालता का अंदाजा लगा सकते हैं। इस मौके पर दुनियाभर के मीडिया समूह प्रयागराज में जुटे और इनमें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस से लेकर जर्मनी और अन्य देशों के पत्रकार भी पहुंचे। महाकुम्भ को दुनिया के सबसे महान धार्मिक आयोजनों में से एक करार देते हुए वैशविक मीडिया समूहों ने कुम्भ में पहुंचने वाले लोगों की अनुमानित संख्या को चौंकाने वाला करार देते हुए कहा कि यहां प्रशासन इस आयोजन को सिर्फ धार्मिक कार्यक्रम न कहकर एक सांस्कृति आयोजन करार दे रहा है, जहां बड़े-बड़े सेलिब्रिटीज से लेकर विदेशी पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है। ब्रिटिश मीडिया समूह बीबीसी ने इस कार्यक्रम का कवरेज करते हुए इस आयोजन को मानवता का सबसे बड़ा जुटाव करार दिया। बीबीसी के मुताबिक, इस आयोजन को अंतरिक्ष से भी देखा जा सकता है। न्यूज चौनल ने यहां अलग-अलग देशों से आए लोगों से भी बात की। अर्जेंटीना से आए एक 90 सदस्यीय समूह में शामिल सबैस्चियन डिएगो ने बताया कि वह इस भक्ति के अनुभव को सामने से देखने के लिए आए हैं। उन्होंने कहा कि मुझे गंगा ने बुलाया, इसलिए मैं यहां आ गया।

आप इससे इसकी विशालता का आकलन कर सकते हैं कि अमेरिका की जनसंख्या (करीब 34 करोड़) से ज्यादा लोग इस महाकुम्भ में स्नान के लिए पहुंच चुके हैं। यह सऊदी अरब में मुस्लिमों के पवित्र स्थल मक्का और मदीना में हर साल हज के लिए जाने वाले 20 लाख लोगों से 200 गुना ज्यादा है। यह आयोजन भारत के अधिकारियों के लिए बड़ी परीक्षा रही, जिसमें वह हिंदू धर्म के लिए आयोजन के साथ साथ पर्यटन और भीड़

पानी से नहाना सुनिश्चित रहे। इसके अलावा एक प्राथमिक 100 बेड और दो 20-20 बेड्स वाले अस्पतालों की स्थापना की गई। यह देखने में ही आश्चर्यजनक है कि किस तरह सरकार ने 40 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैले इस कुम्भ आयोजन को सुगम बनाने के लिए बुजुर्गों और जरूरतमंद लोगों के लिए खास इंतजाम किए गए हैं और इसके लिए डिजिटल सेवाओं की मदद ली जा रही है। इनमें एक व्यवस्था कलाई में पहने जाने वाले बैंड की है, जो कि रेडियो फ्रीक्वेंसी के जरिए कनेक्ट रहता है और लोगों को खोने से बचाने के लिए दिया जा रहा है। कुम्भ का यह आयोजन सिर्फ हिंदू धर्म से जुड़े भारतीयों को ही नहीं, बल्कि विदेशियों को भी आकर्षित करता है। खासकर उन विदेशियों को जो हिंदू धर्म को अपना चुके हैं। आरएफआई ने एक अमेरिकी नागरिक के हवाले से बताया कि कुम्भ मेले की अहमियत इसकी अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक एकता के संदेश की वजह से ही नहीं, बल्कि आयोजन के दौरान होने वाले आध्यात्मिक अभ्यासों की वजह से भी है, जिससे लोगों को अपने अंदर के सत्य को पहचानने में मदद मिलती है। महाकुम्भ के दौरान 4000 हेक्टेयर भूमि पर 1,50,000 टेंट और इतने ही टॉयलेट बनाए गए हैं। यह पूरा क्षेत्र अमेरिका के मैनहैटन द्वीप के बराबर का क्षेत्र है।

प्रबंधन में भी जुटे रहे। एक तरह से कहें तो यह आयोजन हिंदू राष्ट्रवाद का एक अहम हिस्सा बन चुका है। भारतीय सभ्यता हिंदुत्व से अलग नहीं है। इस आयोजन के जरिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अपनी और प्रधानमंत्री की छवि को चमका रहे हैं। प्रयागराज में अलग-अलग जगहों पर उनके और पीएम के पोस्टर और बिलबोर्ड्स लगे हैं, जिनमें सरकार की लोक कल्याण योजनाओं का जिक्र किया गया है। इस आयोजन से सत्तासीन भाजपा को हिंदू सांस्कृतिक प्रतीकों के प्रचार के इतिहास को और बल मिलेगा।

महाकुम्भ को दुनिया के सबसे महान धार्मिक आयोजनों में से एक करार देते हुए वैश्विक मीडिया समूहों ने कुम्भ में पहुंचने वाले लोगों की अनुमानित संख्या को चौंकाने वाला करार देते हुए कहा कि यहां प्रशासन इस आयोजन को सिर्फ धार्मिक कार्यक्रम न कहकर एक सांस्कृतिक आयोजन करार दे रहा है।

तकनीक का साथ

पहली बार किसी आयोजन में इतने बड़े स्तर पर फेस रिकग्नीशन तकनीक और बायोमेट्रिक पहचान की सहायता ली जा रही है, जिससे लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उनके खो जाने पर उन्हें ढूंढने में आसानी होगी। किस तरह गंगा के पास पानी की गुणवत्ता मापने के लिए प्रणालियां स्थापित की गई हैं, जिससे आयोजन के दौरान गंगा में लोगों का साफ और स्वच्छ

सनातन का शंखनाद, समृद्धि का शास्त्र भी है कुम्भ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ठीक ही कहा था कि कुम्भ सिर्फ धार्मिक आयोजन नहीं है। कुम्भ के भाव में गोते लगाएं और इनके सरोकारों के विस्तार के छोर को पकड़ने की राह पर दृष्टि गड़ाते हुए आगे बढ़ें तो इसमें छिपे कई मंतव्य और जीवन व समाज के संचालन के लिए आवश्यक मार्गदर्शक संदेश सामने आते चले जाएंगे। सनातन संस्कृति का शंखनाद दिखेगा। सनातन की व्याख्या का पूरा सार मिलेगा। जो यह बताएगा कि सनातन किसी एक विशेष देवता के उपासकों और किसी एक ग्रंथ के अनुयाइयों का समूह नहीं है। यह व्यष्टि से समष्टि, समष्टि से प्रकृति, प्रकृति से पर्यावरण और पर्यावरण से परमात्मा तक में समन्वय, साहचर्य, सहआस्तित्व, सौहार्द्र, संवाद, संवेदनशीलता, संस्कार तथा शिष्ट व्यवहार का सार है। शिक्षा और दीक्षा है। जो सनातन में उपस्थित प्रबंधन का कौशल दिखाता है। कुम्भ की परंपरा से जुड़े 13 अखाड़ों और अन्य दर्शन व सिद्धांतों के उपासकों के पंडाल सनातन के विरोधी विचारों को भी आदर के गुण का दर्शन ही नहीं कराता बल्कि इसकी अनिवार्यता भी समझाता है। साकार से निराकार और आस्तिक से नास्तिक तक के दर्शन शास्त्रियों को निश्चित समयावधि पर एक स्थान पर एकत्र कर दुनिया के सामने यह उद्घोष करता है कि सनातन से बाहर कुछ नहीं है। सृष्टि में जो कुछ है वह सनातन का हिस्सा है।

जो हिंदुओं में जाति–जाति चिल्लाते हैं, महाकुम्भ उनके लिए आईना भी है। वे देख सकते हैं कि संसार के सबसे बड़े सनातन के इस जमावड़े में न तो कोई किसी की जाति पूछ रहा है और न क्षेत्र। भाषाई दीवारें भी त्रिवेणी तट पर जुट रहे और

आ-जा रहे करोड़ों लोगों के बीच कोई दूरी बनाती नहीं दिख रही है। ऊपर से स्पेन, दक्षिण अफ्रीका, अमरीका, रूस, ब्राजील, आस्ट्रेलिया, जापान, जर्मनी सहित यूरोप के ही नहीं बल्कि विश्व के ज्यादातर देशों के लोगों का कुम्भ में जमावड़ा, इनका उत्साहपूर्वक संगम पर स्नान, विश्व के कई नामी-गिरामी और धनवान लोगों में इस महाकुम्भ के दौरान सनातन धर्म की दीक्षा लेने का उल्लास सनातन के वैश्विक विस्तार की उद्‌घोषणा करता दिख रहा है। यह कोई पहली बार नहीं हो रहा है। पहले भी कई कुम्भ पर्वों पर ऐसा होता चला आया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कुम्भ को माध्यम बनाकर त्रिवेणी के तट पर यूं ही नहीं सनातन परंपरा के आकाश से ऊंची और समुद्र से भी गहरी होने की घोषणा की है। उन्होंने कुम्भ की जमीन पर वक्फ बोर्ड के दावे की धज्जियां यूं ही यह कहते हुए नहीं उड़ाई हैं कि जब आपका बीज नहीं पड़ा था तबसे सनातन हैं। योगी ने सनातन की चेतना को आधार बनाकर यह कहा है। सनातन और इससे निकली उपासना पद्धितयों तथा दर्शन के अनुयाइयों को छोड़ विश्व के प्रत्येक धर्म के प्रारंभ होने की एक तिथि है। उसे शुरू करने वाला कोई एक व्यक्ति है। जिसने ईश्वर के दर्शन की बात ही नहीं की बल्कि यह तक दावा किया कि वह जिस धर्मग्रंथ को लिखकर अपने अनुयाइयों को दिया है वह उसे ईश्वर ने बताया है। जिसे मानना जरूरी है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सिर्फ राजनेता नहीं हैं बल्कि गोरक्षपीठ जैसी बड़ी धार्मिक पीठ के पीठाधीश्वर भी हैं। संन्यासी है और धर्मशास्त्री भी हैं। इसलिए उन्होंने कुम्भ को सनातन के सरोकारों का स्वरूप भी अकारण नहीं कहा। योगी की यह बात प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 2014 में प्रधानमंत्री की

शपथ लेने के बाद ''विरासत भी और विकास भी'' और ''हिंदुत्व ही विकास'' के नारे का हिस्सा है। एक बार नहीं अनेक बार प्रधानमंत्री मोदी ने सनातन और हिंदुत्व को एक तरह चिरंतन संस्कृति पर निरंतन चिंतन कर विकसित होती जीवन पद्धति का जो सिर्फ अपने भौतिक विकास की बात नहीं करती बल्कि सांस्कृतिक विकास का महत्व भी समझाती है। साथ ही लोगों को उद्यम अर्थात कारोबार व रोजगार से जोड़ती है।

कभी दुभाषियों के माध्यम से अपनी कहने और दूसरे की सुनने की परंपरा वाले कुम्भ ने इस बार आर्टीफीशियल इंटलीजेंस (ए.आई.), बहुभाषी एआई संचालित चौट बॉट का भी प्रयोग किया। कुम्भ के आयोजन के लिए 6000 करोड़ रुपये से ज्यादा के कार्य कराए गए। जिनसे पुलों का, सड़कों का, पेयजल और विद्युत आपूर्ति लाइनो सहित अन्य तमाम कार्य कराए गए हैं। स्वाभाविक रूप से इन निर्माण कार्यों ने लोगों को रोजगार के अवसर भी मुहैया कराए हैं। इसके अलावा अखाड़ों के पंडालों, शौचालयों, टेंट सिटी जैसे कामों के अलावा प्रयागराज के हवाई अड्डे का विस्तार किया गया । रेलवे स्टेशनों को विस्तार देने के साथ अन्य कई जनसुविधाओं के विस्तार ने भी रोजगार दिए। कुम्भ से जुड़े यह प्रबंध बताते हैं कि सनातन संस्कृति में विरासत को संरक्षण के साथ विकास को प्रोत्साहन दिया गया है। साथ ही इस बात की चिंता भी की गई है कि हर व्यक्ति को स्वावलंबी और समृद्ध बनने के लिए निरंतर भरपूर अवसर उपलब्ध होते रहें।

पहली बार किसी आयोजन में इतने बड़े स्तर पर फेस रिकग्नीशन तकनीक और बायोमेट्रिक पहचान की सहायता ली जा रही है, जिससे लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उनके खो जाने पर उन्हें ढूंढने में आसानी होगी। किस तरह गंगा के पास पानी की गुणवत्ता मापने के लिए प्रणालियां स्थापित की गई हैं, जिससे आयोजन के दौरान गंगा में लोगों का साफ और स्वच्छ पानी से नहाना सुनिश्चित रहे।

कहा जा सकता है कि संत होने के नाते मुख्यमंत्री ने सनातन संस्कृति की श्रेष्ठता और प्रगति की उद्घोषणा वाले इस महापर्व को सनातन के पूर्ण सरोकारों के साथ श्रेष्ठता पर पहुंचाने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ी है। जिसका प्रमाण पहले अमृत स्नान के दौरान प्रयागराज में त्रिवेणी के तट पर जुड़े संतों, धर्माचार्यों, महामंडलेश्वरों और श्रद्धालुओं के मुंह से निकले शब्दों से भी दिख रहा है। यह हिसाब तो बाद में होगा लेकिन कुम्भ से सरकार को इस बार लगभग दो लाख करोड़ रुपये की आय होने की उम्मीद है। लगभग 3.2 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक गतिविधियों अर्थात व्यापार होने की संभावना व्यक्त की जा रही है। कुम्भ सनातन में छिपी देश की समृद्धि, शक्ति, शांति, एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखने की सामर्थ्य की उद्घोषणा का भी माध्यम है। हमारे पूर्वजों ने बहुत सोच-समझकर कुम्भ की परंपरा डाली होगी विश्व को समझाने के लिए अनेकता में एकता ही सनातन और भारत की विशेषता है। मतभिन्नता भारत की कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति है।

महाकुम्भ में जन आस्था का महारिकॉर्ड

- 08 करोड़ श्रद्धालुओं ने मौनी अमावस्या पर लगाई थी डुबकी
- 3.5 करोड़ श्रद्धालुओं ने मकर संक्रांति पर किया था स्नान
- 2.57 करोड़ स्नानार्थियों ने वसंत पंचमी पर लगाई थी डुबकी
- 1.7 करोड़ श्रद्धालुओं ने पौष पूर्णिमा पर किया था स्नान
- 1.44 करोड़ श्रद्धालुओं ने औसतन हर दिन लगाई डुबकी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पहले ही अनुमान जताया था कि इस बार जो भव्य और दिव्य महाकुम्भ का आयोजन हो रहा है, वह स्नानार्थियों की संख्या का नया रिकार्ड स्थापित करेगा। उन्होंने शुरुआत में ही 45 करोड़ श्रद्धालुओं के आने की संभावना जताई थी। यह संख्या महाकुम्भ के समापन से 15 दिन पहले ही पार कर गई। ◆

मो. : 9415650340

न भूतो न भविष्यति

–प्रदीप उपाध्याय
(पत्रकार)

प्रयागराज में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम तट पर आयोजित महाकुम्भ अपनी दिव्यता और भव्यता के लिए दशकों तक आम जनमानस के स्मृति पटल पर सुनहरी यादों की तरह अंकित रहेगा। कदाचित यह पहला ऐसा भव्य धार्मिक समागम साबित होने जा रहा है जिसमें न सिर्फ देश के करोड़ों आस्थावान श्रद्धालुओं ने भरपूर उत्साह के साथ भाग लिया बल्कि राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू, उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत अनेक गणमान्य अतिथियों ने डुबकी लगाई। न सिर्फ देश के जाने माने उद्योगपतियों गौतम अडाणी, मुकेश अम्बानी ने पवित्र संगम तट पर स्नान किया बल्कि बॉलीवुड के सितारों का जमावड़ा लगा रहा। विदेशी मेहमानों का आगमन भी हुआ। केंद्र की मोदी और उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए दिन रात कड़ी मेहनत की तब कहीं जाकर यह आयोजन इतना भव्य बन सका।

इतिहास के आइने में झांककर देखें तो विगत 78 वर्षों के दौरान देश में प्रत्येक वर्ष कुम्भ स्नान पर लाखों नहीं बल्कि करोड़ों की तादाद में श्रद्धालु पवित्र संगम तट पर जुटे और डुबकी लगाई। देश के पहले राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद गहन आस्थावान सनातन धारणाओं एवं धार्मिक मान्यताओं के व्यक्ति थे। उन्होंने आजादी के बाद पहले दशक में न सिर्फ प्रयागराज में कल्पवास किया था बल्कि सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार समारोह में भी सम्मिलित हुए थे (यद्यपि तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का मानना था कि देश के राष्ट्रपति को ऐसे आयोजनों से दूरी बनाकर रखनी चाहिए। इस मुद्दे पर इन दोनों शीर्ष नेताओं के बीच मतभेद भी हुए लेकिन राजेन्द्र बाबू ने अपनी आस्था को सर्वोपरि रखा। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की धर्म, योग एवं आध्यात्म के प्रति गहन आस्था थी। वे अपने कार्यकाल में किसी एक दिन महाकुम्भ के स्नान के लिए जरूर आती थीं। उनके आगमन और प्रस्थान के बारे में पीएम के सिक्युरिटी स्टाफ के अलावा केंद्र व राज्य सरकार के आला अफसरों को ही जानकारी हो पाती थी।

महाकुम्भ का आयोजन इस बार प्रयागराज में किया गया, जहां गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम स्थित है। इस

बार यह आयोजन विरासत और विकास की थीम पर डिजाइन किया गया था, जिसके लिए न सिर्फ उत्तर प्रदेश सरकार बल्कि केंद्र सरकार ने भी सभी आवश्यक इंतजाम किए। विगत कुछ वर्षों के दौरान मोदी-योगी सरकार के शासन काल में उत्तर प्रदेश की नयी छवि उभरी है। धार्मिक पर्यटन के लिहाज से वाराणसी में जहां काशी कारीडोर की स्थापना हुई है, वहीं अयोध्या में पांच सौ वर्षों की सुदीर्घ प्रतीक्षा के बाद राम मंदिर का निर्माण हुआ है।

अपनी रुचि एवं श्रद्धा के अनुसार ठहर सके। इससे उन्हें भारतीय संस्कृति से रूबरू होने का मौका मिला। हमारी अतुल्य भारत और अतिथि देवो भव की प्रारंभ से ही परम्परा रही है। मकर संक्रांति अर्थात 14 जनवरी से महाशिवरात्रि 26 फरवरी तक रिकार्ड संख्या में श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की आमद रही। यह तादाद तकरीबन अस्सी करोड़ रही। मेला क्षेत्र में अरैल क्षेत्र में दो सौ टेंट सिटी बनाई गयी थी। इसी प्रकार झूसी क्षेत्र में भी दो

इसी क्रम में प्रयागराज में महाकुम्भ का आयोजन किया गया। महाकुम्भ मेले में आने वाले राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों तथा श्रद्धालुओं के लिए अनेक इंतजाम किए गए। तमाम देसी विदेशी नागरिकों के ठहरने, इनके आने-जाने, क्षेत्रीय स्तर पर घूमने फिरने, भोजन और सुरक्षा का मुकम्मल इंतजाम किया गया (इसी क्रम में मेला क्षेत्र के नजदीक बने तकरीबन दो हजार घरों को होम स्टे में तब्दील कर दिया गया। यहां पर्यटक एवं श्रद्धालु

सौ टेंट सिटी स्थापित की गयी। समूचे क्षेत्र में दो हजार टेंट सिटी और दो हजार होम स्टे का इंतजाम किया गया। मेला क्षेत्र में टेंट कालोनी भी बनाई गयी। इसके अलावा प्रयागराज में पहले से बने सैकड़ों होटलों, धर्मशालाओं, गेस्ट हाउसों व अन्य भवनों में आगंतुकों के ठहराव की व्यवस्था की गयी थी।

महाकुम्भ में प्रमुख स्नान पर्व पर अखाड़ों, साधु संतों, महामंडलेश्वरों, शंकराचार्यों तथा सनातन में आस्था रखने वाले

करोड़ों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई एवं पुण्य अर्जित किया। मेला क्षेत्र में हर प्रकार के इंतजाम किए गए थे। जहां-जहां ठहराव स्थल घोषित किया गया था, वहां पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं के लिए फूड जोन भी स्थापित किए गए थे ताकि लोग अपनी रुचि और स्वाद के मुताबिक भोजन एवं ना ता कर सकें। भोजन को परोसने और बर्तनों को धोने का भी मुकम्मल इंतजाम। डिस्पोजेबल ग्लास, प्लेट, थालियों, कटोरियों व चम्मच की व्यवस्था भी की गयी। संघ परिवार से जुड़े अनेक आनुषंगिक संगठनों ने भी इसमें सहयोग प्रदान किया, उन्होंने देश के विभिन्न कोनों से लाखों की तादाद में बर्तन इकट्ठा किए। अब वह बर्तन बैंक बनाने के बारे में सोच रहा है ताकि ऐसे आयोजनों में मदद की जा सके।

महाकुम्भ में श्रद्धालुओं के आवागमन और सुगम यातायात के लिए रेलवे द्वारा भारी भरकम इंतजाम किए गए। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम समेत विभिन्न राज्यों के परिवहन विभाग द्वारा बसों के संचालन की व्यवस्था की गयी। साथ ही नागरिक एवं उड्डयन विभाग के अंतर्गत विभिन्न एयर लाइन्स द्वारा हवाई सेवाओं के संचालन का जिम्मा उठाया गया ताकि विदेशी पर्यटक और अन्य गणमान्य अतिथि सहूलियत के साथ मेला स्थल तक पहुंच सकें। प्रयागराज में चार्टड प्लेन की भरमार रही। महाकुम्भ में यात्रियों की सुविधा के लिए उत्तर मध्य रेलवे ने 1225 गाड़ियां चलाईं। देश के विभिन्न राज्यों से लाखों श्रद्धालुओं को प्रयागराज तक लाने और इनकी वापसी के लिए रेल महकमा कमर कसे रहा। इसके नतीजे भी सुखद रहे। एनसीआर में चलने वाली मालगाड़ियों को डीएफसी पर शिफ्ट किया गया लिहाजा इस रूट पर अस्सी फीसदी से अधिक यातायात डीएफसी पर चला गया। यातायात का दबाव कम होने के कारण रेलवे ने महाकुम्भ में इतनी ज्यादा गाड़ियां चलाने की योजना बनाई थी। उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय, सूबेदारगंज में समस्त सुविधाओं से लैस अत्याधुनिक डेडिकेटेड फ्रेट कारीडोर (डीएफसी) का कंट्रोल रूम बनाया गया। इस कंट्रोल रूम से 1037 किलोमीटर लम्बे रेलवे ट्रैक, जो सोननगर से लुधियाना तक जाता है, का संचालन किया जाता है। इस भव्य कंट्रोल रूम का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वर्ष 2020 में 29 फरवरी को किया गया था। दिल्ली-हावड़ा रूट पर चलने वाली अस्सी फीसदी मालगाड़ियों को डीएफसी पर शिफ्ट किया गया। इस बार महाकुम्भ में बड़ी तादाद में गाड़ियां चलाई गयीं ताकि यात्रियों को सुगम यातायात मुहैया कराया जा सके।

महाकुम्भ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विरासत और विकास के विजन का सबसे बड़ा उदाहरण बना। यह एक ओर तो विश्व की सबसे प्राचीन सनातन परम्परा का वाहक नजर आया तो दूसरी तरफ आधुनिक तकनीक से लैस होकर विकास का मूर्त प्रतिमान बनता चला गया। डिजिटल महाकुम्भ को सबने सराहा।

रोडवेज प्रशासन ने भी अपना भरपूर योगदान निभाया। 546 पुरानी और 166 नयी स्लीपर, एसी और साधारण बसों का संचालन कानपुर मंडल से किया गया। इसी तरह प्रदेश के अन्य मंडलों और नजदीकी राज्यों से रोडवेज बसों को प्रयागराज तक ले जाने और इन्हें वापस निर्धारित गंतव्य स्थलों तक पहुंचाने की योजना बनाई गयी। प्राइवेट ट्रांसपोर्टर्स भी यातायात में हाथ बंटाने की तैयारियों में जुटे नजर आए। निजी वाहनों से भी भारी तादाद में श्रद्धालु प्रयागराज पहुंचे। महाकुम्भ को लेकर उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम व्यापक तैयारियों में जुटा नजर आया। लखनऊ रीजन से हर पन्द्रह मिनट पर प्रयागराज के लिए बस चलाई गयी। प्रदेश की राजधानी लखनऊ के कैसरबाग, आलमबाग, चारबाग, अवध बस डिपो कमता से इन बसों का संचालन किया गया। लखनऊ में 1090 चौराहे पर भव्य महाकुम्भ सेल्फी प्वाइंट भी बनाया गया। यह राजधानी के युवाओं, महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के बीच उत्सुकता, उत्साह और आकर्षण का केंद्र बिंदु बना नजर आया। सेल्फी प्वाइंट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कट आउट के साथ महाकुम्भ 2025 का विशाल लोगो और महाकुम्भ

के दौरान पड़ने वाले विशेष स्नान पर्वों की तारीखों का उल्लेख था। लाखों लोगों ने सेल्फी ली ताकि इसे भविष्य की यादों में सजों सकें।

महाकुम्भ में सुरक्षा के लिए हाईटेक इंतजाम किए गए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, वरिष्ठ मंत्रियों प्रदेश के मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह और पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने कई बार कुम्भ क्षेत्र का दौरा किया और व्यवस्थओं का जायजा लिया। अनेक वरिष्ठ अफसरों ने महाकुंभनगर में चल रही तैयारियों का जायजा लिया तथा अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जरूरी निर्देश दिए। इसका नतीजा रहा कि यह आयोजन इतना दिव्य एवं भव्य स्वरूप प्राप्त कर सका। प्रयागराज में इस बार महाकुम्भ मेले की सुरक्षा व्यवस्था के लिए आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तकनीक की मदद ली गयी। इस संदर्भ में प्रयागराज महाकुम्भ में ड्यूटी पर तैनात किए जाने वाले पुलिसकर्मियों को बाकायदा इसके महत्व और तौर तरीकों से परिचित कराया गया। कुम्भ क्षेत्र में तैनात किए गए पुलिसकर्मियों को खास तौर पर यह नसीहत दी गयी कि वे आम श्रद्धालुओं और देसी विदेशी पर्यटकों के साथ शालीनतापूर्वक पेश आएं। किसी को भी बेवजह नहीं परेशान किया जाए। ऐसा देखने में भी आया। मित्रवत पुलिस ने सेवा और सुरक्षा के नायाब नमूने प्रस्तुत किए। प्रदेश के मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह और डीजीपी प्रशांत कुमार ने गत 12 नवम्बर को प्रयागराज में कुम्भ क्षेत्र के निरीक्षण के दौरान मातहतों को निर्देशित किया था कि सभी कर्मचारी और अधिकारी अपने व्यक्तित्व और कार्य की अद्भुत मिसाल पेश करें। इसके बेहतर नतीजे देखने को मिले। मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने अफसरों को निर्देश दिया था कि मेले को भव्य, दिव्य, सुरक्षित, सुगम, सुव्यवस्थित और स्वच्छ बनाने के साथ ही इसे डिजिटल भी बनाएं। उन्होंने निर्देशित किया था कि महाकुम्भ में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाए तथा इसे प्लास्टिक मुक्त बनाया जाए। प्रसाद, फूल, पूजन सामग्री एवं खानपान के लिए इकोफ्रेंडली दोने व पत्तलों के स्टाल लगाए जाने के निर्देश दिए गए थे। ऐसा ही हुआ। डीजीपी प्रशांत कुमार ने पुलिसकर्मियों के प्रशिक्षण के दौरान बार-बार कहा था कि महाकुम्भ मेला पृथ्वी पर मनुष्य का सबसे बड़ा समागम और सबसे बड़ा यज्ञ है। इसकी सुरक्षा व्यवस्था के लिए एआई का इस्तेमाल करने की उन्होंने सलाह दी थी ताकि नयी चुनौतियों से आसानी के साथ निपटा जा सके। इन इंतजामों का सुखद परिणाम सामने आया और सक्षम एवं सबल उत्तर प्रदेश की प्रखर तस्वीर प्रकट हुई।

महाकुम्भ विश्व का सर्वाधिक प्राचीन एवं संभवतया सबसे बड़ा धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समागम है, जिसमें अनेक संस्कृतियों को मानने वाले लोग श्रद्धा, उल्लास एवं आस्था से भाग लेते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान है जिसे समूची दुनिया ने देखा है। महाकुम्भ के लोगो का अनावरण प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा किया गया था। इस वर्ष महाकुम्भ का सूत्र वाक्य सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः है। इसका तात्पर्य है कि कुम्भ स्नान से मनुष्य मात्र को समस्त सिद्धियों एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।

महाकुम्भ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विरासत और विकास के विजन का सबसे बड़ा उदाहरण बना। यह एक ओर तो विश्व की सबसे प्राचीन सनातन परम्परा का वाहक नजर आया तो दूसरी तरफ आधुनिक तकनीक से लैस होकर विकास का मूर्त प्रतिमान बनता चला गया। डिजिटल महाकुम्भ को सबने सराहा। वहीं दूसरी तरफ चैटबॉट इसका निराला फीचर साबित हुआ। यह दोनों विशेषतायें हमारे युवा पर्यटकों को अलग किस्म का आनंद प्रदान करने वाली साबित हुईं। इनके उपयोग से श्रद्धालुओं को विश्व स्तरीय सुविधा मिली। एआई जेनरेटिव चैटबॉट कुम्भ सहायक विकसित किया गया था, यह भाशिनी एप की मदद से दस से अधिक भाषाओं में श्रद्धालुओं

को महाकुम्भ से जुड़ी तमाम जानकारियां उपलब्ध कराने में कामयाब रहा। यह चैटबॉट गूगल नैविगेशन, इंटरैक्टिव कन्वर्सेशन व व्यक्तिगत जीआईएफ की सुविधा से लैस रहा। कुम्भ सहायक चैटबॉट का स्वागत स्वयं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया । यह चैटबॉट महाकुम्भ 2025 एप या व्हाट्स एप के द्वारा संचालित किया गया। यह महाकुम्भ के दौरान पर्यटकों के व्यक्तिगत मार्गदर्शक के तौर पर कार्य करता हुआ दिखा। यह चैटबॉट बोलकर अथवा लिखकर श्रद्धालुओं के साथ संवाद स्थापित कर रहा था। इसके अलावा उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग ने एआई सक्षम मोबाइल एप भी तैयार किया था। यह राज्य के पर्यटन स्थलों और अन्य सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया था। इसके जरिए प्रदेश भर के पर्यटन स्थलों के अलावा महाकुम्भ मेले से जुड़ी जानकारियां उपलब्ध की गयीं। इस एप के जरिए यात्रा योजनाओं, आवास एवं दीपदान, मंदिर प्रसाद की भी बुकिंग की गयी। इसके अलावा एप में मार्गदर्शिका, स्थानीय खानपान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रदेश के पर्यटन स्थलों की जानकारी प्रदान की गयी थी। प्रयागराज में प्रमुख स्नान पर्वों पर डुबकी लगाने के बाद श्रद्धालुओं का जत्था वाराणसी और अयोध्या की ओर मुड़ गया। अयोध्या में रामलला के दर्शन का रिकॉर्ड बना। लाखों श्रद्धालुओं ने प्रतिदिन राम मंदिर में रामलला की मूर्ति के समक्ष मत्था टेका। वहीं अनेक श्रद्धालु काशी विश्वनाथ कारीडोर की भव्यता देखकर मुग्ध नजर आए। उत्तर प्रदेश में धार्मिक पर्यटन का यह अद्‌भुत नजारा था। इसे पहली बार देखा गया। न भूतो न भविष्यति।

महाकुम्भ विश्व का सर्वाधिक प्राचीन एवं संभवत: सबसे बड़ा धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समागम है, जिसमें अनेक संस्कृतियों को मानने वाले लोग श्रद्धा, उल्लास एवं आस्था से भाग लेते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान है जिसे समूची दुनिया ने देखा है। महाकुम्भ के लोगो का अनावरण गत दिनों प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा किया गया था। इस वर्ष महाकुम्भ का सूत्र वाक्य सर्वसिद्धिप्रद: कुम्भ: है। इसका तात्पर्य है कि कुम्भ स्नान

से मनुष्य मात्र को समस्त सिद्धियों एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार लाखों वर्ष पूर्व जब देवताओं और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था तो उसमें से अमृत कलश निकला था। इस अमृत को पीकर अमरत्व प्राप्त करने की सहज कामना न सिर्फ देवताओं बल्कि दैत्यों के मध्य भी उत्पन्न हुई थी। सभी देवता चाहते थे कि अमृत कलश उनके अधिकार क्षेत्र में ही रहे, जबकि दैत्य भी इस पर अपना अधिकार एवं वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे। अमृत कलश लेकर देवता और दैत्य दोनों भागे, इसी आपाधापी में अमृत की कुछ बूंदें छलककर धरती पर जा गिरीं। हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन में पवित्र गंगा, यमुना, सरस्वती, क्षिप्रा और गोदावरी नदियों में यह अमृत की बूंदें जाकर गिरीं और यहीं इन नदियों के तट पर पवित्र स्नान तथा कुम्भ मेले की परम्परा शुरू हुई जो सदियों से अविराम जारी है। प्रत्येक छह वर्ष के अंतराल पर अर्ध कुम्भ एवं बारह वर्ष बीतने पर महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। यह पर्व न केवल हमारी धार्मिक आस्था और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है बल्कि इसे भारतीय संस्कृति और सभ्यता का अद्वितीय परिचायक भी माना जा सकता है।

महाकुम्भ भारतीय आस्था का प्रमुख पर्व है। इसे आत्मशुद्धि और सांसारिक पापों से मुक्ति का पर्व भी माना जाता है। धार्मिक एवं पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कुम्भ के मौके पर पवित्र नदियों में स्नान करने से व्यक्ति के समस्त पाप, रोग, शोक तथा कष्ट धुल जाते हैं। उसका शरीर निर्मल, स्वच्छ एवं तरोताजा हो जता है। मनोमालिन्य तिरोहित हो जाता है। स्नान, जप और तप से मानव मात्र को मोक्ष की प्राप्ति होती है। यही मोक्ष की कामना लाखों नर-नारियों को प्रतिवर्ष संगम तट तक खींच लाती है। भारतीय जीवन दर्शन में यही आध्यात्मिक एवं लौकिक चेतना सदियों से विद्यमान रही है और पीढ़ी दर पीढ़ी इसके प्रति अगाध विश्वास बना रहा। इसे आधुनिकता बोध और वैज्ञानिक प्रगति के दौर में भी सहज आस्था के रूप में स्वीकार किया गया। गुलामी के दौर में भी यह विचार धुंधला नहीं पड़ा। भारतीय जीवन दर्शन और वांग्मय में भी यही उल्लिखित है कि जो साधु महात्मा कंदराओं, गुफाओं और घने जंगलों में साल भर तपस्या में लीन रहते थे वे भी कुम्भ स्नान के दौरान मैदानों में उतरते हैं और आम जनमानस को ज्ञान एवं आशीर्वाद प्रदान करते हैं। अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित-अर्धशिक्षित, गृहस्थ, साधु, सन्यासी, मनीषी, विद्वान, पर्यटक लाखों की तादाद में बगैर बुलाए स्वेच्छा से कुम्भ के आयोजन स्थल पर जुटते हैं। वैश्विक समुदाय भी इस आयोजन को भरपूर कौतूहल की दृष्टि के साथ देखता है। ऐसा समागम और किसी देश में होता हो, इसका प्रामाणिक उल्लेख नहीं मिलता है। यह दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समागम में एक माना जा सकता है।

महाकुम्भ के दौरान पड़ने वाले विशिष्ट शाही स्नान का अपना अलग महत्व है। इस अवसर पर साधु संत और अखाड़ों के महंत अपने-अपने अनुयायियों के साथ स्नान करते हैं। वे संगम तट पर गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती की लहरों के साथ अठखेलियां करते हैं। महाकुम्भ के अवसर पर होने वाला विशिष्ट स्नान, धर्म और समाज में, इन साधु संतों और महंतों की विशेष प्रतिष्ठा को, भरपूर गरिमा के साथ दर्शाता है। महाकुम्भ का सबसे बड़ा और प्रमुख आयोजन प्रयागराज में होता है। संयोग देखिए इस बार यह आयोजन यहीं पर सम्पन्न हुआ। समूचा देश उस ऐतिहासिक पल की प्रतीक्षा कर रहा था कि कब इंतजार की घड़ियां खत्म हों और कोटि-कोटि पग, इसी मार्ग पर द्रुत या फिर मंथर गति से बढ़ते हुए नजर आएं। प्रयागराज में त्रिवेणी स्थित है। प्रयागराज काशी की ही भांति ज्ञान, आध्यात्म, धर्म और तपस्या का अद्‌भुत केंद्र रहा है। यह न सिर्फ भारत बल्कि दुनिया के प्राचीनतम शहरों में से एक है। रामायण एवं महाभारत सरीखे महत्वपूर्ण ग्रंथों में इस शहर का पर्याप्त उल्लेख देखने को मिलता है। प्रयागराज में महाकुम्भ के दौरान करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं, लाखों लोग कल्पवास करते हैं। यह आयोजन कार्तिक पूर्णिमा से लेकर महाशिवरात्रि की अवधि तक लगभग दो माह तक चलता रहता है। प्रयागराज में जब महाकुम्भ का आयोजन होता है उस वक्त समूचे उत्तर भारत में ठंड का मौसम रहता है। आम तौर पर ठंड के मौसम में लोग स्नान करने से कतराते हैं

लेकिन कुम्भ की आस्था का प्रवाह देखिए लोग स्वतः स्फूर्त भाव से नदी में डुबकी लगाते हुए दिखाई देते हैं।

महाकुम्भ के अवसर पर लगने वाला मेला केवल धार्मिक समागम ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का जीवंत प्रतीक है। हमने बचपन में अपने गांव तथा ननिहाल से अनेक लोगों को कुम्भ के अवसर पर प्रतिवर्ष प्रयागराज स्नान के लिए जाते हुए देखा होगा। जिन शहरों और कस्बों में हमारा जीवन बीता वहां पर भी हजारों लोगों को लगातार प्रयागराज, नासिक, हरिद्वार और उज्जैन जाते हुए देखा गया। यह प्रत्येक भारतीय का जाना पहचाना अनुभव है। आपने भी कुछ ऐसा ही महसूस किया होगा। यही हमारी भारतीय संस्कृति और आस्था की सहज अभिव्यक्ति है। आधुनिक ज्ञान, तर्कशास्त्र और विज्ञान तथा इतिहास, दर्शन और धर्म की अबूझ पहेलियों ने बेशक हमें यहां-वहां भटकने को विवश किया हो लेकिन हमारी धर्म के प्रति आस्था की डोर कभी कमजोर नहीं पड़ी। यह लगातार मजबूत होती चली जा रही है।

महाकुम्भ के आयोजन के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, धार्मिक प्रवचन और योग साधना के शिविर आयोजित किए जाते हैं। इसके अलावा विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के संत एवं महात्मा भी यहां आते हैं जिनसे लोग उनके जीवन दर्शन और ज्ञान को ग्रहण करते हैं। महाकुम्भ के दौरान भक्ति संगीत, कथा, प्रवचन, सत्संग और धार्मिक नाट्य प्रस्तुतियों का भी प्रदर्शन एवं प्रस्तुतिकरण किया जाता है। यह साधारण जनमानस के दिलों में गजब की आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रवाह कर देता है। यह अलौकिक आनंद की अनुभूति कराता है।

सामाजिक दृष्टिकोण से महाकुम्भ मेला भारतीय समाज में धार्मिक सहिष्णुता, भाषायी एकता और भाईचारे का संदेश देता है। यहां विभिन्न जाति, धर्म और पंथ के लोग एकत्रित होते हैं, जिससे समाज में सद्भावना का प्रसार होता है। महाकुम्भ का आयोजन ऐसा मंच प्रदान करता है जहां लोग आपसी मतभेदों को भुलाकर एक सूत्र में बंधे हुए नजर आते हैं और आध्यात्मिक शांति एवं परमानंद की अनुभूति करते है। महाकुम्भ मेला भारतीय आस्था , संस्कृति और आध्यात्मिकता का सबसे बड़ा प्रतीक है। यह एक ऐसा पर्व है जो न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि भारतीय समाज की एकता, सहिष्णुता और विविधता की सतरंगी छवि को प्रस्तुत करता है। महाकुम्भ का आयोजन हर बार नयी उमंग उत्साह के साथ किया जाता है। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। महाकुम्भ न केवल भारत में बल्कि समूचे विश्व में विशिष्ट स्थान रखता है। प्रत्येक महाकुम्भ में हजारों विदेशी पर्यटक कौतूहल एवं जिज्ञासा के भाव के साथ भारत आते हैं। ये न सिर्फ भारतीय संस्कृति से परिचित होते हैं बल्कि अमिट छाप लेकर वापस जाते है। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति, योग और आध्यात्मिकता को वैश्विक पटल पर अपनी नयी पहचान बनाने का मौका मिला है। इस आयोजन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक बार सराहा गया है। इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। यह एक असाधारण उपलब्धि है जिस पर गर्व किया जा सकता है। ◆

मो. : 9695232888

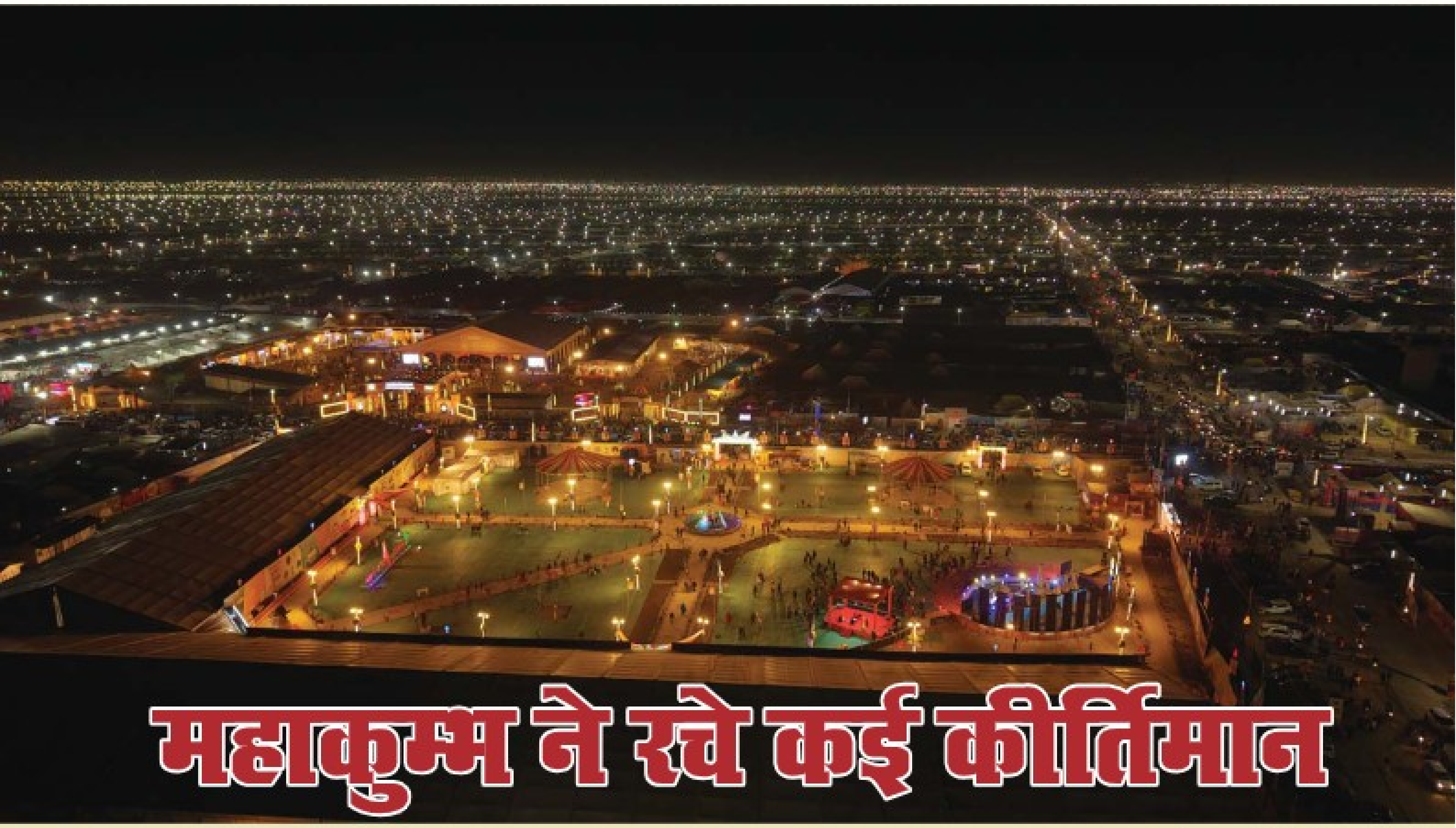

महाकुम्भ ने रचे कई कीर्तिमान

–सुरेन्द्र अग्निहोत्री
(लेखक/पत्रकार)

आस्था और अध्यात्म अध्याय में आध्यात्मिकता का महापर्व महाकुम्भ परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के साथ सामाजिक तथा संस्कृतिकरण का इतिहास रचने में सफल हो गया। गंगा जमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर आस्था एवं विश्वास का अद्‌भुत नजरा जहां एक और संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरो रहा था वहीं मानवता की अद्‌भुत मिसाल की झलक दे रहा था। अनुपम दिव्य महाकुम्भ में महाकुम्भ के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैश्विक ख्याति और श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या की आगमन को देखकर इस बार महाकुम्भ की चतुर्दिक चाक-चौबंद व्यवस्था का परिणाम से विभिन्न भाषा-भाषी विभिन्न मतावलंबियों के समूह से लेकर साधू संतों, गृहस्थों, स्त्री-पुरुष, बच्चे, वृद्ध, दिव्यांग की सुगमता और सुरक्षा का ध्यान रखना महत्वपूर्ण चुनौती थी। महाकुम्भ पूर्व के अनेक आयाम में स्वच्छता, अविरल गंगा जमुना सरस्वती में जल प्रवाह कर शताब्दियों तक यादगार प्रबंधन पर मंथन ने अनुमान से अधिक श्रद्धालुओं के आगमन पर पलक पांवड़े बिछाकर स्वागत किया गया। हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा कर स्वागत की अनूठी पहल की। महाकुम्भ पूर्व पर अनेक कीर्तिमानों ने उत्तर प्रदेश की छवि बदली है। जिसमें संख्या से लेकर प्रबंधन को लेकर भी है। हवाई सेवा कीर्तिमान का बना तो केंद्रीय अस्पताल में रिकॉर्ड ओपीडी का कीर्तिमान स्थापित किया। महाकुम्भ में श्रद्धालुओं का डुबकी लगाने वालों का आंकड़ा 60-65 करोड़ पार करना मानव इतिहास के किसी आयोजन में इतनी बड़ी संख्या में लोगों के सहभागी होने के प्रमाण नहीं है। चीन और भारत की आबादी को छोड़ दें तो महाकुम्भ में शामिल हुए उतने लोग, जितनी दुनिया के बड़े देशों की जनसंख्या तक नहीं अमेरिका, रूस, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान व बांग्लादेश की जनसंख्या से अधिक लोगों ने त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई। विश्व स्तरीय परिवहन व्यवस्था से लेकर आवासीय परिसर और स्विस कार्टेज, रोशनी, पेयजल आपूर्ति एवं चिकित्सा सेवाएं मानवता की अमूर्त चेतना के प्रेरणा स्थल प्रयागराज के पावन संगम स्थल पर विशाल क्षेत्र में फैले आयोजन में सुलभ होती रही।

श्रद्धालुओं की भीड़ बहुरंगी परिधानों में एक अद्‌भुत अनूठे भारत की परिकल्पना को साकार कर रहा था। सुप्रसिद्ध

लेखक मार्कट्वेन ने अपनी पुस्तक ''ए जर्नी अराउंड द वर्ल्ड'' में प्रयाग कुम्भ के संदर्भ में अपने विचार कुछ इस तरह प्रकट किए हैं ''यह आस्था का विस्मयकारी शक्ति है जिसके कारण वृद्ध और दुर्बल, युवा और आसक्त सभी, बिना किसी रूकावट या शिकायत के इस प्रकार की यात्राओं पर, अनेक मुसीबत तथा परेशानियों को झेलते हुए, विशाल भीड़ के रूप में उमड़ पड़ते हैं। यह प्यार के कारण होता है अथवा भय के कारण कुछ कहा नहीं जा सकता। हम पश्चात लोगों के लिए आश्चर्य और कल्पना से परे है।"

महाकुम्भ में देखने को मिल रही विविध संस्कृतियों की झलक

प्रयागराज में तीनों अमृत स्नान (मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या और बसंत पंचमी) के बाद भी श्रद्धालुओं/स्नानार्थियों के जोश और उत्साह में कोई कमी नहीं दिख रही है। पूरे देश और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से पवित्र त्रिवेणी में श्रद्धा और आस्था के साथ डुबकी लगाकर पुण्य प्राप्त करने के लिए श्रद्धालु प्रतिदिन लाखों, करोड़ों की संख्या में प्रयागराज पहुंच रहे हैं। बसंत पंचमी के अंतिम अमृत स्नान पर्व के बाद भी श्रद्धा का जबरदस्त उत्साह लोगों को संगम तट तक खींच कर ला रहा है। मंगलवार, 11 फरवरी को सुबह आठ बजे तक 49.68 लाख लोगों ने त्रिवेणी में स्नान किया। इसके बाद कुल स्नानार्थियों की संख्या 45 करोड़ के ऊपर पहुंच गई है। स्नानार्थियों में 10 लाख कल्पवासियों के साथ-साथ देश-विदेश से आए श्रद्धालु एवं साधु-संत शामिल रहे।

> आस्था और अध्यात्म अध्याय में आध्यात्मिकता का महापर्व महाकुम्भ परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के साथ सामाजिक तथा संस्कृतिकरण का इतिहास रचने में सफल हो गया। गंगा जमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर आस्था एवं विश्वास का अद्भुत नजरा जहां एक और संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरो रहा था वहीं मानवता की अद्भुत मिसाल की झलक दे रहा था।

स्नान पर्व पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़

महाकुम्भ में यदि अब तक के कुल स्नानार्थियों की संख्या का विश्लेषण करें तो सर्वाधिक 8 करोड़ श्रद्धालुओं ने मौनी अमावस्या पर स्नान किया था, जबकि 3.5 करोड़ श्रद्धालुओं ने मकर संक्रांति के अवसर पर अमृत स्नान किया था। एक फरवरी और 30 जनवरी को 2-2 करोड़ के पार और पौष पूर्णिमा पर 1. 7 करोड़ श्रद्धालुओं ने पुण्य डुबकी लगाई, इसके अलावा बसंत पंचमी पर 2.57 करोड़ श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी में आस्था की डुबकी लगाई थी। माघ पूर्णिमा से पहले भी प्रतिदिन एक करोड़ से अधिक श्रद्धालु संगम तट पर पवित्र स्नान के लिए पहुंच रहे हैं।

प्रमुख लोग त्रिवेणी संगम में पावन डुबकी लगाई

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संगम में पावन डुबकी लगाई, सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले, गृह मंत्री अमित शाह, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधियां, केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, अर्जुन राम मेघवाल, श्रीपद नाइक, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ (मंत्रिमंडल समेत) भी संगम में डुबकी लगा चुके हैं। इसके अलावा प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल, रमन डेका राज्यपाल, छत्तीसगढ़, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी, मणिपुर के सीएम एन बीरेन सिंह, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, प्रो. (डॉ.) मानिक साहा, मुख्यमंत्री, त्रिपुरा, असम विधानसभा अध्यक्ष बिस्वजीत दैमारी, डॉ. रमन सिंह, अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधानसभा, भगत सिंह कोश्यारी, पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र एवं पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखंड, बीजेपी सांसद सुधांशु त्रिवेदी, राज्य सभा सांसद सुधा मूर्ति, टंक राम वर्मा, मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन, लखन लाल देवांगन, मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन, अशोक सिंघल, मंत्री, असम सरकार, हरश

संघवी, गृह राज्य मंत्री, गुजरात एवं श्री मुकेशभाई पटेल, मंत्री, गुजरात सरकार, सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव, प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के नेता माता प्रसाद पांडे, गोरखपुर के सांसद रवि किशन, हेमा मालिनी, पूर्व सांसद दिनेश लाल यादव 'निरहुआ', बॉलीवुड एक्ट्रेस भाग्यश्री, अनुपम खेर, मिलिंद सोमण, आशुतोष राणा, प्रख्यात अभिनेता ओलम्पिक मेडलिस्ट साइना नेहवाल, एक्ट्रेस से किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर बनीं ममता कुलकर्णी, प्रख्यात कवि कुमार विश्वास, क्रिकेटर सुरेश रैना, अन्तरराष्ट्रीय रेसलर खली, कोरियोग्राफर रेमो डिसूजा, सचिन पायलट, विधायक एवं महासचिव, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीबॉलीवुड एक्ट्रेस ईशा गुप्ता के अलावा भाजपा के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद भी संगम में स्नान कर चुके हैं।

महाकुम्भ में यातायात के प्रमुख बिंदु

मेला क्षेत्र के प्रमुख मार्गों और संपर्क पथों में भी डायवर्जन लागू

- सभी 31 पांटून पुलों से आवागमन।
- बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं के सहयोग के लिए स्वयंसेवक और पुलिस जवान।
- पार्किंग स्थल से मेला परिसर के लिए बढ़ायी गयीं शटल बसें, 250 से अधिक शटल बसें सिर्फ पार्किंग स्थल से मेला परिसर के लिए संचालित।
- मेला परिसर में अनधिकृत वाहनों का प्रवेश निषेध।
- प्रयागराज की सीमा पर बने 102 पार्किंग स्थल प्रभावी रूप से।
- संचालित, 5 लाख से अधिक क्षमता की वाहन पार्किंग व्यवस्था।
- प्रयागराज की सीमा से बाहर 88 होल्डिंग एरिया स्थापित, इन होल्डिंग एरिया में 5 लाख से अधिक लोगों के आश्रय की व्यवस्था।

महाकुम्भ में सेवा

- मेला क्षेत्र में लगे 233 वाटर एटीएम मशीनों का 50 लाख से अधिक लोगों ने शुद्ध पेयजल के लिए किया उपयोग।
- मेला क्षेत्र में स्थापित 10 डिजिटल खोया-पाया केंद्रों ने परिजनों से बिछुड़े 20,000 से अधिक श्रद्धालुओं को मिलाया।
- मेला क्षेत्र में 1 केंद्रीय अस्पताल और 42 अन्य अस्थायी अस्पतालों में 6 लाख से अधिक लोगों को मिली चिकित्सीय सहायता, इनमें ब्लड प्रेशर व शुगर जांच कराने वालों की संख्या सबसे ज्यादा।
- समाज कल्याण विभाग द्वारा लगाये गये श्रवण कुम्भ शिविर में नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन और एलिम्को के सहयोग से 30 हजार से अधिक श्रवण बाधित लोगों की जांच और मुफ्त में उपकरण वितरित।
- मेला क्षेत्र में 138 उचित मूल्य की राशन दुकानों से कल्पवासियों और श्रद्धालुओं को 5 रुपये किलो आटा, 6 रुपये किलो चावल और 18 रुपये किलो की दर से चीनी वितरित। अब तक 1,000 मीट्रिक टन से अधिक राशन वितरित।

सुगम महाकुम्भ

- यूपी रोडवेज द्वारा 8,000 से अधिक रोडवेज बसों का संचालन।
- यात्रियों की सुविधा के लिए 800 से अधिक शटल बसों का संचालन।
- प्रयागराज शहर में 7 नये बस स्टेशन बनाये गये।
- महाकुम्भ में रेलवे द्वारा 13,335 ट्रेनों का किया जा रहा संचालन।
- देश के विभिन्न स्टेशनों से 3,400 से अधिक महाकुम्भ स्पेशल ट्रेनों की व्यवस्था।
- पिछले कुम्भ की तुलना में महाकुम्भ स्पेशल ट्रेनों की संख्या 72 प्रतिशत बढ़ी।
- महाकुम्भ को लेकर प्रयागराज के 9 रेलवे स्टेशनों का नवीनीकरण।

- प्रयागराज जंक्शन पर प्रवेश सिटी साइड, प्लेटफॉर्म नं.-1 से एवं निकास सिविल लाइंस साइड, प्लेटफार्म नं. 6 से दिया जा रहा है।
- ऐसे यात्री, जिनका पहले से टिकट रिजर्व है, उन्हें सिटी साइड के गेट नंबर 5 से अलग से प्रवेश दिया जा रहा है।
- श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मेला क्षेत्र में 5,000 ई-रिक्शा का संचालन।
- बुजुर्गों को स्टेशनों से बाहर निकलने के लिए विशेष निकास द्वार की व्यवस्था।
- प्रयागराज एयरपोर्ट पर नये टर्मिनल का निर्माण।
- देश के 25 प्रमुख शहरों से प्रयागराज के लिए सीधी उड़ान।
- प्रमुख स्नान पर्वों के पहले अलग-अलग क्षेत्रों से 55 फ्लाइट की व्यवस्था।
- महाकुम्भ स्पेशल ट्रेनों की 6,984 बोगियों पर महाकुम्भ से संबंधित तस्वीरें।
- प्रयागराज के 10 स्टेशनों से ऑटो, ई-रिक्शा और शटल बसें पहुंचा रही संगम क्षेत्र।
- रेलवे कर्मी तीर्थयात्रियों का संगम तट और शहर के बारे में कर रहे मार्गदर्शन

डिजिटल खोया-पाया केंद्र

- डिजिटल खोया-पाया केंद्र द्वारा 13000 से अधिक लोगों की सहायता।

महाकुम्भ में डिजिटल खोया-पाया केंदों से हजारों श्रद्धालुओं और उनके परिजनों को राहत मिली है। अब तक कुम्भ में बिछड़े हुए 13 हजार से अधिक लोगों को उनके परिवारों से मिलाने में सफलता मिली है। इनमें 64 फीसदी से अधिक संख्या महिलाओं की रही। यही नहीं पुलिस ने 23 विभिन्न राज्यों और नेपाल से आए श्रद्धालुओं का उनके परिवारों से सफलतापूर्वक मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गंगा की निर्मल धारा

स्वच्छ और अविरल धारा के उद्देश्य की पूर्ति में जियो ट्यूब तकनीक काफी सहायक साबित हुई है। इस विधि से 23 अनटैप्ड नालों का पानी ट्रीटमेंट के बाद गंगा नदी में छोड़ा जा रहा है। पानी को और शुद्ध और डिसइन्फेक्ट करने के लिए ओजोनाइजेशन किया जाता है। इससे पानी में अश्वक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जिससे जलीय जीव-जंतुओं को भी फायदा होता है।

शुद्ध जल Water ATM

45 लाख से अधिक लोगों द्वारा वाटर एटीएम का उपयोग महाकुम्भ नगर में जल निगम की ओर से लगाए गए वाटर एटीएम स्नानार्थियों के लिए काफी मददगार साबित हो रहे हैं। निगम की ओर से सभी 25 सेक्टरों में कुल 233 वाटर एटीएम लगाए गए हैं। इनके जरिये प्रतिदिन चौबीसों घंटे स्नानार्थियों को शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। अब तक 45 लाख से अधिक लोग इनका इस्तेमाल कर चुके हैं।

यह दुनिया का सबसे बड़ा समागम है, जिसमें भाग लेने वाले श्रद्धालुओं की संख्या 60-65 करोड़ की संख्या पार कर अर्थव्यवस्था में चार लाख करोड़ का योगदान हुआ है। इस बार महाकुम्भ मेला के धार्मिक आयोजन को अपने स्वरूप से कहीं ज्यादा विशाल होने का संभावना के चलते इस बार प्रयागराज में मेला स्थान को 3,200 हेक्टेयर से बढ़ाकर 4,000 हेक्टेयर कर दिया गया। श्रद्धालुओं की विशेष सुरक्षा आपरेशन चतुर्भुज के जरिये की गई। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए यह स्पेशल आपरेशन चलाया गया।इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर से पूरे मेला क्षेत्र के साथ-साथ पूरे शहर की निगरानी की जा रही है। 2750 हाई-टेक कैमरों एवं एंटी-ड्रोन सिस्टम से विशेष सुरक्षा टीमें हर गतिविधि पर पैनी नजर रखी गई है। घाटों की लंबाई 12 किलोमीटर कर दी गई, जो 2009 में मात्र आठ किलोमीटर ही थी। यह आयोजन आर्थिक गतिविधियों का समागम भी है। 45 दिनों तक चलने वाला महाकुम्भ मेला देश के सकल घरेलू उत्पाद

> **महाकुम्भ में श्रद्धालुओं का डुबकी लगाने वालों का आंकड़ा 60-65 करोड़ पार करना मानव इतिहास के किसी आयोजन में इतनी बड़ी संख्या में लोगों के सहभागी होने के प्रमाण नहीं है। चीन और भारत की आबादी को छोड़ दें तो महाकुम्भ में शामिल हुए उतने लोग, जितनी दुनिया के बड़े देशों की जनसंख्या तक नहीं।**

में एक फीसद तक की वृद्धि कर सकता है। मोटे तौर पर अनुमान है कि महाकुम्भ में अपेक्षित 40 करोड़ लोग पांच हजार रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से खर्च करें, तो इससे दो लाख करोड़ रुपए का आर्थिक प्रभाव होगा। हालांकि माना जा रहा है कि प्रति व्यक्ति खर्च 10 हजार रुपए तक हो सकता है, जिसका अर्थ है चार लाख करोड़ रुपये का आर्थिक प्रभाव। वर्ष 2019 के कुम्भ में 1.2 लाख करोड़ रुपए के अतिरिक्त जीडीपी का सृजन हुआ था। तब 24 करोड़ लोग पहुंचे थे, जो 2013 के मेला से दोगुना था। सरकार ने इस मेले में तैयारियों पर 7,500 करोड़ रुपए खर्च किया जाना है, जिसमें राज्य सरकार का हिस्सा 5,400 करोड़ और केंद्र सरकार का हिस्सा 2,100 करोड़ रुपए का है। महाकुम्भ नवाचार का केंद्र बन गया है, यह यात्रा क्षेत्र में टिकाऊ पर्यटन उपादानों को विकसित करने के साथ बुनियादी ढांचे को वैश्विक जरूरतों को पूरा करने के अनुरूप सेवाएं देने का प्रयास हुआ है। इससे वैश्विक पर्यटन को आकार देने की नई राह खुली है। मेजबानी करने की भारत की क्षमता बढ़ी है। जैसे-जैसे दुनिया जुड़ती जाएगी, कुम्भ मेला भविष्य में वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित करना जारी रखेगा। ◆

मो. : 9415508695

आस्था, अध्यात्म और भव्यता का सजीव अनुभव

-डॉ. सुयश मिश्रा
(पत्रकार)

संगम की पवित्र रेती पर पहला कदम रखते ही ऐसा अनुभव हुआ मानो युगों पुरानी आध्यात्मिकता और आस्था की तरंगें ह्रदय में उतर रही हों। सनातन परंपरा का यह अदभुत दृश्य देख ह्रदय गदगद था। अंदर की ओर बढ़ते कदमों के बीच चारों ओर गूंजते मंत्रोच्चार और श्रद्धालुओं के जयकारों ने वातावरण को एक दिव्य अनुभूति से भर दिया था। समय जैसे ठहर सा गया था और मन अतीत की उन अनगिनत कथाओं में विचरने लगा, जिनमें इस संगम की महिमा का गुणगान किया गया है। मेले का दृश्य अत्यंत भव्य था। रेतीले तट पर दूर-दूर तक असंख्य तंबू और झोपड़ियाँ बसी हुई थीं, ऐसा लग रहा था कि मानो एक अस्थायी नगरी बस गई हो। श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा था, हर कोई संगम में पुण्य स्नान के लिए आतुर दिख रहा था। साधु-संतों की टोलियाँ भगवा वस्त्रों में लिपटीं, माथे पर भस्म लगाए, त्रिशूल और कमंडल लिए आध्यात्मिक चर्चा में लीन थीं। नागा संन्यासियों का धूनी रमाए ध्यानमग्न स्वरूप दिव्यता का अनुभव करा रहा था। मेले में जगह-जगह लगे भंडारे, जहां निःशुल्क प्रसाद वितरित सनातन संस्कृति की अतिथि सत्कार और सेवा भावना को दर्शा रहे थे।

सुबह-सुबह कुहासा हल्का होते ही जब मैं मेले के मुख्य द्वार पर पहुँचा, तो वहां का दृश्य अविस्मरणीय था। ऐसा लगा मानो एक नया संसार बसा हो, जिसमें धर्म, आध्यात्म, संस्कृति और परंपरा एक साथ सांस ले रहे हों। साधु-संतों के सजे हुए शिविरों के बीच श्रद्धालुओं की भीड़ निरंतर आगे बढ़ रही थी। गेरुए वस्त्र पहने सन्यासी, भस्म रमाए नागा साधु, भगवा पताकाएं

लहराते अखाड़ों के अनुयायी, कांवड़ लिए तपस्वी और सफेद धोती-कुर्ता पहने कल्पवासी, सब संगम तट की ओर बढ़ते नजर आ रहे थे। ठंडी हवाएं गंगा तट पर आते ही एक अलग शीतलता प्रदान कर रही थीं। एक ओर डुबकी लगाते श्रद्धालु थे तो दूसरी ओर हाथों में जल लेकर सूर्य को अर्घ्य देते साधक। महिलाएं, पुरुष, बच्चे, बुजुर्ग, युवा सभी एक ही भावना से ओत-प्रोत थे, गंगा मैया की पावन गोद में समर्पण की। संगम क्षेत्र में संस्कृति, अध्यात्म, भक्ति और उल्लास का एक अनुपम दृश्य था। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती की पावन धाराएं अनगिनत श्रद्धालुओं को अपने शीतल स्पर्श से तृप्त कर रही थीं। यह केवल एक मेला नहीं था, यह भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा की जीवंत झांकी थी, जहाँ आस्था, भक्ति और आत्मशुद्धि की अनवरत धारा प्रवाहित हो रही थी। महाकुम्भ 2025 का दृश्य मेरे लिये किसी भव्य स्वप्न से कम नहीं था। आस्था का अथाह सागर उमड़ पड़ा था, जहां लाखों श्रद्धालु गंगा की गोद में आत्मशुद्धि की डुबकी लगाने को आतुर थे। सूर्योदय की स्वर्णिम किरणों के बीच मंत्रोच्चार की पवित्र गूंज, नागा संन्यासियों की दिव्य उपस्थिति और संतों के शिविरों में बहते आध्यात्मिक ज्ञान की धारा ने पूरे वातावरण को अलौकिक बना दिया था। यह केवल स्नान का अवसर नहीं था, बल्कि आत्मदर्शन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सनातन मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा का महासंगम था, जहां आस्था अनंत विस्तार पा रही थी। यहाँ हर कोई अपने-अपने भावों में मग्न था, कोई मोक्ष की कामना लिए गंगा में डुबकी लगा रहा था, तो कोई साधु-संतों के सत्संग में बैठकर ज्ञान की गंगा में गोता लगा रहा था। एक बुजुर्ग महिला अपनी पोती का हाथ पकड़कर स्नान करवा रही थी, उनकी आंखों में भक्ति के साथ-साथ संतोष भी झलक रहा था। एक युवा जोड़ा गंगा में डुबकी लगाकर अपने नवजात शिशु का आशीर्वाद मांग रहा था। वहीं, साधु-संत जल में खड़े होकर मंत्रोच्चार कर रहे थे। यह केवल स्नान नहीं था, यह आस्था और परंपरा की वह धारा थी जो हर युग में बहती आई है। कुछ ही देर में अमृत स्नान, जिसे शाही स्नान भी कहा जाता है, की पावन घड़ी आ पहुँची। संगम की ओर दृष्टि दौड़ाते ही ऐसा लगा मानो स्वयं इतिहास अपनी आँखों के सामने जीवंत

संगम की पवित्र रेती पर पहला कदम रखते ही ऐसा अनुभव हुआ मानो युगों पुरानी आध्यात्मिकता और आस्था की तरंगें हृदय में उतर रही हों। सनातन परंपरा का यह अदभुत दृश्य देख हृदय गदगद था। अंदर की ओर बढ़ते कदमों के बीच चारों ओर गूंजते मंत्रोच्चार और श्रद्धालुओं के जयकारों ने वातावरण को एक दिव्य अनुभूति से भर दिया था।

नतमस्तक हो रहे थे। जैसे ही पहला अखाड़ा गंगा में उतरा, संपूर्ण वातावरण भक्तिरस में डूब गया। सबसे पहले जूना अखाड़ा, जो संन्यासी संप्रदाय का सबसे बड़ा और प्राचीन अखाड़ा है, संगम में स्नान के लिए उतरा। नागा संन्यासियों की टोली ने जय शिव शंकर, हर हर महादेव के उद्घोष के साथ गंगा में डुबकी लगाई। उनके साथ हजारों श्रद्धालुओं ने भी पुण्य लाभ प्राप्त किया। इसके बाद निरंजनी अखाड़े के संतों का आगमन हुआ। ये संत केसरिया वस्त्रों में, गले में फूलों की मालाएँ पहने, भव्यता के साथ संगम की ओर बढ़े। इनके साथ महामंडलेश्वर, महंत और अन्य वरिष्ठ संत भी थे। जैसे ही उन्होंने गंगा में स्नान किया, पूरा क्षेत्र 'हर-हर गंगे' के जयघोष से गूंज उठा। फिर महानिर्वाणी अखाड़े के संन्यासी अपने विशिष्ट ध्वज के साथ संगम की ओर बढ़े। उनके पीछे रथों पर सवार महामंडलेश्वर और महंत आ रहे थे। इस अखाड़े के संन्यासियों ने उत्साह के साथ गंगा में प्रवेश किया और वहां मंत्रोच्चारण करते हुए स्नान किया। इसके बाद अटल अखाड़े के संतों ने संगम में स्नान किया। यह अखाड़ा शिव उपासना और वेदाध्ययन के लिए प्रसिद्ध है। इनके स्नान के साथ ही कई श्रद्धालु भी जल में उतरकर पुण्य लाभ

हो उठा हो। दूर से ही अखाड़ों के साधु-संत अपने ध्वज, निशानों और भव्य साज-सज्जा के साथ संगम की ओर बढ़ रहे थे। उनका यह आगमन किसी भव्य राजकीय यात्रा से कम नहीं था। जयकारों की गूंज, शंखों और नगाड़ों की ध्वनि तथा भक्तों की उमड़ी भीड़ ने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया था। सबसे आगे नागा संन्यासी थे, जो पूर्णत: निर्वस्त्र, शरीर पर भस्म रमाए, गले में रुद्राक्ष की मालाएँ डाले, हाथों में त्रिशूल, तलवार और भाला लिए दौड़ते हुए गंगा की ओर बढ़ रहे थे। उनके चेहरे पर गजब का तेज था, आँखों में दिव्यता और आत्मविश्वास झलक रहा था। उनके पीछे-पीछे महामंडलेश्वर, महंत और अन्य संतजन घोड़ों, हाथियों, और रथों पर सवार होकर आ रहे थे। हाथियों पर सुशोभित संतों की शोभायात्रा अद्‌भुत थी, मानो प्राचीन युग के किसी राजसी काफिले का सजीव दृश्य आँखों के सामने उतर आया हो। श्रद्धालु उन्हें निहारते हुए श्रद्धा से

कुम्भ मेला केवल आध्यात्मिकता और आस्था का केंद्र नहीं था, बल्कि इसकी प्रशासनिक तैयारियाँ भी उतनी ही प्रभावशाली थीं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सरकार ने इसे एक सुव्यवस्थित और भव्य आयोजन बनाने के लिए हर स्तर पर बेहतरीन व्यवस्थाएँ की थीं। पूरे क्षेत्र को एक सुनियोजित टेंट सिटी में तब्दील कर दिया गया था, जहाँ लाखों श्रद्धालुओं के ठहरने की उत्तम व्यवस्था की गई थी।

अर्जित करने लगे। अग्नि अखाड़े के संत अग्नि देवता के उपासक होते हैं। ये हाथों में अग्नि की प्रतीकात्मक ज्योति और शंख लिए हुए स्नान के लिए आगे बढ़े। इनके स्नान के दौरान वातावरण पूरी तरह आध्यात्मिकता से सराबोर हो गया। इसके

बाद आनंद अखाड़े के संतों का आगमन हुआ। इनका स्नान वैदिक मंत्रोच्चारण और हवन के साथ हुआ, जिससे संपूर्ण संगम क्षेत्र में शुद्धता और दिव्यता का अद्भुत संचार हुआ। फिर आवाह्न अखाड़े के साधु-संत संगम में प्रवेश कर पुण्य लाभ अर्जित करने लगे। इनके स्नान के साथ ही श्रद्धालुओं की आस्था और बढ़ गई। निर्मोही अखाड़े के संतों ने हाथों में श्रीराम और हनुमान के ध्वज लिए संगम में स्नान किया। इनका स्नान भगवद्भक्ति और राम नाम के संकीर्तन के साथ संपन्न हुआ। इसके बाद दिगंबर अखाड़ा, जो विशेष रूप से वैराग्य और त्याग का प्रतीक माना जाता है, के संतों ने संगम स्नान किया। इनका स्नान अद्भुत भक्ति-भाव से परिपूर्ण था। अंत में निर्मल अखाड़े के संतों ने अपनी विशिष्ट परंपरा के साथ संगम में स्नान किया। इन संतों का स्नान शांति और तपस्या का प्रतीक था, जिससे श्रद्धालुओं को गहरी आध्यात्मिक अनुभूति हुई। सभी अखाड़ों के स्नान के बाद संगम क्षेत्र में अद्भुत ऊर्जा और भक्ति का संचार हो चुका था। लाखों श्रद्धालु गंगा तट पर खड़े होकर इस दिव्य क्षण का साक्षी बन रहे थे। मैं खुद इसका गवाह बना। रात होते ही मेला एक नए रूप में नजर आने लगा। गंगा तट पर जलते दीपकों की श्रृंखला ने अद्भुत नजारा प्रस्तुत किया। साधु-संतों के प्रवचन और कीर्तन गंगा आरती के साथ वातावरण को पूरी तरह भक्तिमय बना रहे थे। जैसे ही आरती शुरू हुई, पूरा संगम क्षेत्र मंत्रमुग्ध हो गया। आरती की लौ, घंटों की ध्वनि, श्रद्धालुओं के हाथों में जलते दीपक और गंगा में उनकी प्रतिबिंबित रोशनी, यह सब मिलकर एक अलौकिक दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। रात के समय शिविरों में संतों के प्रवचन सुनने का भी अलग अनुभव था। कहीं योग सिखाया जा रहा था, तो कहीं ध्यान की विधियां समझाई जा रही थीं। कुछ श्रद्धालु संगम तट पर पूरी रात साधना में लीन थे। कोई ध्यान कर रहा था, तो कोई गंगा जल में खड़े होकर जाप कर रहा था। कल्पवास करने वाले लोग एक महीने तक यहां रहकर अपनी साधना और नियमों का पालन कर रहे थे। गंगा के किनारे बैठकर मैंने पूरे दिन का अनुभव दोबारा मन में दोहराया। यह केवल एक यात्रा नहीं थी, यह आत्मा की गहराइयों तक पहुंचने वाला अनुभव था। गंगा की लहरें अपने शाश्वत प्रवाह में संदेश दे रही थीं कि समय बदलेगा, युग बदलेंगे, पर आस्था की यह धारा कभी नहीं रुकेगी। महाकुम्भ न केवल सनातन संस्कृति की जीवंतता को दर्शाता है, बल्कि पूरी दुनिया को यह संदेश भी देता है कि श्रद्धा, सेवा और ज्ञान ही मानव जीवन का सबसे बड़ा धन है। जब मैं लौटने लगा, तो केवल तस्वीरें और नोट्स नहीं, बल्कि एक अनुभूति साथ लेकर जा रहा था, एक ऐसा अहसास, जो शब्दों में पूरी तरह व्यक्त नहीं किया जा सकता, केवल महसूस किया जा

सकता है। महाकुम्भ 2025 का यह अनुभव जीवनभर स्मरणीय रहेगा।

सीएम योगी की चाक-चौबंद व्यवस्था

कुम्भ मेला केवल आध्यात्मिकता और आस्था का केंद्र नहीं था, बल्कि इसकी प्रशासनिक तैयारियाँ भी उतनी ही प्रभावशाली थीं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सरकार ने इसे एक सुव्यवस्थित और भव्य आयोजन बनाने के लिए हर स्तर पर बेहतरीन व्यवस्थाएँ की थीं। पूरे क्षेत्र को एक सुनियोजित टेंट

सिटी में तब्दील कर दिया गया था, जहाँ लाखों श्रद्धालुओं के ठहरने की उत्तम व्यवस्था की गई थी। मेला क्षेत्र को योजनाबद्ध तरीके से विभाजित किया गया था, जिससे भीड़ नियंत्रण में कोई परेशानी न हो। स्वच्छता व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई, जिससे संपूर्ण परिसर स्वच्छ और व्यवस्थित बना रहे। हजारों सफाई कर्मी तैनात थे, जो नियमित रूप से कूड़ा प्रबंधन और स्वच्छता सुनिश्चित कर रहे थे। सुरक्षा व्यवस्था को अभूतपूर्व स्तर तक मजबूत किया गया था। पूरे मेले में हजारों सुरक्षाकर्मी तैनात थे, जो दिन-रात गश्त कर रहे थे। आधुनिक तकनीक का भी भरपूर उपयोग किया गया था। जगह-जगह उच्च गुणवत्ता वाले सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे और ड्रोन कैमरों के माध्यम से पूरे क्षेत्र की निगरानी की जा रही थी। इससे किसी भी आपातकालीन स्थिति में त्वरित कार्रवाई संभव हो पा रही थी। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पूरे मेला क्षेत्र में मेडिकल कैंप स्थापित किए गए थे, जहाँ प्रशिक्षित डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी 24 घंटे सेवा में तैनात थे। आपातकालीन सुविधाओं को भी अत्याधुनिक बनाया गया था, जिससे किसी भी आकस्मिक परिस्थिति में त्वरित चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जा सके। इसके अलावा, लापता व्यक्तियों के लिए सहायता केंद्र बनाए गए थे, जहाँ आधुनिक संचार प्रणालियों की मदद से गुमशुदा लोगों को उनके परिवारों से मिलाने की व्यवस्था थी। यातायात और परिवहन व्यवस्था को भी मुख्यमंत्री की प्राथमिकताओं में रखा गया। श्रद्धालुओं की सुगमता के लिए विशेष शटल सेवाएँ चलाई जा रही थीं, जिससे वे आसानी से अपने गंतव्य तक पहुँच सकें। पार्किंग क्षेत्रों को सुव्यवस्थित ढंग से चिन्हित किया गया था ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो। भोजन और जलपान की भी उत्तम व्यवस्था थी। विभिन्न स्थानों पर अन्नक्षेत्र स्थापित किए गए थे, जहाँ निशुल्क भोजन वितरण किया जा रहा था। साथ ही, खाने-पीने के स्टॉल भी लगाए गए थे, जहाँ स्वच्छता और गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा गया था। ◆

मो. : 8924856004

महाकुम्भ में दिखी समृद्ध भारत की झलक

-यशोदा श्रीवास्तव
(पत्रकार)

महाकुम्भ महा रिकार्ड के साथ संपन्न हो गया। दुनिया के सबसे बड़े इस मानव समागम में बहुत कुछ अद्‌भुत देखने को मिला। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चले दिव्य-भव्य सांस्कृतिक समागम से सराबोर महाकुम्भ इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा। इलाहाबाद से प्रयागराज नामकरण के बाद यह पहला महाकुम्भ है जो अनगिनत मामलों में बेमिसाल रहा। नाम के अनुरूप ही प्रयागराज की पहचान पूरी दुनिया में अयोध्या, काशी और मथुरा के बाद एक और बड़े धार्मिक नगरी के रूप में स्थापित हुई। देश के कोने कोने से 50 करोड़ से अधीक श्रद्धालु यहां आकर धन्य हुए। यहां यह चिन्हित करने का कोई मतलब नहीं रहा कि कौन आया कौन गया। कौन छोटा था कौन बड़ा। गंगा की गोद में न कोई छोटा होता है न बड़ा। आस्था का इतना बड़ा जनसैलाब यूं ही नहीं उमड़ा। मां गंगा की लहराती जल धारा सचमुच मां के आंचल समान थी जिसकी छांव में हर कोई सिमटने को आतुर था। गंगा यमुना और अदृश्य सरस्वती की पवित्र लहरों में डुबकी लगाने का सौभाग्य जिसको जिसको बदा था, हर कोई यहां आकर धन्य हुआ। बेशक इस बार का महाकुम्भ अब तक के मानव इतिहास में ऐसा और इतना विशाल धार्मिक आयोजन था जिसका प्रारंभ और समापन सनातन विधि विधान से हुआ। प्रयाग राज संगम स्नान को आए हर एक मुंह से सुना गया कि ऐसा सफलतम आयोजन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जैसी सनातनी व धार्मिक शख्सियत से ही संभव हो पाया,वरना इसके पहले कुम्भ, अर्ध कुम्भ बस एक रस्मी आयोजन के सिवा और कुछ नहीं होता था। तब की व्यवस्थाएं भी नगर निगम और इलाहाबाद जिला प्रशासन के भरोसे ही रहता था। इस बार के कुम्भ की विराटता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि भारत और चीन की आबादी छोड़ दें तो दुनिया के बाकी देशों जितनी आबादी यहां आकर धन्य हुई है। अर्थात योगी सरकार यहां हर रोज एक देश जैसा इंतजाम और सुरक्षा उपलब्ध कराने में कामयाब रही।

महाकुम्भ में 60 करोड़ स्नानार्थियों की संख्या पार हो जाने पर मुख्यमंत्री ने सनातन सेनानियों को बधाई दी है और कहा कि मुझे गर्व है कि मैं भारत के उस प्रदेश का मुख्यमंत्री हूं जहां के 110 करोड़ सनातन धर्मियों में से 60 करोड़ से अधिक की आबादी और संगम में डुबकी लगाकर धन्य हुई। हमारी कोशिश होगी कि इसी तरह प्रभु श्री राम लला का दर्शन करने अयोध्या, बाबा विश्वनाथ का दर्शन करने काशी और राधा कृष्ण का दर्शन करने मथुरा वृंदावन भी श्रद्धालु इसी अनुपात में आएं। उन्होंने कहा कि सेवा सुरक्षा और सुविधा वैसी ही होगी जैसी हमारी सरकार ने प्रयागराज में उपलब्ध कराई।

महाकुम्भ दर असल भारत की एकात्मकता, अध्यात्मिकता, समता और समरसता का अद्भुत संगम था। कुम्भ में मोनालीसा भी थी तो ममता और मानवता भी था। कहीं आईआईटियन बाबा थे तो कांटों पर लेटकर साधना करते संन्यासी भी थे। कुम्भ में किसी वृद्धा सास को कंधे पर स्नान कराने ले जाती बहु को भी देखा गया तो उम्र दराजों की मदद करते युवा भी दिखे। कुल मिलाकर यह कुम्भ भक्ति और आस्था का संगम तो था ही,भारत के तमाम प्रदेशों के सांस्कृतिक, सभ्यता, बोली भाषा और साज श्रृंगार का भी संगम था।

महाकुम्भ महा रिकॉर्ड के साथ संपन्न हो गया। दुनिया के सबसे बड़े इस मानव समागम में बहुत कुछ अद्भुत देखने को मिला। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चले दिव्य-भव्य सांस्कृतिक समागम से सराबोर महाकुम्भ इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा। इलाहाबाद से प्रयागराज नामकरण के बाद यह पहला महाकुम्भ है जो अनगिनत मामलों में बेमिसाल रहा। नाम के अनुरूप ही प्रयागराज की पहचान पूरी दुनिया में अयोध्या, काशी और मथुरा के बाद एक और बड़े धार्मिक नगरी के रूप में स्थापित हुई।

महाकुम्भ की बड़ी बात यह थी कि सर्वथा पहली बार साधू संतों के धर्म संसद में हिंदू राष्ट्र और सनातन बोर्ड के गठन का प्रस्ताव पारित हुआ। हिंदू राष्ट्र की चाह रखने वाले करोड़ों हिंदुओं की मंशा का यह श्री गणेश है। साधू संतों की पंचायत नें राम के चित्र छपे मुद्रा के चलन की भी मांग कर डाली। नागा साधुओं ने पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लेकर बता दिया कि सरकार के इस प्रयास में वे उसके साथ हैं। विभिन्न अखाड़ों के नगा साधू संतो ने विधिवत पूजा अर्चना कर नदी शुद्धीकरण के संकल्प के साथ एक एक वृक्ष लगाने की शपथ भी ली। अमृतेश्वर महादेव पीठाधीश्वर सहदेवानंद गिरी ने इस संकल्प को पर्यावरण और अध्यात्म का अनूठा संगम बताया वहीं वाटर वीमेन शिप्रा पाठक ने कहा कि यदि हम आज से ही नदी शुद्धीकरण और पर्यावरण के प्रति नहीं सचेत हुए तो हमारी पीढ़ियां यहां मोक्ष और पुण्य दोनों से वंचित होंगी।

इस बार महाकुम्भ के महा रिकार्ड में यह भी जुड़ा कि कुम्भ स्नान का ऐसा रेला रहा कि प्रयागराज में दो करोड़ से अधिक बाहरी गाड़ियों का आना हुआ और प्रयागराज एयरपोर्ट पर बीते एक महीने में 650 से अधिक चार्टेड प्लेन उतरे। जाहिर है ये देश के तमाम सामर्थ्यवानों का कुम्भ आगमन का संकेत है। सरकार की व्यवस्था कुछ इस तरह हाईटेक थी कि प्रतिदिन करीब सौ से अधिक जहाजें दिन रात देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं को लाती और ले जाती रहीं। कुम्भ में श्रद्धालुओं का जिस तरह हजार दो हजार किमी अपने निजी वाहनों से आना, चार्टेड प्लेन और मुंबई, बंगलूरू आदि शहरों से जहाज के मंहगे टिकट से आना न केवल श्रद्धा और भक्ति का अनुपम उदाहरण है,यह समृद्ध भारत की पहचान भी है। ◆

मो. : 9918955583

उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को बल देगा महाकुम्भ

-विभा कनन
(शिक्षिका)

पंजाब, हरियाणा और दिल्ली चैंबर ऑफ कॉमर्स की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 60 प्रतिशत से अधिक घरेलू यात्राएं धार्मिक स्थलों की होती हैं। धार्मिक पर्यटन आर्थिक उन्नति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उत्तर प्रदेश का देश ही नहीं, अपितु विश्व में धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। धार्मिक आयोजन कैसे किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनते हैं, इसका साक्षात प्रमाण है प्रयागराज महाकुम्भ। प्रयागराज में चल रहे महाकुम्भ का केवल धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ही महत्व नहीं है, अपितु अर्थव्यवस्था को नई उड़ान देने वाला है। इस महाकुम्भ में विज्ञान, संस्कृति और अध्यात्म का अद्‌भुत संगम दिखाई दे रहा है। पारंपरिक परंपराओं के अस्तित्व से अनुकूलन स्थापित करता विश्व का विशालतम जनसमागम दिव्य, भव्य एवं डिजिटल महाआयोजन के रूप में आधुनिकता की ओर बढ़ चुका है। यूनेस्को द्वारा 2017 में कुम्भ मेले को मानव जाति की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दिए जाने के बाद से यह आयोजन विश्व के लोगों के लिए और आकर्षण का केंद्र बन गया है। लगभग 60 करोड़ श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए समर्पित महाकुम्भ में उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों के कारीगरों से लेकर उद्योगी तक (एक जनपद-एक उत्पाद कार्यक्रम के अंतर्गत) प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़े हैं। सुचारु व्यवस्था चाक-चौबंद करने के लिए 'महाकुम्भ नगर' नाम से नया जिला बनाया गया है। मात्र 45 दिन में 35 देशों के बराबर आबादी आकर्षित करने वाला यह महा आयोजन उद्योगों के लिए दिवाली से कम नहीं है। अकेले 10 हजार करोड़ रुपये के ऑर्डर छोटे कारीगरों और छोटी इकाइयों के पास हैं।

महाकुम्भ में राज्य सरकार ने 7,500 करोड़ रुपये का बजट रखा है। इस वजह से इसके कुल 25 हजार करोड़ रुपये के राजस्व और दो लाख करोड़ रुपये के कारोबार का अनुमान है। इस महाकुम्भ में जूता-चप्पल सिलने वाले कारीगर से लेकर हेलीकॉप्टर चलाने वाली कंपनी तक के लिए कमाई के रास्ते खुले हैं। इसके अतिरिक्त किराने सामान से 4200 करोड़ रुपये, खाद्य तेल से 2500 करोड़, सब्जियों से 2500 करोड़, बिस्तर, गद्दे, चादर, तकिया, कंबल आदि से 1000 करोड़, दूध तथा अन्य डेयरी उत्पाद से 4500 करोड़, हॉस्पिटैलिटी से 2500 करोड़ और अन्य क्षेत्रों में कम से कम 3000 करोड़ रुपये की कमाई होगी।

कन्फेडरेशन ऑफ इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के यूपी प्रमुख महेंद्र गोयल के अनुसार महाकुम्भ के दौरान श्रद्धालुओं की मूलभूत आवश्यकताओं से जुड़ी चीजों से ही 17,500 करोड़ का राजस्व मिलेगा। स्मॉल इंडस्ट्रीज एंड मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के अनुसार पूजा सामग्री, कपड़े, स्मृति चिह्नों की खरीदारी में हस्तशिल्प, रेडीमेड और खाद्य पदार्थों का व्यापार फल-फूल रहा है। इसका लाभ हर जिले को हस्तशिल्पियों को मिल रहा है, तो कपड़े में गौतमबुद्धनगर, कानपुर, गाजियाबाद, बनारस, मिर्जापुर और उन्नाव के कारीगरों व उद्यमियों को सीधा लाभ मिला है।

''इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज सिंघल के अनुसार महाकुम्भ ने हर जिले के लिए रोजगार और आय के रास्ते खोले हैं। होटल, रेस्टोरेंट, खाने-पीने के खोमचे, हवाई यात्रा, रेल और सड़क परिवहन की मांग 100 गुना तक बढ़ेगी। वहीं, निर्माण, सुरक्षा, सफाई व स्वास्थ्य सेवाओं में लगभग 10 हजार श्रमिकों व अकुशल कारीगरों को रोजगार मिला। इनकी सर्वाधिक आपूर्ति गोंडा, देवरिया, बलिया, महाराजगंज, कुशीनगर, कानपुर, कौशांबी, चित्रकूट, महोबा, बांदा, हमीरपुर और गाजीपुर से हो रही है।''

भीड़ प्रबंधन, स्वच्छता, बिजली और पानी की आपूर्ति एवं सुरक्षा व्यवस्था ने गोरखपुर, मेरठ, लखनऊ, सीतापुर, कन्नौज, इटावा और झांसी जिलों को समृद्ध किया है। परिवहन, पर्यटन, पानी, पूजा-पाठ की सामग्री आदि ने मथुरा, वाराणसी, कानपुर, हरदोई, फर्रुखाबाद और बागपत को करोड़ों रुपयों का काम दिया है। प्रदेश के 82 बड़े ब्रांड्स और देश के 178 ब्रांड्स ने भी अस्थायी रूप से 10000 युवाओं को रोजगार रोजगार दिया है। टेंट सिटी ने स्थायी रूप से 3000 से अधिक रोजगार दिए हैं।

महाकुम्भ में आधुनिक तकनीक का प्रयोग केवल भीड़ को सुचारू रूप से प्रबंधित करने और सुरक्षा आदि के लिए ही नहीं किया जा रहा है, बल्कि 11 भाषाओं में एआई संचालित चौटबॉट कुम्भ सहायक महाकुम्भ की समस्त आवश्यक जानकारी भी उपलब्ध करा रहा है। इस कार्य-योजना में अनेक तकनीक विशेषज्ञों की सेवाएं ली जा रही हैं।इससे भविष्य में उत्तर प्रदेश की आय में अत्यधिक वृद्धि होने का अनुमान है।

महाकुम्भ में डिजिटल तकनीक के साथ ही पर्यावरण संरक्षण पर भी जोर है। यहाँ करीब 500 पर्यावरण संरक्षण संस्थाएँ गंगा और कुम्भ की स्वच्छता और निर्मलता बनाए रखने के लिए 'हर घर से एक थैला, एक थाली' द्वारा हरित कुम्भ में लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक कर रही हैं। इसके लिए भी लगभग 3000 लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं।

महाकुम्भ में आधुनिक तकनीक का प्रयोग केवल भीड़ को सुचारू रूप से प्रबंधित करने और सुरक्षा आदि के लिए ही नहीं किया जा रहा है, बल्कि 11 भाषाओं में एआई संचालित चौटबॉट कुम्भ सहायक महाकुम्भ की समस्त आवश्यक जानकारी भी उपलब्ध करा रहा है। इस कार्य-योजना में अनेक तकनीक विशेषज्ञों की सेवाएं ली जा रही हैं। इससे भविष्य में उत्तर प्रदेश की आय में अत्यधिक वृद्धि होने का अनुमान है।

महाकुम्भ को भव्य एवं सुगम बनाने पर सरकार द्वारा लगभग 7500 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। इस निवेश से न

केवल तीर्थाटन और रोजगार सृजन को प्रोत्साहन मिलेगा, अपितु इसके गुणक प्रभाव से उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। प्रयागराज की देश के विभिन्न हिस्सों से कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए ही भारतीय रेलवे ने 3,000 विशेष ट्रेनों को चलाया है। प्रयागराज में गंगा पर छह लेन का ब्रिज, चार लेन का रेलवे ओवरब्रिज बनाया गया है। हल्दिया-वाराणसी जलमार्ग को प्रयागराज तक विस्तार दिया गया है। सरकार द्वारा महाकुम्भ के लिए विभिन्न विकास योजनाओं पर व्यय के साथ बड़े-बड़े उद्योगपति भी अपनी-अपनी वस्तुओं की ब्रांडिंग और मार्केटिंग के लिए 3,000 करोड़ रुपये से अधिक व्यय कर रहे हैं।

प्रयागराज में 45 दिनों से अधिक चलने वाले इस समागम में होने वाली आर्थिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप राज्य सरकार को 25,000 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व प्राप्त होने का अनुमान है। वित्तीय लेनदेन 2.5 लाख करोड़ से अधिक होने की संभावना है।

महाकुम्भ की एक महत्वपूर्ण बात यह भी होगी कि डिजिटल लेनदेन पर बहुत अधिक जोर रहेगा। इस डिजिटल लेनदेन से गैर-संगठित क्षेत्र के लोगों की ऋण क्षमता बढ़ने से बैंकिंग क्षेत्र की व्यवस्था भी मजबूत होगी। होटल, रेस्तरां, परिवहन सेवाएं और टूर प्रदाताओं के साथ-साथ क्षेत्रीय हस्तशिल्प, कला और व्यंजनों के लिए बाजार से जुड़े लाखों लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। इस आयोजन से टैक्सी, ई-रिक्शा, स्ट्रीट वेंडर, शिल्पकार और दुकानदार आदि 45 दिनों में ही आठ महीने से अधिक की आय आसानी से अर्जित कर लेंगे। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग के अनुसार महाकुम्भ की तैयारियों में लगभग 50,000 परिवारों को रोजगार मिल चुका है। लगभग 60 करोड़ श्रद्धालुओं के महाकुम्भ आने? का नया विश्व कीर्तिमान स्थापित हो चुका है, इससे श्रद्धालुओं को अमृत स्नान का पुण्य लाभ तो मिला ही है, उत्तर प्रदेश को आर्थिक आय में वृद्धि का सुअवसर मिला है।

महाकुम्भ में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन से भी राज्य और राष्ट्र की अर्थव्यवस्था, दोनों के राजस्व में वृद्धि होगी। महाकुम्भ के लिए टूर ऑपरेटरों द्वारा अनेक प्रकार के आकर्षक टूर पैकेजों की पेशकश की जा रही है। प्रयागराज आने वाले तीर्थयात्री केवल महाकुम्भ तक ही सीमित नहीं रहेंगे, अपितु आसपास के क्षेत्रों के धार्मिक स्थलों को भी भ्रमण करेंगे। अयोध्या, वाराणसी, मथुरा, चित्रकूट, नैमिषारण्य, आगरा आदि अन्य स्थलों पर घरेलू एवं विदेशी मेहमानों के आने से सरकार को लगभग 200 करोड़ से अधिक आय सृजित होने की संभावना है।

कुम्भ मेले का सर्वाधिक आकर्षण स्थानीय उत्पादों के स्टाल होते हैं। कुम्भ एक ऐसा मंच प्रदान करता है, जिसके माध्यम से स्थानीय उत्पादों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित कर वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भर भारत की दिशा में बढ़ा जा सकता है। इसके लिए बड़े उद्योगों को प्रतिस्पर्धा से स्थानीय उद्योगों को संरक्षित किया जाना आवश्यक है। महाकुम्भ में लोगों द्वारा गरीबों एवं वंचितों को अन्न एवं वस्त्र के दान का भी विशेष महत्व होता है। श्रद्धालुओं द्वारा संतों को भी दान दिया जाता है। भंडारे जैसी गतिविधियां आयोजित होती हैं। इसमें कोई एक व्यक्ति या समाज ही नहीं, अपितु पूरा देश ही एक साथ उठ खड़ा होता है। इस सामाजिक चेतना को भले ही आर्थिक मानकों पर न मापा जा सके, पर ये गतिविधियां भी आर्थिक मापदंड के आधार मजबूत करती हैं।

महाकुम्भ मात्र अध्यात्म-पर्यटन तक सीमित नहीं है, अपितु इस बार का आयोजन अन्य अनेक विषयों के साथ ही वित्तीय साक्षरता का भी कुम्भ है। भारतीय रिजर्व बैंक एक छत के नीचे श्रद्धालुओं को बैंकिंग से लेकर साइबर जागरूकता तथा डिजिटल रुपया तक की जानकारी उपलब्ध करा रहा है। आरबीआई के त्रिवेणी मार्ग पर लगे शिविर में स्थित काउंटरों के माध्यम से श्रद्धालुओं को वित्तीय रूप से साक्षर किया जा रहा है। इसके अंतर्गत डिजिटल पेमेंट, उपभोक्ता संरक्षण, वित्तीय साक्षरता और इन्वेस्टमेंट कॉर्नर के विषय में विस्तृत जानकारी एवं सेवाएं दी जा रही है। इससे बैंकिंग सेवाओं द्वारा ग्राहकों को निवेश के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

महाकुम्भ से देश की जीडीपी में 1 प्रतिशत की वृद्धि होने के साथ ही अन्य दूरगामी आर्थिक प्रभाव होंगे, जो उत्तर प्रदेश को आर्थिकी को एक ट्रिलियन डॉलर वाले लक्ष्य के और निकट लाएंगे। महाकुम्भ में आर्थिक प्रभावों से अधिक सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना का विकास होगा, जो हमें 'वसुधैव कुटुंबकम्' की मूल भावना के और अधिक निकट लाएगा। ◆

मो. : 8957637355

महाकुम्भ प्रयागराज 2025 : अविस्मरणीय, अद्भुत, अकल्पनीय अनुभव

-प्रदीप कुमार गुप्ता
(फीचर लेखक)

तीर्थराज प्रयागराज की धरती पर एक नया इतिहास रचा जा चुका है। महाकुम्भ प्रयागराज 2025 के दिव्य-भव्य और डिजिटल आयोजन ने देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान को नए शिखर पर स्थापित किया है।

''दश तीर्थ सहस्राणि, तिस्रः
कोट्यस्तथा अपराः।
सम आगच्छन्ति माघ्यां तु,
प्रयागे भरतर्षभ।।''

अर्थात संगम में स्नान से करोड़ों तीर्थ के बराबर पुण्य मिल जाता है। जो व्यक्ति प्रयाग में स्नान करता है, वह हर पाप से मुक्त हो जाता है। इसी भाव से 144 वर्षों के बाद बने दुर्लभ संयोग में आयोजित होने वाले महाकुम्भ 2025 में शामिल होने तथा पवित्र त्रिवेणी में स्नान कर अपना जीवन धन्य करने के लिए देश-दुनिया के करोड़ों-करोड़ श्रद्धालु संगमनगरी में उमड़ पड़े हैं। महाकुम्भनगर की ओर आने वाला हर मार्ग श्रद्धालुओं से भर गया है। इस दुर्लभ दैवीय संयोग का साक्षी बनने के लिए पूरा भारत तीर्थराज प्रयागराज में एकत्र हो गया है। श्रद्धालुओं का उत्साह ऐसा है कि 26 जनवरी, 2025 तक प्रयागराज में पवित्र त्रिवेणी में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं द्वारा आस्था और सनातन धर्म में विश्वास की डुबकी लगाई जा चुकी थी।

रंगमंच पर पर्दे के आगे जो आकर्षक तस्वीर दिखाई जाती है, उसके पीछे निर्देशक, पटकथा लेखक, कैमरामैन सहित अनेक गुमनाम नायकों की कड़ी मेहनत छुपी होती है। यही बात महाकुम्भ प्रयागराज के विषय में भी पूरी तरह सत्य है। महाकुम्भ 2025 के दिव्य, भव्य और डिजिटल महोत्सव के पीछे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के अथक प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका है। महाकुम्भ मेला क्षेत्र में गंगा जी तथा यमुना जी में देर तक बाढ़ के कारण तैयारियों के लिए बहुत कम समय मिला था। लेकिन मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन व सतत पर्यवेक्षण से तथा सभी सम्बन्धित विभागों के समन्वय से सारी तैयारियां समय से पूरी कर ली गई। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में प्रयागराज कुम्भ 2019 की सफलता के साथ ही महाकुम्भ की तैयारियां प्रारम्भ कर दी गयी थीं।

13 दिसम्बर, 2024 को प्रधानमंत्री जी ने प्रयागराज में त्रिवेणी पूजन किया तथा महाकुम्भ के दृष्टिगत 5500 करोड़ रुपये लागत की 167 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया। यह परियोजनाएं प्रयागराज के प्राचीन वैभव में वृद्धि करने तथा महाकुम्भ के दौरान देश-विदेश से यहां आने वाले सन्त-महात्माओं, श्रद्धालुओं, स्नानार्थियों एवं पर्यटकों को सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। इनसे महाकुम्भनगर आने वाले सभी लोगों का अनुभव यादगार बना है। महाकुम्भ 2025 के सुव्यवस्थित, सुरक्षित और स्वच्छ आयोजन

के लिए प्रदेश सरकार द्वारा मुख्यमंत्री जी के विजन के अनुरूप सभी कार्य किये गये। मुख्यमंत्री जी का उद्देश्य था कि जो भी श्रद्धालु महाकुम्भ आए, वह भारतीय संस्कृति के इस विराट आयोजन से अभिभूत होकर जाए। इसके लिए सरकार ने पूरे प्रयागराज में अपनी सभी तैयारियां को साकार स्वरूप दिया। प्रधानमंत्री जी ने इसे एकता का महाकुम्भ की संज्ञा दी। इसी के अनुरूप महाकुम्भ 2025 सभी भारतवासियों को एक सूत्र में बांधने का अवसर भी बना। वहीं हमारे मुख्यमंत्री जी ने विश्व के सबसे बड़े आयोजन को 'सनातन गर्व, महाकुम्भ पर्व' कहा। आज यह बात पूर्णतः सत्य सिद्ध हो चुकी है।

प्रयागराज को महाकुम्भ के उत्सव के लिए प्रदेश सरकार ने सजानें-सवांरने में कोई कसर नहीं छोड़ी। नगर के प्रवेश मार्गों पर आकर्षक द्वार बनाए गये। सड़कें चौड़ी की गयी, नये-नये फ्लाईओवर, आर.ओ.बी. व अन्डरपास बनाए गये। प्रयागराज के विस्तृत दायरे में दीवारों, पुलों, मन्दिरों आदि पर भारतीय संस्कृति तथा कुम्भ से जुड़े कथानकों की आकर्षक पेन्टिंग की गयी। प्रयागराज के प्राचीन मन्दिरों का जीर्णाद्धार किया गया तथा अनेक कॉरिडोर बनाए गये, इनमें श्रृंग्वेरपुर, श्री बड़े हनुमान जी मन्दिर, अक्षयवट, सरस्वती कूप, पातालपुरी तथा भारद्वाज कॉरिडोर प्रमुख हैं।

महाकुम्भ मेलाक्षेत्र में भी यह सुनिश्चित किया गया कि संगम में पर्याप्त, स्वच्छ एवं अविरल जल मौजूद रहे, इसके लिए पवित्र नदियों में जीरो लिक्विड डिस्चार्ज की व्यवस्था की गयी। इसके साथ ही, पर्याप्त संख्या में शौचालय की व्यवस्था तथा मेलाक्षेत्र में स्वच्छता के लिए 10 हजार से अधिक स्वच्छताकर्मियों की तैनाती की गयी। मेला क्षेत्र में कहीं भी गन्दगी नहीं दिखाई दी। नदियां भी स्वच्छ व निर्मल बनी रहीं। स्वच्छताकर्मी हमेशा गन्दगी को साफ करने के लिए चौकस और तत्पर रहे। महाकुम्भ को सफल बनाने के लिए केन्द्र व प्रदेश के सभी विभागों के अनेक अधिकारियों, कर्मचारियों, श्रमिकों, सफाई-कर्मियों, पुलिस-प्रशासन, अर्धसैनिक बलों, आपदा प्रबन्धन एवं अग्निशमनकर्मियों ने दिन-रात परिश्रम किया। लोगों के महाकुम्भ में आने तथा उनके सुरक्षित घर वापसी के लिए परिवहन विभाग और रेलवे द्वारा बड़े इन्तजाम किये गये। रेलवे द्वारा एक ही दिन में प्रयागराज से लगभग 330 ट्रेनें भी चलाई गयीं। इसी तरह 10 फरवरी को प्रयागराज एयरपोर्ट से 80 विमानों के आवागमन का विश्व रिकॉर्ड भी बना।

तीर्थराज प्रयागराज की धरती पर एक नया इतिहास रचा जा चुका है। महाकुम्भ प्रयागराज 2025 के दिव्य-भव्य और डिजिटल आयोजन ने देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान को नए शिखर पर स्थापित किया है। ''दश तीर्थ सहस्राणि, तिस्रः कोट्यस्तथा अपराः। सम आगच्छन्ति माघ्यां तु, प्रयागे भरतर्षभ।।'' अर्थात संगम में स्नान से करोड़ों तीर्थ के बराबर पुण्य मिल जाता है। जो व्यक्ति प्रयाग में स्नान करता है, वह हर पाप से मुक्त हो जाता है।

महाकुम्भ विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक समागम है। वर्ष 2025 का यह महाकुम्भ धर्म, ज्ञान, भक्ति और कला का भी दिव्य समागम बना। महाकुम्भ में माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, अनेक राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्रीगण, विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट हस्तियों सहित विशिष्टजनों ने भी पवित्र त्रिवेणी में आस्था और धर्म की डुबकी लगाई। यह महाकुम्भ इस बात का प्रतीक बना कि यदि सद्इच्छा हो, कर्म के प्रति समर्पण हो, मिलकर काम करने का जज्बा हो, साथ ही, अपनी संस्कृति, परम्परा और विरासत के प्रति सम्मान का भाव हो, तो बड़े से बड़ा आयोजन भी सफल बनाया जा सकता है। प्रधानमंत्री जी के रूप में देश को और मुख्यमंत्री जी के रूप में उत्तर प्रदेश को ऐसा ही नेतृत्व मिला है, जिन्होंने 21 वीं सदी में विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और धार्मिक समागम के माध्यम से भारत को विश्व में गौरवान्वित किया है।

गंगा जी का जल वेगवान और चंचल प्रकृति का है, वहीं यमुना जी अत्यंत शांत और गंभीर स्वभाव की हैं। इनके साथ अदृश्य मां सरस्वती का संगम प्रयागराज को विश्व की पवित्रतम भूमि बनाते हैं। त्रिवेणी तट पर आयोजित होने वाले महाकुम्भ में साइबेरियन पक्षियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। साइबेरियन पक्षी दूर से देखने में ऐसे लगते हैं जैसे यमुना जी के शांत, शीतल और स्वच्छ जल में किसी ने अनेक श्वेत मोती बिखेर दिए हों। यह साइबेरियन पक्षी भी महाकुम्भ के भव्य आयोजन के साक्षी हैं। अनेक श्रद्धालु इन पक्षियों को दाना खिलाते थे। त्रिवेणी के जल में इन पक्षियों का कलरव और आसमान में उनकी स्वच्छन्द उड़ान महाकुम्भ को एक अलग ही विशिष्टता प्रदान कर रही थीं।

महाकुम्भ के दौरान लोगों की सुरक्षा, उनके सुगमतापूर्वक आवागमन व स्नान के लिए सभी घाटों की नम्बरिंग की गयी। विद्युत के खम्भों पर संख्या दी गयी, जिससे स्नानार्थियों को अपने सम्बन्धियों से मिलने में बहुत सहूलियत हुई। पाण्टून पुलों के नाम रखे गये तथा उन पर भी संख्या अंकित थी। अलग-अलग सेक्टरों में 10 डिजिटल खोया-पाया केन्द्रों की स्थापना की गयी, जिनके माध्यम से 20 हजार से भी अधिक बिछड़े लोगों को उनके परिजनों से मिलाया गया। इन केन्द्रों में अत्याधुनिक ए.आई. आधारित चेहरा पहचान प्रणाली, मशीन लर्निंग जैसी अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से लोगों को खोजना आसान हुआ।

महाकुम्भ क्षेत्र में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अनेक जनआश्रय पण्डाल बनाए गये। इनमें पेयजल, शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं दी गयी। अरैल स्थित सेक्टर 25 में अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त टेण्ट सिटि बसाई गयी। यहीं डोम सिटि भी बनी, जिससे मेले का 360 डिग्री व्यू लिया जा सकता था। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रमुख अमृत स्नान पर्वों पौष पूर्णिमा, मकर सन्क्रान्ति, मौनी अमावस्या, बसन्त पंचमी, माघी पूर्णिमा तथा महाशिवरात्रि के अवसर पर अखाड़ों, श्रद्धालुओं और स्नानार्थियों पर हेलिकॉप्टर से पुष्पवर्षा कराकर उनका सम्मान किया।

प्रयागराज महाकुम्भ में प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों की प्रदर्शनियों के माध्यम से आने वाले श्रद्धालुओं को जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की गयी। ओ.डी.ओ.पी. के उत्पादों पर आधारित पैवेलियन में सभी जनपदों के विशिष्ट उत्पादों की जानकारी के अलावा उनकी बिक्री भी की गयी। इसी प्रकार खादी एवं ग्रामोद्योग, कौशल विकास मिशन, परिवहन विभाग, आपाताकालीन सेवाएं 112, कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाएं, उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन,

महिला एवं बाल विकास, पशुपालन, राज्य नगरीय विकास अभिकरण, नमामि गंगे, जल जीवन मिशन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कृषि, उद्यान एवं प्रसंस्करण, पर्यटन आदि विभागों के पैवेलियन ने श्रद्धालुओं को योजनाओं की जानकारी दी और उन्हें उत्तर प्रदेश की प्रगति यात्रा से परिचित कराया। संविधान गैलरी, इलाहाबाद म्यूजियम, उत्तर प्रदेश सहित अनेक राज्यों के पैवेलियन, गंगा, यमुना एवं सरस्वती पण्डाल में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, कलाकुम्भ तथा केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा बनाए गये कलाग्राम ने भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं से जनमानस को अवगत कराया। इन्होंने देश की विविध संस्कृति के कलाकारों को एक मंच पर लाकर अपनी प्रतिभा के प्रकटीकरण का अवसर दिया। पूरा महाकुम्भ मेला क्षेत्र तथा प्रयागराज शहर के विभिन्न स्थानों पर ऐसे कार्यक्रमों का लगातार आयोजन हुआ।

महाकुम्भ के सभी सेक्टरों में विभिन्न मार्गों पर आकर्षक द्वार बनाए गये थे। इनमें महाकुम्भ लोगो द्वार, गदा द्वार, कलश द्वार, लक्ष्मी द्वार, 14 रत्नकथा द्वार, नन्दी द्वार, कच्छप द्वार, स्वास्तिक द्वार, डमरू द्वार, ऐरावत द्वार आदि सभी का मन मोह रहे थे। इन द्वारों ने भी लोगों को आपस में मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जगह-जगह भव्य सेल्फी प्वॉइन्ट बने थे, जिन पर लोग अपने मोबाइल कैमरों से फोटो ले रहे थे। ऐसा ही एक खूबसूरत सेल्फी प्वॉइन्ट सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा सेक्टर 02 में काली सड़क पर बनाए गये मीडिया सेन्टर के प्रवेश द्वार के बाहर बनाया गया था। इधर से गुजरने वाले श्रद्धालु इन सेल्फी प्वॉइन्ट के साथ अपनी तस्वीर ले रहे थे। महाकुम्भ का एक प्रमुख आकर्षण डिजिटल महाकुम्भ अनुभूति केन्द्र था। इस अनुभूति केन्द्र ने 10 खण्डों-तीर्थराज प्रयाग की महिमा, नीलकण्ठ ब्रह्माण्ड के रक्षक, समुद्र मन्थन, त्रिवेणी संगम, कुम्भ मेले के अनुष्ठान, कुम्भ विथिका, दिव्य संगम, अखाड़े, साहित्य तथा कुम्भ दर्शन के माध्यम से महाकुम्भ से जुड़ी पूरी कथा से आगन्तुकों को परिचित कराया। राष्ट्रपति जी सहित अनेक विशिष्ट अतिथियों और लोगों ने इसका भ्रमण किया तथा इसकी सराहना की। प्रतिदिन सांय बोटक्लब के पास यमुना जी में आकर्षक लेजर शो का आयोजन किया गया, जिसका लाभ भी लाखों-करोड़ों श्रद्धालुओं ने उठाया।

महाकुम्भ प्रयागराज 2025 का साक्षी बनने वालें सभी सन्त-महात्माओं, श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए यह उनके जीवन का एक यादगार अनुभव बन गया है, जिसे वह कभी भुला नहीं पाएंगे। पूरे 45 दिनों तक चलने वाले इस पर्व के लिए त्रिवेणी तट पर अस्थायी तंबुओं की नगरी बसाना आसान कार्य नहीं था।

अब जबकि महाकुम्भ तेजी से अपनी पूर्णता की ओर अग्रसर है, सभी लोग भावुक हैं, हर आंख में अनन्त यादों की अश्रुधारा है। साधु-सन्त, अखाड़ें, कल्पवासी हृदय में पवित्र भावों से भरे हुए प्रयागराज से विदा ले रहे हैं। महाकुम्भ 2025 की सफलता वर्ष 2019 के प्रयागराज कुम्भ की सफलता से जुड़ी हुई है। दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक समागम प्रयागराज कुम्भ 2019 का दिव्य व भव्य आयोजन कराकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने महाकुम्भ 2025 के और भी भव्य और दिव्य उत्सव की नींव रख दी थी। इसी के साथ ही, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अभी से वर्ष 2031 में होने वाले प्रयागराज कुंभ के लिए अनेक नई योजनाओं की शुरुआत कर दी है।

महाकुम्भ प्रयागराज 2025 का साक्षी बनने वालें सभी सन्त-महात्माओं, श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए यह उनके जीवन का एक यादगार अनुभव बन गया है, जिसे वह कभी भुला नहीं पाएंगे। पूरे 45 दिनों तक चलने वाले इस पर्व के लिए त्रिवेणी तट पर अस्थायी तंबुओं की नगरी बसाना आसान कार्य नहीं था। इस नगरी में जीवन की हर मूलभूत सुविधा की व्यवस्था करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार ने दिन-रात एक कर दिया। रेत पर आसानी से आवागमन के लिए 450 किलोमीटर से अधिक चकर्ड प्लेटें बिछायी गयीं। 04 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में बसें मेले में पेयजल सहित अन्य कार्यों हेतु पाइपलाइन बिछायी

गयी। विद्युत की व्यवस्था की गयी। पूरे मेला क्षेत्र में निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की गयी। रात्रि में महाकुम्भनगर की रोशनी से प्रयागराज का आकाष जगमगा रहा था। इसी प्रकार अन्य कार्यों को पूर्ण किया गया।

महाकुम्भ का उत्सव सदियों पुरानी भारतीय विरासत है, जिसमें लोग स्वतःस्फूर्त भाव से प्रतिभाग करते हैं। सरकार इसमें श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुविधा तथा सुगमता के लिए सुविधाप्रदाता की भूमिका में रहती है। वर्ष 2019 के प्रयागराज कुम्भ तथा वर्ष 2025 के प्रयागराज महाकुम्भ के दिव्य, भव्य आयोजन के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा किये गये भगीरथ प्रयासों से पूरा विश्व आश्चर्यचकित और अचम्भित है। आज दुनिया सनातन धर्म की महिमा, विशालता, समृद्ध भारतीय विरासत और परम्पराओं से प्रेरणा प्राप्त कर रही है। पूरे देश को एकता का सन्देश देकर यह महाकुम्भ 2025 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के प्रधानमंत्री जी के मन्त्र को भी साकार कर रहा है।

हम सभी सौभाग्यशाली हैं, जो महाकुम्भ के उत्सव में भागीदार बने हैं। 'सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः', महाकुम्भ का यह पर्व हमारे देश को समृद्धि की नई ऊंचाईयां प्रदान करे, महाकुम्भ में ज्ञान, भक्ति, अध्यात्म की त्रिवेणी के मन्थन से विश्वशान्ति का अमृत निकले, गंगा मैया से यही कामना है। ◆

मो. : 7705800992

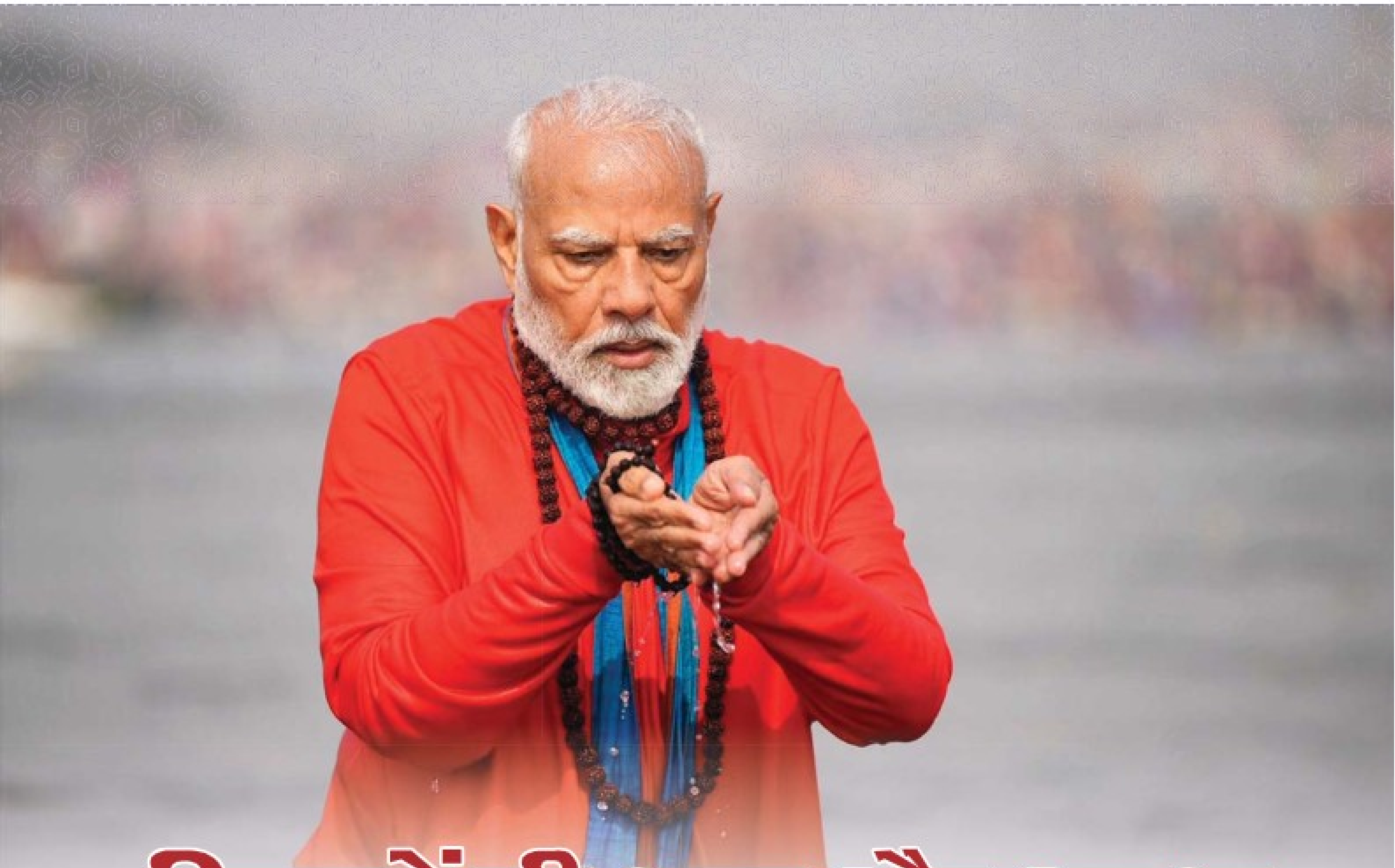

दिग्गजों की श्रद्धा और आस्था

-उपमा शुक्ला
(लेखिका)

भारत की आध्यात्मिक समृद्धि और सांस्कृतिक शक्ति का सबसे भव्य उत्सव, महाकुम्भ 2025, प्रयागराज में अपनी पूर्ण भव्यता के साथ जारी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 2.0 कार्यकाल में इस आयोजन को एक नए आयाम पर पहुंचाया गया है, जहां आस्था, परंपरा और आधुनिक व्यवस्थाओं का अभूतपूर्व समन्वय देखने को मिल रहा है। त्रिवेणी संगम के तट पर करोड़ों श्रद्धालु पवित्र स्नान कर अपनी आस्था प्रकट कर रहे हैं, वहीं साधु-संतों की तपस्या और प्रवचनों से ज्ञान और भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित हो रही है। यह आयोजन केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी भारत की एकता, समरसता और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक बन चुका है। महाकुम्भ के इस विराट स्वरूप में 'नए भारत' का दर्शन स्पष्ट रूप से झलकता है, जो अपनी प्राचीन परंपराओं को सहेजते हुए आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहा है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि नए भारत के उदय का प्रतीक भी है, जहां आध्यात्मिकता, संस्कृति और आधुनिक व्यवस्थाओं का संगम देखा जा सकता है। इस भव्य आयोजन में जब फिल्मी सितारों से लेकर राजनीतिक गलियारों तक के दिग्गज, देश-विदेश के राजनयिक और श्रद्धालु संगम स्नान कर रहे हैं, तो उनकी अनुभूतियाँ भी इस अलौकिक आयोजन की दिव्यता को और भी विशेष बना रही हैं।

राजनीतिक हस्तियों की श्रद्धा और संदेश

महाकुम्भ 2025 में देश के शीर्ष नेताओं ने संगम में आस्था की डुबकी लगाई और अपनी आध्यात्मिक भावनाएं व्यक्त कीं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने प्रयागराज पहुंचकर पवित्र त्रिवेणी संगम में स्नान किया। उन्होंने लेटे हनुमान जी और अक्षय

वट के दर्शन किए और कहा, ''संगम में स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह श्रद्धा और विश्वास का विशाल संगम, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक अद्भुत और जीवंत प्रतीक है।'' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 फरवरी को त्रिवेणी संगम में स्नान किया। वह इस दौरान रुद्राक्ष की माला से जाप करते हुए नजर आए और नाव पर बैठकर मेले का जायजा लिया। उन्होंने संत समाज से भेंट करते हुए कहा, ''महाकुम्भ भारत की सनातन परंपराओं का एक भव्य महोत्सव है, जहां देश के कोने-कोने से श्रद्धालु आकर अपनी भक्ति प्रकट करते हैं। यह हमारी सांस्कृतिक विरासत की पहचान है।'' उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी पूरी कैबिनेट के साथ संगम में स्नान किया। स्नान के बाद उन्होंने कहा, ''महाकुम्भ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा का गौरवशाली प्रतीक है। यह दुनिया को शांति और सद्भाव का संदेश देता है।'' उन्होंने दावा किया कि 12 फरवरी तक 50 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में स्नान किया, जो उत्तर प्रदेश की नई पहचान को दर्शाता है। महाकुम्भ के इस महास्नान में कई केंद्रीय मंत्री, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और अन्य प्रमुख हस्तियां भी शामिल हुईं। गृहमंत्री अमित शाह ने स्नान करने के बाद कहा, ''महाकुम्भ हमारी सांस्कृतिक धरोहर का सबसे बड़ा उत्सव है। यहाँ आकर हम अपनी जड़ों से जुड़ते हैं और आध्यात्मिक शांति प्राप्त करते हैं। यह आयोजन भारतीय संस्कृति की जीवंतता को दर्शाता है।'' केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी संगम में स्नान किया और कहा, ''मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि परमात्मा ने मुझे यह अवसर प्रदान किया। आज प्रयागराज में संगम स्नान करने के बाद मैं स्वयं को अत्यंत कृतार्थ महसूस कर रहा हूं। यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीयता, सांस्कृतिक गौरव और सनातन धर्म की आध्यात्मिक अनुभूति का पर्व है, जो प्राचीन वैदिक खगोलीय घटना पर आधारित है।'' उनके साथ राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी समेत कई नेता उपस्थित रहे। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने संगम स्नान के बाद कहा, ''महाकुम्भ केवल भारत की पहचान नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण देश की

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी पूरी कैबिनेट के साथ संगम में स्नान किया। स्नान के बाद उन्होंने कहा, ''महाकुम्भ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा का गौरवशाली प्रतीक है। यह दुनिया को शांति और सद्भाव का संदेश देता है।''

सांस्कृतिक एकता का द्योतक है। यह आयोजन भारत की विविधता में एकता को प्रदर्शित करता है।'' झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास, मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, नितिन गडकरी, और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सहित कई अन्य मंत्रियों और गणमान्य व्यक्तियों ने भी इस पावन अवसर पर संगम में स्नान किया।

बॉलीवुड सितारों की आस्था और अनुभव

महाकुम्भ में बॉलीवुड सितारों की भी बड़ी भागीदारी देखने को मिली। अभिनेता अक्षय कुमार ने त्रिवेणी संगम में स्नान करने के बाद कहा, ''यह अनुभव अविस्मरणीय है। यहां आकर मन को असीम शांति और नई ऊर्जा मिलती है। हमारी संस्कृति इतनी समृद्ध और गहरी है कि इसे पूरी दुनिया को अपनाना चाहिए।'' अभिनेता सुनील शेट्टी ने भी गंगा स्नान के बाद अपनी अनुभूति साझा की, ''एक कहावत है न कि गंगा नहा लिया, वाकई में आज मैंने इसे अनुभव किया। यह सच में आत्मिक और मानसिक शुद्धि का पल है।'' बॉलीवुड अभिनेत्री ईशा गुप्ता ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए कहा, मैं यहां एक सनातनी बनकर आई हूं। महाकुम्भ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि हमारी सनातन परंपरा की आत्मा है।'' वहीं अभिनेत्री कंगना रनौत ने महाकुम्भ के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, ''महाकुम्भ भारत की आत्मा है। यह हमारे पूर्वजों द्वारा दी गई अमूल्य धरोहर है। यहां आकर मैं गर्व महसूस कर रही हूं। यह अनुभव मेरे जीवन का एक यादगार क्षण रहेगा।'' बॉलीवुड के सुपरस्टार अजय देवगन और सनी देओल ने भी त्रिवेणी संगम में स्नान किया। अजय देवगन ने कहा, ''महाकुम्भ की दिव्यता अद्भुत है। यहां आकर जो आध्यात्मिक अनुभूति होती है, उसे शब्दों में बयां करना कठिन है।'' वहीं सनी देओल ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा, ''यह केवल आस्था का पर्व नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत का उत्सव है। यहां की ऊर्जा को महसूस कर मैं अभिभूत हूं।'' इसके अलावा अनुपम खेर, विवेक अग्निहोत्री, हेमा मालिनी, मिथुन चक्रवर्ती और जैकी श्रॉफ जैसी हस्तियों ने भी महाकुम्भ में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और इसे भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर बताया।

विदेशी मेहमानों की भावनाएं

महाकुम्भ 2025 न केवल भारतीयों के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आकर्षण का केंद्र बन गया है। यह आयोजन अपनी दिव्यता, भव्यता और धार्मिक आस्था के कारण न केवल भारतीय श्रद्धालुओं को, बल्कि दुनियाभर के लोगों को भी अपनी ओर खींच रहा है। महाकुम्भ का यह आयोजन वैश्विक स्तर पर भारत की आध्यात्मिक शक्ति और सांस्कृतिक विरासत को

उजागर करने वाला बन चुका है। इस बार महाकुम्भ के विशेष आयोजन में 1 फरवरी 2025 को 118 सदस्यीय विदेशी प्रतिनिधिमंडल संगम स्नान के लिए प्रयागराज पहुंचा। इस प्रतिनिधिमंडल में 77 देशों के राजनयिक, मिशन प्रमुख और उनके परिवारजन शामिल थे। उन्होंने महाकुम्भ के इस आध्यात्मिक आयोजन का अनुभव किया और भारतीय संस्कृति की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके अलावा अन्य विदेशी मेहमानों ने महाकुम्भ को न केवल एक धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन माना, बल्कि इसे विश्व की अनूठी सांस्कृतिक धरोहर भी बताया। इस महासंगम में शामिल होने वाले राजदूतों और उनके परिवारों ने भारतीय संस्कृति के साथ अपने आध्यात्मिक अनुभव को साझा किया। कोलंबिया के राजदूत विक्टर चावेरी के लिए यह अनुभव अविस्मरणीय रहा। उन्होंने महाकुम्भ को अपने जीवन की सबसे दिव्य अनुभूति बताते हुए कहा, ''मैंने दुनियाभर में कई धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव देखे हैं, लेकिन महाकुम्भ जैसा कोई नहीं। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उत्थान का पर्व है। हर व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार इस महासंगम का हिस्सा जरूर बनना चाहिए।'' उन्होंने भारतीय संस्कृति की समृद्धि, इसकी आध्यात्मिकता और इसके शांति एवं मानवता के संदेश को विशेष रूप से सराहा। रूस के राजदूत की पत्नी डायना ने भारतीय विदेश मंत्रालय और उत्तर प्रदेश सरकार का आभार व्यक्त किया। उन्होंने संगम स्नान के अनुभव को आत्मिक शांति से भरपूर बताते हुए कहा, ''इस दिव्य वातावरण में डुबकी लगाते ही एक अलग ऊर्जा और सकारात्मकता महसूस हुई। यह सिर्फ शरीर को पवित्र करने वाला स्नान नहीं, बल्कि मन और आत्मा को शुद्ध करने वाला अनुभव है।'' उन्होंने आयोजन की सुरक्षा व्यवस्था, जल की स्वच्छता और संपूर्ण प्रबंधन की प्रशंसा करते हुए इसे विश्व स्तरीय आयोजन बताया। स्लोवाकिया के राजदूत रॉबर्ट ने कहा कि उन्होंने दुनिया में ऐसा अद्भुत आयोजन पहले कभी नहीं देखा। उन्होंने महाकुम्भ को शांति और एकता का प्रतीक बताते हुए कहा, ''यह दुनिया में सबसे बड़ा आध्यात्मिक उत्सव है, जो हमें यह सिखाता है कि हम सब एक ही ब्रह्मांड के हिस्से हैं। इस आयोजन का संदेश पूरी दुनिया तक पहुंचना चाहिए।'' इक्वाडोर के राजदूत फर्नांदो ने अपने बचपन के सपने के पूरे होने की खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा, ''बचपन से ही गंगा में स्नान करने की इच्छा थी और महाकुम्भ ने इस सपने को साकार कर दिया। यहां आकर मैं न केवल गंगा की शुद्धता और शक्ति को महसूस कर रहा हूं, बल्कि भारतीय संस्कृति, योग, आयुर्वेद और ध्यान को भी गहराई से समझने का अवसर मिला।'' अमेरिका से आए एक श्रद्धालु ने कहा कि उन्होंने कुंभ मेले के बारे में सुना तो बहुत था, लेकिन इसे अनुभव करना एक अलग ही बात है। उन्होंने कहा, ''यह दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक आयोजन है। मैं

पहले भी भारत आ चुका हूं, लेकिन महाकुम्भ में आना मेरे जीवन का सबसे अद्‌भुत अनुभव है।'' ब्रिटेन से आए एक पर्यटक ने यहां की भव्यता, श्रद्धा और समर्पण को देखकर आश्चर्य प्रकट किया। उन्होंने कहा, ''महाकुम्भ केवल भारत का नहीं, बल्कि पूरी दुनिया का है। यहाँ का माहौल, आस्था, समर्पण और सकारात्मक ऊर्जा अद्‌भुत है। यह एक ऐसा उत्सव है, जिसे हर किसी को अपनी जिंदगी में कम से कम एक बार जरूर देखना चाहिए।'' महाकुम्भ में विदेशी मेहमानों की बढ़ती भागीदारी को लेकर भारतीय नेताओं ने इसे भारत की वैश्विक सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बताया। वहीं भाजपा नेता और विधायक सिद्धार्थ नाथ सिंह ने कहा कि विदेश मंत्रालय के सहयोग से बड़ी संख्या में विदेशी मेहमान महाकुम्भ में हिस्सा ले रहे हैं, जिससे भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल रही है।

संन्यासियों और अखाड़ों की भूमिका

इस आयोजन में अखाड़ों की भूमिका केवल धर्म प्रचार तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह सनातन संस्कृति के संरक्षण और प्रसार का भी केंद्र बन गई है। जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी ने महाकुम्भ के आध्यात्मिक महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, ''महाकुम्भ आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की ओर बढ़ने का मार्ग है। यह हमें हमारे मूल संस्कारों से जोड़ता है और जीवन में सत्य, तप और धर्म का महत्व समझाता है।'' उन्होंने कहा कि यह मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धि का एक पवित्र अवसर है, जहां साधु-संत समाज को जीवन की वास्तविकता और मोक्ष की ओर अग्रसर होने की शिक्षा देते हैं। निरंजनी अखाड़े के महंत ने महाकुम्भ को एकजुटता, ध्यान और साधना का संगम बताया। उन्होंने कहा, ''महाकुम्भ में आकर जीवन को एक नई दिशा मिलती है। यह केवल पवित्र स्नान का अवसर नहीं, बल्कि यह आत्ममंथन और ईश्वरीय अनुभूति का माध्यम भी है। यहाँ साधु-संतों के साथ रहने से एक अलग ऊर्जा प्राप्त होती है, जो जीवन में सकारात्मकता लाती है।'' महाकुम्भ में विभिन्न शैव, वैष्णव और उदासीन अखाड़े अपनी पारंपरिक धार्मिक परंपराओं का पालन करते हुए आध्यात्मिक सत्संग, प्रवचन और अनुष्ठानों का आयोजन करते हैं। अवधूत अखाड़ा, दशनामी संप्रदाय और महानिर्वाणी अखाड़ा जैसे संस्थान अपने अनुयायियों को साधना और ध्यान का मार्ग दिखाते हैं।

सुरक्षा और स्वच्छता की विशेष व्यवस्था

इस बार के महाकुम्भ में सुरक्षा और स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। करोड़ों श्रद्धालुओं के आगमन को ध्यान में रखते हुए सरकार ने अत्याधुनिक सुरक्षा उपाय किए हैं। स्नान घाटों पर एनडीआरएफ, एसएसबी और जल पुलिस की तैनाती की गई है। ड्रोन कैमरों और सीसीटीवी नेटवर्क के माध्यम से पूरे मेला क्षेत्र की निगरानी की जा रही है महिला सुरक्षा बल, विशेष पुलिस दस्ते और हेल्प डेस्क बनाए गए हैं ताकि किसी भी आपात स्थिति में श्रद्धालुओं को सहायता मिल सके। अखाड़ों की विशेष सुरक्षा व्यवस्था के तहत प्रमुख संतों और धार्मिक नेताओं की सुरक्षा के लिए विशेष पुलिस बल तैनात किया गया है।

स्वच्छता और पर्यावरण सुरक्षा

मेला क्षेत्र में जैविक कचरा प्रबंधन प्रणाली लागू की गई है। हरिद्वार की तर्ज पर प्रयागराज में भी गंगा को स्वच्छ बनाए रखने के लिए विशेष टीमें कार्यरत हैं। मोबाइल टॉयलेट, कूड़ेदान और साफ-सफाई कर्मचारियों की विशेष तैनाती की गई है। श्रद्धालुओं को प्लास्टिक का उपयोग न करने और पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। महाकुम्भ 2025 यह सिद्ध कर रहा है कि यह केवल भारत का नहीं, बल्कि पूरी दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महोत्सव है। संतों और अखाड़ों की उपस्थिति, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भव्यता और सुरक्षा व्यवस्था की व्यापकता इस आयोजन को ऐतिहासिक बना रही है। यह आयोजन हमें हमारी आध्यात्मिक विरासत की जड़ों से जोड़ता है, साथ ही यह यह दर्शाता है कि कैसे भारतीय संस्कृति और परंपराएँ पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकती हैं। महाकुम्भ 2025 भारत की सनातन परंपरा, आध्यात्मिक ऊर्जा और सामाजिक समरसता का एक दिव्य संगम है, जिसमें हर कोई अपने हिस्से की आस्था, श्रद्धा और भक्ति लेकर शामिल हो रहा है। ◆

मो. : 8924856004

महाकुम्भ जिसने तोड़े सारे रिकॉर्ड

-डॉ. अजय कुमार मिश्रा
(पत्रकार)

भारतीय संस्कृति और विरासत की पहचान सर्वविदित है और इसका इतिहास भी अनंत है। मानव जीवन की समृद्धि और एकता के पीछे आध्यात्म और संस्कृति का व्यापक योगदान है यह धर्म ही है जो समृद्धि के साथ-साथ लोगों को न केवल जोड़े रहता है बल्कि अनैतिक कर्मों से भी दूर रखकर सामाजिकता की विचार/भावना को मजबूत करने के साथ-साथ सर्वजन के हितों की सुरक्षा भी प्रदान करता है। उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ इस बात को भलीभांति जानते है की मानव का विकास आध्यात्म, धर्म और संस्कृति के बिना असम्भव है तभी तो आधुनिकता की कई विकृत प्रणालियों से लोगों को अपने इतिहास तक लौटने और जीवन के मूल्यों को समझाने के उद्देश्य से धर्म के मार्ग पर लगातार कार्य कर रहे है। जिसका परिणाम सभी के सामने है आज महाकुम्भ की गूंज दुनियां के प्रत्येक कोने में मौजूद है सभी लोग देशों की मानव द्वारा निर्धारित सीमा को पार करके कुम्भ में डुबकी लगाना चाह रहें है। 144 वर्षों के पश्चात् आयोजित इस महाकुम्भ की गूंज इतनी बृहद है की इतिहास इसे सुनहरें अक्षरों में लिखने में न केवल जुट गया है बल्कि हिन्दुत्ववादी लुप्त होती संस्कृति को महाकुम्भ के जल ने सभी को सिंचित कर नव जीवन प्रदान किया है और यह दर्शा भी दिया है की नेतृत्वकर्ता योगी आदित्यनाथ में वह सभी शक्तियां विद्यमान है जिससे वो हमारी विरासत, संस्कृति और सभ्यता को बड़े स्तर पर ले जाने की कठिन यात्रा को पूरी करके आधुनिक विकास में प्रदेश को प्रथम करने को संकल्पित है।

महाकुम्भ की शुरुआत 13 जनवरी, 2025 से होकर 26 फरवरी, 2025 तक चलनी है यह योगी का ही जादू है जिसकी आज चर्चा दुनियाभर में हो रही है। यह न केवल शाश्वत और चौतन्य उर्जा का दिव्य स्रोत है बल्कि महाकुम्भ एकजुटता और मानव जीवन के कल्याण का श्रेष्ठतम साधनों में से एक प्रमुख साधन है। भारतेंदु हरिश्चंद जी ने कहा था कि भारत देश के लोग

रेलगाड़ी के डिब्बे की तरह है जिन्हें जितना मजबूत इंजन मिलेगा वहां उतने अधिक लोग पीछे हो लेगे। इंजन के रूप में योगी आदित्य नाथ ने अपनी कार्यकुशलता और दैविक शक्तियों का परिचय देकर महाकुम्भ को दिव्यता के साथ एकता और अमर कर देने वाला कार्यक्रम बना दिया है जिसकी चर्चा चारों तरफ हो रही है। स्वयं उत्तर प्रदेश के मुखियां ने यह अनुमान लगाया था की 45 करोड़ श्रद्धालु महाकुम्भ में स्नान करेगे। उनके अनुमान से कही अधिक महाकुम्भ के समापन के 12 दिन पूर्व ही यह आयोजन विश्व का पहला आयोजन बन गया जहाँ 50.11 करोड़ से अधिक (14 फरवरी, 2025 तक) लोग दिव्य स्नान करके प्रत्यक्ष सहभागी बन गए। यह उपलब्धि असामान्य इसलिए भी है की चीन और भारत को छोड़ इतनी जनसँख्या दुनिया के किसी अन्य देश की नहीं है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश सरकार के मुखियां योगी आदित्यनाथ के लिए सभी सहयोग के द्वार लगातार खोले रखा हुआ है जिसकी वजह से इतने बड़े आयोजन को मूर्त स्वरुप दिया जा रहा है और जन उत्साह इस बात का साक्षी है कि लोगों ने इस महाकुम्भ के आयोजन को दिल से स्वीकार करके अपनी भागीदारी लगातार पूरा कर रहें है।

किसी भी आयोजन को सफल बनाने के पीछे जहाँ सामूहिक प्रयास होता है वही अनुभव एवं सुनिश्चित क्रिया प्रणाली आयोजन को सफल बनाने में सहायक होती है। महाकुम्भ के महायोजन से सम्बंधित छोटे बड़े सभी बिन्दुओं को न केवल स्वयं योगी आदित्यनाथ ने ध्यान में रखकर निर्देश

सुविधा प्रदान कर रहें है बल्कि महाकुम्भ की साफ सफाई, सुरक्षा को उच्चकोटि का बनाये रखा है। भारी संख्या में सुरक्षाकर्मी, आधुनिक तकनीकी का प्रयोग, स्थल का सेक्टरों में विभाजिकरण, प्रकाश की व्यवस्था, आकस्मिक व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधाएँ, रहने की व्यवस्था के साथ-साथ निःशुल्क खाने-पिने और इलाज की व्यवस्था ने इस महाकुम्भ को दिव्यकोटि का बना दिया है। यही वजह है की भारी संख्या में श्रद्धालु दिव्य स्नान में अपने आप को अर्पित करने के लिए लगातार प्रयागराज पहुँच रहें है। यह योगी के नेतृत्व की तत्परता है की महज 30 दिनों के अन्दर महाकुम्भ से 11 हजार टन गंदगियों की सफाई हुई है। आधुनिक मशीने लगातार गंगा से गंदगियों की सफाई में लगी हुई है। इतने बड़े स्तर के आयोजन में सरकार द्वारा महज 1500 करोड़ कुम्भ में खर्च किया गया है जबकि 2500 करोड़ प्रयागराज के इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए खर्च किया गया है। इस बड़े आयोजन का लाभ यह भी है की 3 लाख करोड़ टूरिस्म और ट्रेड अर्थव्यवस्था से भी जुड़ेगा। इस लेख को लिखे जाने तक

दिया बल्कि समय-समय पर वार रूम में डटे रहे और आवश्यक फेर बदल करके लोगों को हर सम्भव सुविधा प्रदान कराने की अपनी तत्परता को प्रदर्शित भी किया है। केंद्र और राज्य सरकार ने जहाँ यातायात के सभी संसाधनों को न केवल निःशुल्क

अभी भी 12 दिन महाकुम्भ का आयोजन के शेष है जिसमे भारी संख्या में श्रद्धालुओं के आने की व्यापक सम्भावना है। यह महाकुम्भ महज इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है की ऐतिहासिक रूप से भारी संख्या में लोगों ने दिव्य स्नान किया है बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण है की आज की नयी युवा पीढ़ी और आधुनिकता और बाजारवाद से घिरें लोगों में भी सनातन संस्कृति ने अपनी उपस्थिति का एहसास कराकर के उन्हें नई दिशा और सनातन की मजबूत विचारधारा का पुनः एहसास कराया है।

आयोजन को मुख्यमंत्री योगी की दूरदर्शिता ने इसका व्यापक परिचय दुनियाभर के लोगों से कराया है। कोई भी देश शेष नहीं है जहाँ से कोई न कोई आकर स्नान न किया हो। यह महज एक आयोजित कार्यक्रम नहीं है बल्कि अपनी संस्कृति और विरासत का परिचय आधुनिक विचारधारा और तकनिकी से भी कराना है और यह एहसास दिलाना है की हमारी संस्कृति दुनियां में सबसे सरल और जन उपयोगी क्यों है। हमारी विचारधारा, हमारी विरासत, हमारी सभ्यता, हमारी क्रिया प्रणाली, त्याग की भावना,

उत्तर प्रदेश के मुखियां ने अपने कार्यकाल में एक दो नहीं अनेकों ऐतिहासिक और जनहित के कार्य किये है जो लोगों को हमेसा याद रहेगे पर उन सभी कार्यों में महाकुम्भ का यह आयोजन सर्वोपरि स्थान पर विद्यमान दिखाई देता है। सनातनधर्म की ऐतिहासिक और अनंतकाल से चल रही महाकुम्भ के

और सामाजिक स्वरुप इस तरह से पूर्वनिर्मित है जिसमे सभी के हितों की रक्षा करना शामिल है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उनकी टीम के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति जिसने भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस महाकुम्भ के आयोजन में अपनी भूमिका का निर्वहन किया है वह निसंदेह धन्यवाद का भागीदार है

जिसकी वजह से हमारी संस्कृति पुनः दुनियां के सामने है और सभी यह सोचने पर विवश है की भारत वास्तव में श्रेष्ठ है।

देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश सरकार के मुखियां योगी आदित्यनाथ के लिए सभी सहयोग के द्वार लगातार खोले रखा हुआ है जिसकी वजह से इतने बड़े आयोजन को मूर्त स्वरुप दिया जा रहा है और जन उत्साह इस बात का साक्षी है कि लोगों ने इस महाकुम्भ के आयोजन को दिल से स्वीकार करके अपनी भागीदारी लगातार पूरा कर रहें है। यदि इसे एकता का महाकुम्भ कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि कई विचारों और कार्यों पर विभाजीत हिन्दू धर्म के लोग पुनः मोदी और योगी के मार्गदर्शन की वजह से न केवल एकजूट हो रहे है बल्कि सम्मान और परिहित की विचारधारा का पुनर्जन्म सभी के मन मस्तिष्क में हो रहा है जहाँ आधुनिक लालच और स्वयं लाभ की भावना से लोगों को दूर होकर आगे बढ़ने में भी मदद मिलेगी। इस कलयुग में जहाँ राम नाम एक आधार है वही इस तरह का भव्य आयोजन मानव जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने में सफल होता है। इस महाकुम्भ के प्रचार-प्रसार और आयोजन से करोड़ों लोगों को एक सुंदर और दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है की वह महाकुम्भ में शामिल होकर अपने पापों की मुक्ति के साथ-साथ ईश्वर की मौजूदगी का एहसास स्वयं कर सकें। और इस बात का सीधा श्रेय उत्तर प्रदेश के मुखियां को जाता है जिन्होंने महाकुम्भ के जरिये एकता और धर्म का एहसास सभी को कराया है। ◆

मो. : 9335226715

एकता - समरसता का महाकुम्भ

-रंजना मिश्रा
(लेखिका)

2025 में प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ मेला अब इतिहास में एक सुनहरे अध्याय के रूप में अंकित हो चुका है। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चले इस 45 दिवसीय महापर्व में लगभग 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र त्रिवेणी गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम पर स्नान कर अपने जीवन में आध्यात्मिक शुद्धता एवं नवजीवन का अद्वितीय अनुभव प्राप्त किया। यह महाकुम्भ मेला न केवल धार्मिक आस्था का उत्सव था, बल्कि इसे आधुनिक तकनीकी नवाचार, उन्नत प्रशासनिक तैयारियों, स्मार्ट परिवहन व्यवस्था, उच्च स्तरीय सुरक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण के साथ एक आदर्श आयोजन में परिवर्तित किया गया था। महाकुम्भ 2025 के समापन के बाद हमें यह संदेश मिला कि जब हम अपनी प्राचीन परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ते हैं, तो हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं और समाज में एकता, सहिष्णुता एवं विकास की नई दिशा स्थापित कर सकते हैं। महाकुम्भ 2025 के आयोजन की शुरुआत से ही श्रद्धालुओं ने एक अद्वितीय आध्यात्मिक यात्रा पर कदम रखा। भारतीय परंपरा में महाकुम्भ मेला सदियों पुराना पर्व रहा है, जिसमें पवित्र जल में स्नान करने के महत्व को अत्यंत मान्यता दी जाती है। श्रद्धालु मानते हैं कि इस पवित्र जल में डुबकी लगाने से न केवल शारीरिक शुद्धि होती है, बल्कि मानसिक, आत्मिक और भावनात्मक रूप से भी व्यक्ति पुनर्जीवित होता है। महाकुम्भ 2025 में पवित्र जल में स्नान करने का यह अनूठा अनुभव, जिसमें लाखों लोग एक साथ अपने पापों से मुक्ति पाने का प्रयास

करते हैं, भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिकता की गहराई को दर्शाता है। प्रयागराज की नगरी, जिसे सदियों से पवित्र माना जाता रहा है, उसने इस बार भी श्रद्धालुओं के दिलों में आस्था की नई ज्योति प्रज्वलित कर दी है। यहाँ के गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम का श्य इतना मनमोहक था कि हर व्यक्ति अपने भीतर एक नई ऊर्जा का संचार महसूस कर रहा था।

इस महाकुम्भ मेला की सफलता का मुख्य आधार प्रयागराज प्रशासन की अति उत्कृष्ट तैयारियाँ थीं। प्रशासन ने महाकुम्भ के लिए 4000 हेक्टेयर (लगभग 40 वर्ग किमी) में फैली एक अस्थायी नगरी का निर्माण किया, जिसे 25 सेक्टर्स में बाँटा गया था। इस नगरी में 150,000 टेंट्स की व्यवस्था की गई, जिससे लाखों श्रद्धालुओं को आरामदायक और स्वच्छ आवास प्रदान किया जा सका। प्रशासन ने बिजली, पानी, संचार टावर, स्वच्छता और 11 अस्थायी अस्पतालों जैसी आधुनिक सुविधाएँ सुनिश्चित कीं, ताकि किसी भी आपातकालीन स्थिति में तुरंत सहायता उपलब्ध हो सके। 450 किलोमीटर से अधिक नई सड़कों का निर्माण किया गया और रेलवे एवं बस सेवाओं में भी सुधार के द्वारा श्रद्धालुओं की यात्रा को सुरक्षित और सुगम बनाया गया। भारतीय रेलवे ने महाकुम्भ के लिए विशेष ट्रेनें, अतिरिक्त कोच और मेमू यानी मेनलाइन इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट ट्रेनें चलायीं, जिससे देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े। महाकुम्भ 2025 में परिवहन व्यवस्था के लिए प्रशासन ने अत्याधुनिक स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम का भी प्रयोग किया। एआई आधारित कैमरों और डिजिटल निगरानी प्रणालियों की सहायता से भीड़ की वास्तविक समय में निगरानी की गई, जिससे आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित कार्रवाई संभव हो सकी। प्रशासन ने इन तकनीकी उपकरणों के माध्यम से न केवल यात्रियों की सुविधा को बढ़ाया, बल्कि सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन के क्षेत्र में भी एक नया मानदंड स्थापित किया। इस तरह की तकनीकी प्रगति ने महाकुम्भ मेला को एक आदर्श मॉडल में बदल दिया, जिसे भविष्य में अन्य बड़े सार्वजनिक आयोजनों के लिए भी अपनाया जा सकेगा। महाकुम्भ 2025 की सुरक्षा व्यवस्था भी अत्यंत प्रभावशाली थी। इस महाकुम्भ में 50,000 से अधिक पुलिस, यूपी-पीएसी, एनडीआरएफ तथा केंद्रीय बलों की तैनाती की गई थी, जिससे भीड़ में किसी भी अनहोनी की स्थिति में तुरंत कार्रवाई की जा सके। 2,300 थर्मल और एआई संचालित कैमरों के साथ ड्रोन निगरानी प्रणाली ने चौबीसों घंटे महाकुम्भ क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित की। 351 अग्निशमन वाहनों और 2000 से अधिक अग्निशमन कर्मियों की तैनाती के साथ-साथ 10 लॉस्ट-एंड-फाउंड केंद्रों की स्थापना ने यह सुनिश्चित किया कि यदि कोई श्रद्धालु खो जाए तो उन्हें जल्दी से उनके परिवार से मिलवाया जा सके। इन सभी सुरक्षा उपायों के कारण महाकुम्भ 2025 एक सुरक्षित, व्यवस्थित और सुचारू आयोजन रहा। तकनीकी नवाचार ने महाकुम्भ 2025 को और भी यादगार बना दिया। 2,500 एआई संचालित कैमरों ने भीड़ की गतिविधियों की वास्तविक समय में निगरानी की, जिससे किसी भी आपातकालीन स्थिति का तुरंत समाधान किया जा सका। ड्रोन निगरानी प्रणाली ने पूरे आयोजन स्थल का निरंतर निरीक्षण किया, जिससे भीड़ प्रबंधन में अत्यधिक सहायता मिली। एक विशेष मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से महाकुम्भ से जुड़ी सभी जानकारियाँ जैसे कि यातायात अपडेट, सुरक्षा सूचना, लॉस्ट-एंड-फाउंड सेवाओं की जानकारी श्रद्धालुओं तक तुरंत पहुँचाई गई। चैटबोट्स एवं डिजिटल रजिस्ट्रेशन प्रणालियों का भी उपयोग किया गया, जिससे महाकुम्भ के दौरान आने-जाने वाले लोगों की सुविधा में कोई कमी न आए। महाकुम्भ 2025 की सबसे उल्लेखनीय

महाकुम्भ 2025 के समापन के बाद हमें यह संदेश मिला कि जब हम अपनी प्राचीन परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ते हैं, तो हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं और समाज में एकता, सहिष्णुता एवं विकास की नई दिशा स्थापित कर सकते हैं।

उपलब्धियों में से एक यह थी कि महाकुम्भ के प्रारंभिक दिनों में ही 50 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र जल में स्नान किया। यह आंकड़ा विश्व का अब तक का सबसे बड़ा भीड़-स्नान रिकॉर्ड बन चुका है। पौष पूर्णिमा (13 जनवरी), मकर संक्रांति (14 जनवरी), मौनी अमावस्या (29 जनवरी), वसंत पंचमी (3 फरवरी), माघ पूर्णिमा (12 फरवरी) एवं महा शिवरात्रि (26 फरवरी) के अवसर पर आयोजित अमृत स्नान ने श्रद्धालुओं को एक अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव प्रदान किया, जिससे उन्हें अपने जीवन में नई ऊर्जा और नवजीवन की अनुभूति हुई। श्रद्धालुओं ने इन पवित्र दिनों में अपने जीवन के पापों से मुक्ति पाने के लिए गहरी आस्था के साथ स्नान किया, जिससे यह महाकुम्भ उनके लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बन गया। महाकुम्भ 2025 ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी कई विश्व रिकॉर्ड स्थापित किए। 300 से अधिक सफाई कर्मियों ने राम घाट, भारद्वाज घाट और गंगेश्वर घाट पर एक साथ गंगा की सफाई की, जिसे गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज कराने की प्रक्रिया में रखा गया। इस सामूहिक प्रयास ने न केवल गंगा नदी की स्वच्छता में सुधार किया, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के प्रति लोगों में जागरूकता भी बढ़ाई। यह पहल दिखाती है कि धार्मिक आयोजन के साथ-साथ पर्यावरणीय दायित्वों का निर्वाह भी संभव है और इससे आने वाले वर्षों में ऐसे आयोजनों के लिए एक आदर्श मॉडल तैयार किया जा सकता है। महाकुम्भ 2025 में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय संस्कृति का स्वागत हुआ। 77

महाकुम्भ 2025 में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय संस्कृति का स्वागत हुआ। 77 देशों के राजनयिक, विदेशी श्रद्धालु और 118 विदेशी प्रतिनिधियों की टोली ने महाकुम्भ में भाग लेकर भारतीय परंपरा और संस्कृति की प्रशंसा की। विदेशों से आने वाले श्रद्धालुओं के साथ-साथ प्रमुख राजनेताओं ने भी इस महापर्व में हिस्सा लिया।

देशों के राजनयिक, विदेशी श्रद्धालु और 118 विदेशी प्रतिनिधियों की टोली ने महाकुम्भ में भाग लेकर भारतीय परंपरा और संस्कृति की प्रशंसा की। विदेशों से आने वाले श्रद्धालुओं के साथ-साथ प्रमुख राजनेताओं ने भी इस महापर्व में हिस्सा लिया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई प्रमुख हस्तियाँ महाकुम्भ में स्नान करके आयोजन की गरिमा बढ़ाने में सफल रहीं। इनके आगमन से महाकुम्भ के धार्मिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय महत्व में चार चांद लग गए, जिससे यह आयोजन न केवल देश के लिए, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारतीय संस्कृति की महानता का प्रतीक बनकर उभरा। महाकुम्भ 2025 ने श्रद्धालुओं को एक ऐसा आध्यात्मिक अनुभव प्रदान किया, जिसने उनके जीवन में गहरी छाप छोड़ी। जब करोड़ों लोग एक साथ पवित्र जल में स्नान करते हैं, तो यह सामूहिक अनुभव न केवल व्यक्तिगत स्तर पर परिवर्तन का कारण बनता है, बल्कि समाज में एकता, भाईचारे और प्रेम का संदेश भी फैलाता है। इस महाकुम्भ में नागा साधु, योगी, संत और अन्य धार्मिक गुरुओं द्वारा आयोजित भजन-कीर्तन, साधना और ध्यान सत्रों ने लोगों के मन में शांति, उत्साह और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, जिसमें किन्नर अखाड़े, दांडी संन्यासी और अन्य धार्मिक संगठनों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तुतियां शामिल थीं, ने लोगों में एक नई उमंग और एकता का संदेश फैलाया। ऐसे में महाकुम्भ 2025 ने न केवल धार्मिक आस्था को मजबूत किया, बल्कि सामाजिक समरसता और एकता का भी आदर्श उदाहरण पेश किया। महाकुम्भ 2025 का यह महापर्व प्रयागराज एवं उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था के लिए भी वरदान साबित हुआ। मेले के दौरान होटल, रेस्टोरेंट, परिवहन, निर्माण, सेवा और अन्य संबंधित क्षेत्रों में लाखों लोगों को रोजगार मिला, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था में एक जबरदस्त तेजी आई। अनुमानित 3 लाख करोड़ रुपये के आर्थिक लाभ ने राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महाकुम्भ की तैयारियों के दौरान 83 विकास परियोजनाओं में से 47 परियोजनाएँ समय पर पूरी की गईं, जिससे क्षेत्रीय विकास को नई दिशा मिली। इन परियोजनाओं ने न केवल तत्काल रोजगार सृजन किया, बल्कि भविष्य में शहर की स्थायी प्रगति के लिए आधार तैयार किया। स्मार्ट, स्वच्छ और हरित व्यवस्थाओं के प्रयोग ने महाकुम्भ 2025 को एक

आदर्श आयोजन में परिवर्तित कर दिया, जो आने वाले वर्षों में भी प्रयागराज के विकास के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगा। महाकुम्भ 2025 में विशाल भीड़ का प्रबंधन करना एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन प्रशासन ने अत्याधुनिक तकनीकी उपायों और सुव्यवस्थित समन्वय के माध्यम से इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया। एआई आधारित कैमरों, ड्रोन निगरानी, डिजिटल ट्रैफिक नियंत्रण एवं मोबाइल एप्लिकेशन के प्रयोग से भीड़ नियंत्रण में अत्यंत सहायता मिली, जिससे किसी

महाकुम्भ 2025 ने हमें यह संदेश दिया कि जब हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों, आध्यात्मिकता और आधुनिक तकनीकी नवाचारों को एक साथ मिलाकर काम करते हैं, तो हम न केवल व्यक्तिगत रूप से परिवर्तन ला सकते हैं, बल्कि सामूहिक रूप से समाज एवं राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित कर सकते हैं। पवित्र जल में स्नान करने से श्रद्धालुओं में शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि आई, जिससे उन्हें मोक्ष की प्राप्ति का अनुभव हुआ। जब करोड़ों लोग एक साथ आते हैं, तो उनकी सामूहिक ऊर्जा समाज

भी आपातकालीन स्थिति का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जा सका। प्रशासन ने पानी, भोजन, चिकित्सा और अन्य आवश्यक वस्तुओं के कुशल प्रबंधन के लिए पूर्व नियोजित योजनाओं और डिजिटल प्रणालियों का भी सफलतापूर्वक उपयोग किया। इस तरह के नवाचार ने महाकुम्भ 2025 को न केवल एक सुरक्षित आयोजन बनाया, बल्कि इसे भविष्य के बड़े आयोजनों के लिए एक आदर्श मॉडल भी स्थापित किया।

में प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश फैलाती है, जो आने वाले वर्षों में भी प्रेरणा का स्रोत रहेगी। महाकुम्भ 2025 का यह अद्वितीय अनुभव भारतीय संस्कृति के गौरव को विश्व मंच पर प्रस्तुत करने वाला रहा। विदेशी प्रतिनिधिमंडलों, राजनेताओं और प्रमुख हस्तियों की भागीदारी ने इस महापर्व को और भी भव्य और यादगार बना दिया। इससे भारतीय संस्कृति की वैश्विक मान्यता में वृद्धि हुई और यह आयोजन न केवल धार्मिक उत्सव

के रूप में, बल्कि आधुनिकता और परंपरा के संगम के रूप में भी इतिहास में अमिट छाप छोड़ गया। हजारों श्रद्धालुओं के जीवन में इस महाकुम्भ ने आध्यात्मिक जागरण का संचार किया, जिससे वे अपने जीवन के पुराने पापों से मुक्त हो गए और एक नई ऊर्जा के साथ अपने जीवन की ओर अग्रसर हुए। महाकुम्भ 2025 के दौरान हुए अनुभवों और उपलब्धियों से हमें यह संदेश मिलता है कि भारतीय संस्कृति में असीम शक्ति है। जब करोड़ों लोग एक साथ आकर पवित्र जल में स्नान करते हैं, तो उनकी सामूहिक ऊर्जा समाज में प्रेम, एकता, भाईचारे और शांति का संदेश फैलाती है। यह आयोजन हमें याद दिलाता है कि हम अपनी परंपरा को अपनाकर, आधुनिक तकनीक और स्मार्ट प्रशासनिक उपायों के साथ, आने वाले समय में भी विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाए रख सकते हैं। महाकुम्भ 2025 की इस विशाल यात्रा ने हमें यह सिखाया कि कठिनाइयों के बावजूद अगर हम एकजुट होकर काम करें, तो हम न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं, बल्कि पूरे समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दे सकते हैं। यह महाकुम्भ हमारे इतिहास में एक प्रेरणादायक अध्याय के रूप में दर्ज हो चुका है, जो आने वाले वर्षों में भी हमारी सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिकता और आधुनिकता को जीवंत रखने में सहायक रहेगा। इस तरह, महाकुम्भ 2025 का समापन न केवल एक धार्मिक उत्सव के रूप में बल्कि एक महान सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन के रूप में भी याद किया जाएगा। इसके अनुभवों, नवाचारों और उपलब्धियों ने हमें यह सिखाया कि जब हम अपनी सांस्कृतिक धरोहरों और आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाते हुए आधुनिक तकनीकी और प्रशासनिक नवाचारों का सहारा लेते हैं, तो हम किसी भी चुनौती को पार कर सकते हैं और एक समृद्ध, सुरक्षित तथा एकजुट समाज का निर्माण कर सकते हैं। महाकुम्भ 2025 का यह अद्भुत अनुभव आने वाले वर्षों में भी हमें प्रेरणा देता रहेगा, और यह भारतीय संस्कृति के गौरव को विश्व स्तर पर एक नई पहचान देगा। लोगों ने सामूहिक अनुभव से यह सीखा कि जब सभी मिलकर एक साथ आते हैं, तो व्यक्तिगत परिवर्तन से कहीं अधिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी सकारात्मक बदलाव संभव हो जाता है। यह महाकुम्भ, जो अब इतिहास में एक सुनहरे अध्याय के रूप में दर्ज हो चुका है, हमें यह संदेश देता है कि हमारी संस्कृति, परंपरा और आस्था में असीम शक्ति है, जिसे हम आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर भविष्य के लिए एक आदर्श मॉडल तैयार कर सकते हैं। महाकुम्भ 2025 ने लाखों श्रद्धालुओं के दिलों में विश्वास और आस्था की नई ज्योति प्रज्वलित की, जिसने उन्हें अपने जीवन में बदलाव और नवजीवन की ओर अग्रसर किया। इस आयोजन से प्राप्त सीख और अनुभव आने वाले समय में भी भारतीय समाज में सुधार, विकास और एकता का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

महाकुम्भ 2025 ने भारतीय संस्कृति के गौरव को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया और यह साबित किया कि हमारी परंपरा में ऐसी शक्ति है, जो आधुनिकता के साथ भी प्रासंगिक बनी रहती है। इस विशाल महाकुम्भ ने हमारे समाज में नयी सोच, नवाचार और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित किया है, जिससे आने वाले वर्षों में भी हमें एक सुरक्षित, स्वच्छ और समृद्ध समाज की ओर अग्रसर होने में मदद मिलेगी। ◆

मो. : 9336111418

महाकुम्भ की वैश्विक गूंज के नायक बने योगी आदित्यनाथ

-सुधा मिश्रा
(लेखिका)

मानव जीवन का अस्तित्व धर्म से ही जुड़ा है जहाँ जन्म लेने और मृत्यु तक के क्रियाकर्म पूर्व निर्धारित है जिसकी न केवल सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मान्यता है बल्कि वैज्ञानिक आकलनों पर भी यह पूर्ण रूप से खरा उतर रहा है। ऐसे में दुनियां के सबसे बड़े महापर्व महाकुम्भ के सफल आयोजन और भारी संख्या में लोगों द्वारा लगातार संगम पहुचना इस बात का प्रमाण है की ईश्वर ने उत्तर प्रदेश को अपने प्रतिनिधि के रूप में ऐसा नेतृत्व दिया है जो विश्व में पुन: भारत का परचम स्थापित करने में सफल हो रहा है। महापर्व महाकुम्भ के महत्वपूर्ण दिव्य स्नान को देखा जाए तो 13 जनवरी, 2025 दिन सोमवार पौष पूर्णिमा, 14 जनवरी, 2025 दिन मंगलवार मकरसंक्रांति, 29 जनवरी 2025 दिन बुद्धवार मौनी अमावस्या (सोमवती), 3 फरवरी, 2025 दिन सोमवार बसंत पंचमी, 12 फरवरी, 2025 दिन बुद्धवार माघी पूर्णिमा का सफलता पूर्वक लोगों द्वारा स्नान किया जा चूका है। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण स्नान में 26 फरवरी 2025 दिन बुद्धवार को महाशिवरात्रि का स्नान शेष रह गया है। श्रद्धा और विश्वास का आलम यह है की महत्वपूर्ण स्नान के दिनों के अतिरिक्त शेष दिनों में भी अप्रत्याशित संख्या में श्रद्धालु देश ही नहीं बल्कि दुनियां के कोने कोने से पहुँच रहें है।

सजग सरकार किसी भी कार्यक्रम के सफलता के पीछे की महत्वपूर्ण इकाई होती है मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने न केवल स्वयं प्रथम श्रेणी में कार्य करके सभी को आश्चर्य चकित किया है बल्कि तकनिकी रूप से महाकुम्भ के समस्त जानकारी लोगों तक पहुचाने में सफल रहें हैं। महाकुम्भ की ऑफिसियल वेबसाइट https://kumbh.gov.in पर जहाँ समस्त जानकारी उपलब्ध है वही जन-जन के मोबाइल तक सूचना पहुचाने को एंड्राइड/एप्पल मोबाइल एप Maha Kumbh Mela 2025, बनाया गया है जिसे दुनियाभर के लोग डाउनलोड करके जानकारी प्राप्त कर रहें है। सोशल वेबसाइट एक्स, फेसबुक और इन्स्टाग्राम पर भी महाकुम्भ की मौजूदगी को लोग देख रहें है। इसके अतिरिक्त तकनीकी रूप से सबसे समृद्ध गूगल भी महाकुम्भ में अपनी सेवाएँ दे रहा है। सरकार द्वारा स्पेशल ट्रेनों बसों का संचालन करके लोगो की यात्रा को सुगम बनाया जा रहा है। क्रावुड मैनेजमेंट भीड़ को नियंत्रित करने का सबसे उपयुक्त तरीका होता है सरकार ने करोड़ों लोगों की यात्रा को दुर्घटनारहित बनाने के लिए जगह-जगह पार्किंग की व्यवस्था और लोगों को

स्नान करने में हर संभव मदद कर रही है।

राजनीति में विपक्ष का प्रथम कर्तव्य होता है की सरकार द्वारा किये जा रहे सभी कार्यों में न केवल कमियां निकाले बल्कि उसे मुद्दा बनाये जबकि विपक्ष भी ईमानदारी से योगी आदित्यनाथ के इस भव्य आयोजन को देखता और महसूस करता होगा तो स्वयं में शुक्रिया कहना नहीं भूलता होगा। एक भव्य आयोजना ने वर्षों से सनातन धर्म की मंद पड़ती छवि में एक नई उर्जा का संचार कर दिया है जिसे देखकर सभी स्तब्ध है। वर्षों से धार्मिक और सनातन एकता की चल रही मुहीम को इससे बड़ी सफलता शायद कभी प्राप्त हुई हो। योगी आदित्यनाथ के सत्ता में नेतृत्व करने से लेकर अब तक अनेकों बड़े कार्य हुए है कई अवसरों पर उत्तर प्रदेश पुरे भारत में केंद्र सरकार की योजनाओं को लागू करने और जन-जन तक पहुचाने में प्रथम रह कर कई अवार्डों को भी प्राप्त किया है। रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात में अप्रत्याशित बदलाव हुए है और आमजन के जीवन में सरलता आई है।

मुख्यमंत्री योगी के समर्पण की ही देन है कि काशी का कायाकल्प हो सका है, अयोध्या का आधुनिक स्वरूप दुनिया ने देखा है और अब महाकुम्भ की यह विशाल भव्यता न केवल प्रत्येक सनातनियों को गौरवान्वित कर रही है बल्कि सभी को यह सोचने पर भी विवश कर रही है कि करोड़ों की आबादी को सुगमता से दिव्य स्नान कराकर अपनी राज्य सरकार और केंद्र सरकार की धर्म के प्रति प्रतिबद्धता में जो कहा उससे अधिक कर रहे हैं।

यह मुख्यमंत्री योगी के समर्पण की ही देन है की काशी का कायाकल्प हो सका है, अयोध्या का आधुनिक स्वरुप दुनिया ने देखा है और अब महाकुम्भ की यह विशाल भव्यता न केवल प्रत्येक सनातनियों को गौरवान्वित कर रही है बल्कि सभी को यह सोचने पर भी विवश कर रही है की करोड़ों की आबादी को सुगमता से दिव्य स्नान कराकर अपनी राज्य सरकार और केंद्र सरकार की धर्म के प्रति प्रतिबद्धता में जो कहा उससे अधिक कर रहें है। इतिहास इस बात का गवाह बन गया है की इतनी भारी संख्या में श्रद्धालु कभी महाकुम्भ नहीं गए। यह एक धार्मिक विजय उदघोष ही है जो सभी को महाकुम्भ में स्नान करने को उत्साहित कर रहा है। महाकुम्भ की यह सफलता न केवल इतिहास में सुनहरें अच्छरों में दर्ज हो गयी है बल्कि उत्तर प्रदेश के विकास में वैश्विक द्वार को भी खोल दिया है। आने वाले दिनों में इसका बड़ा लाभ उत्तर प्रदेश और यहाँ के निवासियों को प्राप्त होना अपेक्षित है। यह योगी का ही विजन है जो धर्म और संस्कार से नागरिकों के भले के साथ-साथ विकास की नीव को मजबूती प्रदान करते हुए तेजी से अर्थव्यवस्था को आगे ले जा रहें है। हम सभी सनातनियों जिन्होंने महाकुम्भ में दिव्य स्नान किया या किसी कारण नहीं किया सभी को बिना किसी शर्त के उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ के प्रति आभार और धन्यवाद जरुर देना चाहिए। जिससे हमारी अपनी उपस्थिति और संस्कार की गूंज वैश्विक स्तर पर लगातार प्रदर्शित होती रहें। ◆

मो. : 8090005531

दिव्य, भव्य, डिजिटल तथा सुरक्षित महाकुम्भ - 2025

-उपेन्द्र कुमार
(फीचर लेखक)

भारतीय संस्कृति में कुम्भ का विशेष महत्व है। वर्तमान महाकुम्भ 144 वर्षों के अद्भुत संयोग को धारण करने वाला है। कुम्भ पर्व अमृत स्नान तथा अमृत पान की बेला माना गया है। इस समय गंगा की पावन धारा में अमृत का सतत प्रवाह होता है। कुम्भ पर्व भारतीय जनमानस की पर्व चेतना का भी द्योतक है।

इस आयोजन से अनेक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक प्रसंग जुड़े हुए हैं। कहा गया है कि

'पृथिव्यां कुम्भयोगस्य चतुर्धा भेद उच्यते।
चतुस्थले च पतनाद् सुधा कुम्भस्य भूतले।।
विष्णु द्वारे तीर्थराजेवन्त्यां गोदावरी तटे।
सुधा बिन्दु विनिक्षेपाद् कुम्भपर्वेति विश्रुतम्।।'

अर्थात हरिद्वार, तीर्थराज प्रयाग, उज्जैन और नासिक में अमृत कुम्भ से छलकी हुई बूंदों के कारण कुम्भ जैसे महापर्व को मनाए जाने की परंपरा का उल्लेख मिलता है। प्रत्येक 12 वर्षों में महाकुम्भ एवं 6 वर्षों के अंतराल पर कुम्भ का परंपरागत स्वत:स्फूर्त समागम होता है। तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ का आयोजन स्वयं में परम विशिष्ट अवसर है। प्रयागराज के विषय में पद्मपुराण में कहा गया है कि

'ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी।।
तीर्थानामुत्तमं तीर्थ प्रयागाख्यमनुत्तमम्।।'

अर्थात, जिस प्रकार ग्रहों में सूर्य एवं नक्षत्रों में चंद्रमा श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार सर्वतीर्थों में प्रयागराज सर्वोत्तम हैं।

13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित होने वाले प्रयागराज महाकुम्भ 2025 में 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के

आगमन की संभावना जताई जा रही थी। लेकिन यह संख्या अनुमान से कहीं अधिक होने वाली है। 4 फरवरी, 2025 तक 38 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पावन त्रिवेणी में डुबकी लगाकर पुण्य फल की प्राप्ति कर चुके हैं। यह महाकुम्भ वसुधैव कुटुंबकम् तथा एक भारत श्रेष्ठ भारत के भाव को चरितार्थ करता हुआ दिखाई दे रहा है।

महाकुम्भ 2025 में प्रदेश सरकार द्वारा श्रद्धालुओं की सुगमता के लिए बेहतरीन प्रबंध किए गए हैं। व्यवस्थाओं को चाक चौबंद बनाने लिए मुख्यमंत्री जी बार-बार प्रयागराज का भ्रमण कर रहे हैं। बसंत पंचमी महा स्नान के अवसर पर उन्होंने अपने सरकारी आवास से मेला क्षेत्र की प्रातः साढ़े तीन बजे से ही मॉनीटरिंग शुरू कर दी थी। उनके यह प्रयास निश्चित रूप से उन्हें अद्वितीय मुख्यमंत्री सिद्ध करते हैं।

यह महाकुम्भ वसुधैव कुटुंबकम् तथा एक भारत श्रेष्ठ भारत के भाव को चरितार्थ करता हुआ दिखाई दे रहा है। महाकुम्भ 2025 में प्रदेश सरकार द्वारा श्रद्धालुओं की सुगमता के लिए बेहतरीन प्रबंध किए गए हैं। व्यवस्थाओं को चाक चौबंद बनाने लिए मुख्यमंत्री जी बार-बार प्रयागराज का भ्रमण कर रहे हैं। बसंत पंचमी महा स्नान के अवसर पर उन्होंने अपने सरकारी आवास से मेला क्षेत्र की प्रातः साढ़े तीन बजे से ही मॉनिटरिंग शुरू कर दी थी। उनके यह प्रयास निश्चित रूप से उन्हें अद्वितीय मुख्यमंत्री सिद्ध करते हैं।

दस हजार एकड़ से अधिक क्षेत्रफल में आयोजन किया जा रहा है है, जिसमें महाकुम्भ के लिए पंडाल लगे हैं। ये विस्तृत भू-भाग है। पांच हजार एकड़ से ज्यादा भू-भाग ऐसा है, जहां पर पार्किंग की व्यवस्था अलग से दी गई है। इस महाकुम्भ में जोन, सेक्टर पांटून पुल, थाना चौकी और फायर स्टेशनों की संख्या में विगत कुम्भ की तुलना में अत्यधिक बढ़ोतरी की गई है। सुरक्षा की दृष्टि से यह अभूतपूर्व कदम है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महाकुम्भ नगर में मंदिरों और प्रमुख स्थलों पर सुरक्षा उपायों को मजबूत किया गया है। महाकुम्भ मेला क्षेत्र, प्रयागराज और पड़ोसी जनपदों में खुफिया तंत्र सक्रिय है। प्रयागराज में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की स्क्रीनिंग की व्यवस्था की गई है। उत्तर प्रदेश अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा विभाग ने आग की घटनाओं को रोकने और उनसे निपटने के लिए मेला क्षेत्र में उन्नत सुविधाओं से लैस आर्टिकुलेटिंग वॉटर टावर तैनात किए हैं। यह आधुनिक अग्निशमन वाहन हैं, जिन्हें विशेष रूप से बहु मंजिला संरचनाओं और बड़े टेंटों में आग से निपटने के लिए डिजाइन किया गया है।

2025 का महाकुम्भ सुव्यवस्था, आस्था और आधुनिकता के महा समागम के रूप में जाना जाएगा। डिजिटल महाकुम्भ एप पर महाकुम्भ से संबंधित सभी जानकारियां दी गयी हैं। एप के माध्यम से श्रद्धालु लाभान्वित हो रहे हैं। महाकुम्भ क्षेत्र की निगरानी के लिए एआई संचालित कैमरे ड्रोन, एंटी ड्रोन और टेदर्थ ड्रोन का

उपयोग किया जा रहा है। अंडरवाटर ड्रोन के माध्यम से पानी के नीचे निगरानी की व्यवस्था की गई है। इसके माध्यम से पवित्र संगम स्नान के दौरान सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही है। अंडरवाटर ड्रोन 100 मीटर की गहराई तक काम करते हैं और इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर को वास्तविक समय की रिपोर्ट भेजते हैं। श्रद्धालुओं की सुरक्षा बढ़ाने के लिए रिमोट नियंत्रित लाइफ बाय की बड़े पैमाने पर तैनाती की गई है। ये उपकरण किसी भी स्थान पर तेजी से पहुंच सकते हैं और आपातकालीन स्थिति में लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा सकते हैं। बहु आपदा प्रतिक्रिया वाहन आपात स्थिति को कुशलतापूर्वक संभालने के लिए कैमरों, उठाने और काटने के उपकरणों से लैस हैं।

मेला क्षेत्र में 10000 से अधिक पुलिसकर्मी, पीएसी, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की टुकड़ियां पूरे आयोजन के दौरान सुरक्षा सुनिश्चित कर रही हैं। इसके अतिरिक्त अर्धसैनिक बल, बम निरोधक दस्ते और अन्य सुरक्षा बल भी तैनात किए गए हैं। गंगा और यमुना नदियों, विशेषकर संगम क्षेत्र में करोड़ों श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश सरकार ने अत्याधुनिक तकनीक से लैस जल पुलिस कर्मियों की एक बड़ी टुकड़ी तैनात की है। संगम क्षेत्र में लगातार गश्त के लिए 11 एफआरपी स्पीड मोटर बोट तैनात की गई है। 6 सीटों वाली यह वोट लगातार निगरानी और आपातकालीन स्थितियों में त्वरित प्रक्रिया सुनिश्चित करती है। इसके साथ ही 25 रिचार्जेबल मोबाइल रिमोट एरिया लाइटिंग सिस्टम तथा चेंजिंग रूम से लैस एनाकोंडा मोटर बोट भी तैनात की गई हैं।

महाकुम्भ में श्रद्धालुओं को साइबर सुरक्षा प्रदान करने के लिए एक मजबूत साइबर सुरक्षा टीम की स्थापना की गई है।

देश विदेश के श्रद्धालुजन इन व्यवस्थाओं को देखकर अभिभूत हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी सभी व्यवस्थाओं की स्वयं मॉनीटरिंग कर रहे हैं। ◆

मो. : 6306959511

सनातन गर्व-महाकुम्भ पर्व

-रजनीश वैश्य
(पत्रकार)

वर्ष 2024 में 65 करोड़ से अधिक पर्यटकों ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थलों का भ्रमण किया था। इस रिकॉर्ड को तोड़ना आसान नहीं था, लेकिन सनातन गर्व के महाकुम्भ पर्व में 57 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने आस्था डुबकी लगायी। 45 दिनों के प्रयागराज महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की यह संख्या पर्व की समाप्ति से कुछ दिन पूर्व की है। मानव इतिहास के किसी आयोजन में इतनी बड़ी संख्या में लोगों के सहभागी होने के प्रमाण नहीं है।

महाकुम्भ के समापन से पूर्व ही स्नानार्थियों की संख्या ने नया इतिहास रचने में सफलता प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2019 के कुम्भ पर्व में 24 करोड़ लोगों ने आस्था का अमृत स्नान पवित्र संगम में किया था। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में सुव्यवस्थित प्रबंधों से महाकुम्भ 2025 इतिहास में दर्ज हो चुका है।

महाकुम्भ में आस्था का महासागर

पौष पूर्णिमा : 1.7 करोड़ श्रद्धालु

मकर संक्रांति : 3.5 करोड़ श्रद्धालु

मौनी अमावस्या : 8 करोड़ श्रद्धालु

बसंत पंचमी : 2.57 करोड़ श्रद्धालु

माघी पूर्णिमा : 2 करोड़ श्रद्धालु

विश्व के किसी भी महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक या सामाजिक आयोजनों में इतनी भीड़ पहले कभी नहीं रही है। ऑक्टोबर फेस्ट (जर्मनी) में लगभग 72 लाख तो रिओ कार्निवल (ब्राजील) में लगभग 70 लाख पर्यटक आते हैं, जो महाकुम्भ के आंकड़े को दूर-दूर तक नहीं छू पाते हैं।

144 साल बाद वर्ष 2025 में प्रयागराज के महाकुम्भ में उस खगोलीय संयोग को दोहराने गया, जो अमृत मंथन के समय बना था। इस संयोग का लाभ उठाने के लिए उत्तर प्रदेश की आबादी (25 करोड़) से दोगुने से ज्यादा श्रद्धालु महाकुम्भ पहुंचने में कामयाब हुए। आस्था के जनसैलाब में भारत और चीन के अलावा दुनिया के किसी भी देश की आबादी से ज्यादा लोग महाकुम्भ में पवित्र संगम में डुबकी लगाने के लिए पहुंचे। यूरोपीय संघ की आबादी (45 करोड़), संयुक्त राज्य अमेरिका की आबादी (34.66 करोड़) तथा पाकिस्तान (25.37

करोड़) और बांग्लादेश (17.49 करोड़) की आबादी को जोड़ दें तो भी उससे ज्यादा लोग महाकुम्भ का हिस्सा बनें हैं। वर्ल्ड पॉपुलेशन रिव्यू, प्यू रिसर्च के मुताबिक भारत की अनुमानित जनसंख्या 143 करोड़ (1.43 अरब) है। इसमें सनातन धर्मावलंबियों की संख्या लगभग 110 करोड़ (1.10 अरब) है। इस तरह अगर स्नानार्थियों की संख्या की तुलना भारत में सनातनियों की संख्या से की जाए तो 50 प्रतिशत से अधिक लोग सनातन गर्व के पर्व के प्रत्यक्ष प्रमाण बन चुके हैं।

स्वच्छ, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित महाकुम्भ

स्वच्छ, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित कारणों से देश-दुनिया के श्रद्धालुओं को प्रयागराज महाकुम्भ में भारी भीड़ के बीच भी पवित्र स्नान में कोई असुविधा नहीं हुई। हर वर्ग, धर्म और रंग-रूप के लाखों-करोड़ों लोगो ने रात-दिन एक कर पुण्य डुबकी लगायी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर को दिव्य-भव्य बनाने के लिए अथक प्रयास किए गए। पिछले कुम्भ के सारे रिकॉर्ड को तोड़ते हुए विश्व के सबसे विशाल धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन के लिए महीनों की लगी मेहनत रंग लायी और करोड़ों लोग अध्यात्म और आस्था के संगम अपने अस्तित्व से आत्म साक्षात्कार में सफल हुए। महाकुम्भ में 4,000 हेक्टेयर में मेला क्षेत्र का विस्तार कर सुविधा की दृष्टि से 25 सेक्टरों में इसे विभाजित किया गया। वर्ष 2019 का कुम्भ 3,200 हेक्टेयर में फैला था और इसे 20 सेक्टरों में रखा गया था। भारी भीड़ को ध्यान में रखते हुए महाकुम्भ में 1850 हेक्टेयर में पार्किंग की व्यवस्था की गयी। महाकुम्भ में यातायात की सुविधा के लिए 14 आर.ओ.बी. का निर्माण करवाया गया। पिछले कुम्भ में 4 पक्के घाट बनाए गए थे, इस बार इनकी संख्या 9 रही। 7 रिवर फ्रंट रोड का निर्माण भी इस बार करवाया गया।

प्रयागराज महाकुम्भ में वर्षवार आए तीर्थयात्री

वर्ष		संख्या
1977	-	1.5 करोड़
1983	-	1.27 करोड़
1989	-	2.9 करोड़
1995	-	4.95 करोड़
2001	-	7 करोड़
2007	-	7 करोड़
2013	-	12 करोड़
2019	-	24 करोड़

दूसरे प्रदेशों तथा जिलों से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए 7,000 से अधिक बसों की व्यवस्था की गयी थी। मेला स्थल पर सुगमता से पहुंचने के लिए 550 शटल बस की सेवाएं भी ली गयी। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए 200 से अधिक सड़कों का चौड़ीकरण/सुदृढ़ीकरण किया गया। 400 किमी. अस्थायी सड़क एवं 30 पाण्टून पुलों का निर्माण हुआ।

मेले को जगमग करने के लिए 67,000 एल.ई.डी. एवं 2,000 सोलर हाइब्रिड स्ट्रीट लाइट तथा 2 नए विद्युत उपकेंद्रों का निर्माण किया गया। मेले में श्रद्धालुओं को पीने के पानी की कमी न हो, इसके लिए 1,249 किमी. पेयजल पाइप लाइन बिछायी गयी। 200 वॉटर एटीएम और 85 नलकूप की सहायता से पानी की सप्लाई की गयी। पिछले कुम्भ की तुलना में इस बार दोगुने 1.60

लाख टेंट लगाए गए। महाकुम्भ हरियाली का संदेश देने में भी कामयाब रहा। मेला स्थल पर हरियाली के लिए यहां 3 लाख से अधिक पौधों का रोपण किया गया। शुद्ध संगम जल के लिए सभी 81 नालों का स्थायी निस्तारण सुनिश्चित किया गया। स्वच्छता एवं सफाई के लिए मेला क्षेत्र में 1.50 लाख शौचालय निर्मित किए गए। साफ-सफाई के लिए 10,000 से अधिक सफाई कर्मचारियों की तैनाती की गयी।

पर्यटन के शिखर पर प्रदेश

योगी सरकार के प्रयासों से उत्तर प्रदेश अपनी ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित कर पर्यटन के नए हब के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो रहा है। देशी तथा विदेशी पर्यटकों का केंद्र बना यूपी दुनिया भर को आकर्षित कर रहा है। प्रदेश को आध्यात्मिक और धार्मिक परंपरा का हृदय स्थल माना जाता है। यहां धार्मिक पर्यटन को नई बुलंदी मिली है। अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण के बाद से पर्यटकों की संख्या में तेजी से विस्तार हुआ है। वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर परियोजना ने मूर्त रूप लेने के बाद पर्यटकों और श्रद्धालुओं को विशेष रूप से आकर्षित किया है।

मथुरा-वृंदावन में श्रीकृष्ण जन्मभूमि क्षेत्र का भी विकास किया जा रहा है। अयोध्या, काशी और मथुरा जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों को विश्वस्तरीय बनाने की मुहिम से प्रदेश के आर्थिक विकास को भी गति मिली रही है। इनके बीच महाकुम्भ प्रयागराज दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयोजन बनने में सफल रहा है। इसका पूरा श्रेय योगी सरकार को जाता है। ◆

मो. : 8840973541

आस्था और उमंग का महाकुम्भ

-रेनू सैनी
(अनुवाद अधिकारी, रक्षा मंत्रालय)

भारत की संस्कृति अत्यंत वृहद् है। यह विस्तृत इसलिए है क्योंकि यह केवल एक स्रोत से नहीं अपितु बहु-स्रोतीय सभ्यता से विकसित हुई है। इस पृथ्वी पर जब मनुष्य का विकास हो रहा था तो वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूम रहे थे। ऐसे में कई मानव जहां रुक गए, वहां पर वे अपनी संस्कृति और परिवेश को बढ़ाते गए। अफ्रीका से आए प्रवासी जो लगभग 65000 वर्ष पहले भारतवर्ष की धरती पर आए थे, यहीं के होकर रह गए। उनकी वंशावली हमारी आबादी की आधारशिला कही जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। पश्चिम एशिया से आने वाले लोगों ने कृषि में क्रांति लाने और हड़प्पा सभ्यता को खड़ा करने में अपना सहयोग दिया। धीरे-धीरे यहां नई प्रथा, नई अवधारणाएं, नई लोकभाषाएं निर्मित होती रहीं। इन सभी ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया। हमारे देश की संस्कृति प्राचीनकाल से ही अत्यंत समृद्ध और सुदृढ़ मानी जाती रही है। यहां पर विभिन्न धर्म, भाषाएं, दृष्टिकोण, खान-पान आदि का बोलबाला रहा है। यहां की मिश्रित संस्कृति ने विश्व की अनेक संस्कृतियों को जोड़ा और उन्हें नवीनता प्रदान की। भारत देश में अनेक धार्मिक आयोजन किए जाते हैं। इनमें से कई धार्मिक आयोजन केवल एक देश अपितु संस्कृति तक ही विद्यमान नहीं हैं, अपितु विश्व की अनेक संस्कृतियों और राष्ट्रों तक अपनी गहरी पैठ बनाए हुए

हैं। कुम्भ का आयोजन भी इनमें से एक है। ऐसा कहा जाता है कि ''अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च। लक्षप्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्।''

इसका अर्थ है कि एक हजार अश्वमेध, एक सौ वाजपेय यज्ञ और पृथ्वी की एक लाख प्रदक्षिणा के पुण्य के बराबर अकेले कुम्भ स्नान करने से प्राप्त हो जाता है।

कुम्भ जैसा कि नाम से विदित है इसका अर्थ होता है घड़ा, कलश। मेला यानि ऐसा स्थान जहां पर लोग एकत्रित होते हों। ऐसा माना जाता है कि कुम्भ मेले का प्राचीन उल्लेख प्रयाग महात्म्य में मिलता है। मत्स्य पुराण 18 पवित्र पुराणों में से एक है। इसके अंतर्गत भी प्रयाग की तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना, सरस्वती और तीथयात्रा की परंपरा का वर्णन है। महाकुम्भ का आयोजन भी बहुत पहले से किया जाता रहा है। सूत्रों के अनुसार चीनी बौद्ध यात्री ह्वेन त्सांग ने महाकुम्भ का उल्लेख किया था। महाकुम्भ मेले के बारे में बौद्ध धर्म के पाली ग्रंथों में भी जानकारी देखने को मिलती है। रामायण और महाभारत में भी कुम्भ मेले का जिक्र है। रामायण के किष्किंधा कांड में यह बताया गया है कि वनवास के समय जब श्रीराम, सीता और लक्ष्मण ऋषि भरद्वाज के आश्रम में गए थे, तब उन्हें कुम्भ मेले के समय उज्जैन जाने की सलाह दी गई थी। इसी तरह महाभारत में प्रयाग के संगम में स्नान के बारे में बताया गया है।

कुम्भ मेले के पीछे अनेक पौराणिक कहानियों का उल्लेख मिलता है। सबसे प्रसिद्ध कथा उनमें यह है कि एक बार देवताओं और दानवों ने मिलकर अमरता का अमृत उत्पन्न करने के लिए समुद्र का मंथन किया। उसमें सबसे पहले कालकूट नामक विष निकला। अब विष को कौन पिए? यह समस्या आ खड़ी हुई। इस समस्या का समाधान भगवान शिव ने उस विष को पीकर किया। विष के प्रभाव से उनका कंठ नीला हो गया और उनका नाम पड़ गया नीलकंठ। इसके बाद समुद्र मंथन की प्रक्रिया फिर चलती रही। कड़े संघर्ष के बाद आखिर अमृत कलश निकला। इंद्र का पुत्र जयंत उस कलश को दानवों की नज़रों से बचाते हुए पृथ्वीलोक की ओर लेकर चल पड़ा। पृथ्वीलोक पर जहां-जहां उसने विश्राम किया वह क्षेत्र 'कुम्भ क्षेत्र' कहलाया। कहा जाता है कि जयंत पहले नासिक में, फिर उज्जैन तथा उसके बाद प्रयागराज और सबसे अंत में हरिद्वार में विश्राम के लिए रुका। देवताओं और दैत्यों में अमृत कलश के लिए छीनाझपटी हुई। इस छीनाझपटी में अमृत की जो बूंदे जिन स्थानों पर गिरीं वे सभी कुम्भ क्षेत्र कहलाए।

अब बात आती है कि कुम्भ का आयोजन 12 वर्ष में ही क्यों? इसके पीछे भी पौराणिक और वैज्ञानिक अवधारणा छिपी हुई है। देवता और दानव अमृत कलश के लि, आपस में 12 दिनों तक लड़ते रहे। इसलिए कुम्भ मेले का आयोजन 12 साल में आयोजित किया जाता है।

पुराणों में 12 अंक का अन्य कार्यों के लिए भी महत्व है। ज्योतिष की गणना के अनुसार पूरा ब्रह्मांड 12 राशियों में विभाजित है। ये बारह राशियां हैं-

मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन। व्यक्ति की जन्मकुंडली में भी द्वादश भाव व्यक्ति के भाग्य और कर्मों को बताते हैं।

इसी तरह द्वादश लग्न, द्वादश तिलक, द्वादश आदित्य, द्वादश ज्योतिर्लिंग, द्वादश गणपति और भागवत महारपुराण के द्वादश स्कंध हैं। हिन्दी-अंग्रेजी सभी महीने बारह हैं। इस प्रकार 12 का अंक पृथ्वीलोक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

महाकुम्भ अब केवल हिन्दुओं की आस्था का प्रतीक ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की श्रद्धा का प्रतीक है। यही कारण है कि इसमें विश्व भर से श्रद्धालु यहां पर आते हैं। वे पवित्र नदी में स्नान करते हैं। वास्तव में प्रत्येक आध्यात्मिक धारणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सही होती है। महाकुम्भ अनेक संस्कृतियों का भी महासंगम है। यहां पर हर धर्म, जाति, भाषा के लोग देखने को मिलते हैं। यहां पर संपन्न व्यक्ति से लेकर भिक्षुक तक समभाव के साथ स्नान करते हैं।

प्राचीनकाल से लेकर अब तक महाकुम्भ के प्रति लोगों की आस्था दिन-प्रतिदिन बढ़ ही रही है। दरअसल कुछ धार्मिक पर्व और आयोजन केवल धर्म के दृष्टिकोण से ही आयोजित नहीं किए जाते, अपितु वे पूरे विश्व की संस्कृतियों के महासंगम के नजरिए से भी आयोजित किए जाते हैं। हम एक-दूसरे से ही ये सब सीखते हैं। सभी धर्म मानवता के कल्याण पर बल देते हैं। एकता, अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता और भाईचारे का मार्ग दिखाते हैं। हमारे देश के अनेक ऋषि-मुनियों ने भारत की विशाल परंपरा को विश्व तक पहुंचाया। भारत एक ऐसा देश है जिसने कभी यह नहीं चाहा कि दूसरे देशों के लोग धर्म परिवर्तन कर लें। अपितु यहां के हर ऋषि-मुनि ने प्रत्येक को एक दूसरे से सकारात्मक चीजें सीखने के लिए प्रेरित किया। स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं। युवाओं के साथ-साथ पूरी दुनिया के लोग उन्हें विश्वगुरु के रूप में देखते हैं।

एक बार स्वामी विवेकानंद जी धर्म प्रचार के उद्देश्य से अमेरिका का भ्रमण कर रहे थे। उनके धर्म के महत्व संबंधी विचारों से प्रभावित होकर एक विश्वविद्यालय के अमेरिकी शिक्षक उनके पास पहुंचे तथा उनसे बोले, 'स्वामी जी, आप मुझे अपने हिन्दू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें।' उन शिक्षक की बात सुनकर स्वामी जी बोले, 'मैं यहां धर्म प्रचार के लिए आया हूं न कि धर्म परिवर्तन के लिए। मैं अमेरिकी धर्म-प्रचारकों को यह संदेश देने आया हूं कि वे धर्म परिवर्तन के अभियान को बंद कर प्रत्येक धर्म के लोगों को अच्छा इंसान बनाने का प्रयास करें। मेरी हिन्दू संस्कृति विश्वबंधुत्व का संदेश देती है, मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानती है।' स्वामी जी की बात सुनकर वह शिक्षक उनकी बातों से मोहित सा हो गया और बोला, 'स्वामी जी कृपया इस बारे में और विस्तार से कहिए।' शिक्षक की बात सुनकर स्वामी जी फिर बोले, 'महाश्य, इस पृथ्वी पर सबसे पहले मानव का आगमन हुआ था। उस समय

कहीं कोई धर्म, जाति या भाषा न थी। मानव ने अपनी सुविधानुसार अपनी-अपनी भाषाओं, धर्म तथा जाति का निर्माण किया और अपने मुख्य उद्देश्य से भटक गया। इसलिए मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूं कि तुम अपना धर्म पालन करते हुए अच्छे ईसाई बनो। हर धर्म का सार मानवता के गुणों को विकसित करने में है। इसलिए तुम भारत के ऋषि-मुनियों के इन शाश्वत संदेशों का लाभ उठाओ और उन्हें अपने जीवन में उतारो।' अमेरिकी शिक्षक स्वामी जी से धर्म का सार सुनकर उनके विचारों से अभिभूत हो उठा।

भारतीय भूमि अत्यंत पवित्र है। हम बेहद सौभाग्यशाली हैं जो भारत जैसे तीर्थस्थल वाली भूमि पर उत्पन्न हुए हैं। कुम्भ मेले का आयोजन अनेक अखाड़ों, आश्रमों, धार्मिक संगठनों और साधुओं द्वारा किया जाता है। यह मेला जाति, धर्म, लिंग से परे है। यहां पर सब एक समान हैं। यह मेला लोगों के अंदर आध्यात्मिक विचारों का पोषण करता है। धर्म के साथ-साथ इसमें खगोल विज्ञान, ज्योतिष, सामाजिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों का विज्ञान भी समाहित है। कुम्भ मेले का आयोजन व्यक्तियों के अंदर प्राचीन धार्मिक पांडुलिपियों, परंपराओं, ऐतिहासिक एवं धार्मिक यात्राओं व ज्ञान कौशल की जानकारी को सुदृढ़ करता है।

यह कुम्भ मेला अनेक विशेष बातों के लिए याद किया जाएगा। इस कुम्भ मेले में आम लोगों ने नागा साधुओं के दर्शन किए। प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ 2025 में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने महत्वपूर्ण भागीदारी की। इसमें 77 से अधिक देशों के राजनयिक और गणमान्य व्यक्ति आध्यात्मिक आयोजन में शामिल हुए। इन्होंने संगम पर पवित्र स्नान और शाम की आरती जैसे अनुष्ठानों में भाग लिया। उन्होंने इस आयोजन की आध्यात्मिक ऊर्जा और भारत की अद्भुत सांस्कृतिक विरासत की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इसमें 73 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल में लिथुआनिया, जापान, संयुक्त अरब अमीरात और अन्य राजनयिक भी शामिल हुए। इनके अतिरिक्त लिथुआनियाई राजदूत डायना मिकेविसीन और जापानी राजदूत केईची ओनो ने इस अनुभव को 'आत्मा की खुशी' के रूप में उजागर किया। उन्होंने इस कार्यक्रम की व्यवस्था की सराहना की। अनेक महत्वपूर्ण हस्तियों ने संगम में स्नान कर महाकुम्भ के महत्व को बताया।

इनमें भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक ने 04 फरवरी, 2025 को संगम में डुबकी लगाई। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी के साथ पक्षियों को दाना भी खिलाया। इसके बाद अक्षयवट धाम और लेटे हनुमान के दर्शन भी किए।

05 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संगम में डुबकी लगाई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 27 जनवरी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 18 जनवरी को त्रिवेणी संगम में पवित्र डुबकी लगाई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी संगम में डुबकी लगाई।

मौनी अमावस्या पर सात करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया।

3-5 करोड़ श्रद्धालुओं ने मकर सक्रांति के अवसर पर अमृत स्नान किया। एक एवं 2 फरवरी को दो करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने और पौष पूर्णिमा पर 1-7 करोड़ श्रद्धालुओं ने पुण्य डुबकी लगाई। वसंत पंचमी पर 2-57 करोड़ श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी में आस्था की डुबकी लगाई।

इस कुम्भ में अनेक ऐसे साधु संन्यासी देखने को मिले जिनके अनुपम त्याग, धैर्य और संकल्प ने हिन्दू संस्कृति को ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया।

उज्जैन के राधे पुरी बाबा का हठयोग

उज्जैन के राधे पुरी बाबा ने वर्ष 2011 से विश्व में कल्यागा के लिए तप किया हुआ है। इन्होंने 14 वर्षों से अपना एक हाथ उठा कर रखा हुआ है। एक हाथ लगातार उठाने के कारण वह हाथ अब लकड़ी की तरह सख्त हो गया है। अंगुलियां भी टेढ़ी-मेढ़ी हो गई हैं। इन्होंने हठयोग में अपने एक हाथ को ऊपर उठा रखा है। उनका कहना है कि विश्व के कल्याण के लिए उन्होंने यह संकल्प लिया है।

घोड़े वाले बाबा

इस महाकुम्भ में बाबा विजय पुरी को घोड़े पर घूमते-फिरते देखा गया। वे महाकुम्भ में 'घोड़े वाले बाबा' नाम से प्रसिद्ध हुए। वे जहां-जहां भी गुजरते, वहां लोगों की भीड़ लग जाती। बाबा चार घोड़े बरेली से लेकर आए थे।

सात फीट लंबी जटा वाले बाबा

आवाहन अखाड़े के महंत मंगलानंद सरस्वती नागा महाराज की जटा सात फीट से ज्यादा लंबी है। वह अपनी इन जटाओं की देखभाल 30 सालों से कर रहे हैं। जब वे अपनी जटाओं को लपेटकर रखते हैं, तो उनकी यह भारी जटा एक विशाल मुकुट की तरह नज़र आती है। महंत मंगलानंद हरियाणा के करनाल के रहने वाले हैं।

पर्यावरण बाबा

महाकुम्भ में पहुंचे पर्यावरण बाबा ने भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। वे हाथ में सोने के कंगन और हीरे की घड़ी पहने हुए थे। पर्यावरण बाबा एक करोड़ से अधिक पौधे

लगा चुके हैं। उन्होंने मेले में भी फलदार पौधे बांट कर लोगों की वाहवाही लूटी। उनका कहना है कि पर्यावरण साफ-सुथरा होगा तो लोग लंबी आयु प्राप्त करेंगे और स्वस्थ हवा में सांस लेंगे। इसलिए इसको स्वच्छ बना, रखना हम सभी की जिम्मेदारी है।

सवा लाख रुद्राक्ष धारण करने वाले बाबा

सवा लाख रुद्राक्ष धारण करने वाले बाबा श्री पंचदशनाम आवाहन अखाड़े की हरिद्वार शाखा के सचिव भी हैं। उन्होंने वर्ष 2019 में 12 साल तक प्रतिदिन सवा लाख रुद्राक्ष धारण करने का संकल्प लिया था। यह बहुत ही कठिन संकल्प था। छह वर्ष पूरे हो चुके हैं। उनके इन रुद्राक्ष का वजन 45 किलो से भी अधिक हैं। 45 किलो के भार को प्रतिदिन सिर पर रखा जा, तो क्या हालत होगी, यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मगर बाबा अपने दृढ़ संकल्प से ही ऐसे कठिन संकल्पों को पूर्ण करते हैं और पूरी दुनिया को अपने कर्मों से संदेश देते हैं।

बंजारन मोनालिसा

इन विचित्र बाबाओं के अलावा मोनालिसा नामक बंजारन ने भी अपनी खूबसूरत आंखों के कारण पूरी दुनिया को अपना दीवाना बना दिया। मोनालिसा महाकुम्भ में अपने परिवार के साथ मालाएं बेचने आई थी। वह मध्य प्रदेश के एक छोटे से गांव की रहने वाली आम लड़की है। लेकिन इस समय वह पूरी दुनिया के लिए एक सनसनी बन चुकी है। अपनी आंखों के कारण चर्चा में आई मोनालिसा की किस्मत चमक गई है। उसे फिल्मों में भी काम मिल गया है।

करोड़ों लोगों ने लगाई डुबकी

महाकुम्भ में 45 करोड़ से अधिक लोगों के अमृत स्नान करने का अनुमान है। आखिर इतनी अधिक संख की गणना किस प्रकार की जाती होगी? श्रद्धालुओं की संख्या की गिनती

करने के लिए एक स्पेशल क्राउड असेसमेंट टीम बनाई गई थी। इसके लिए ऐसे कैमरों की मदद ली गई जिन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से लोगों की गिनती करवाई।

अखाड़ों का महत्व

अखाड़ों के बना महाकुम्भ की कल्पना की ही नहीं जा सकती। वर्तमान में भारत में 13 प्रमुख अखाड़े हैं। प्रत्येक अखाड़े की अपनी विशिष्ट परंपरा है। अखाड़ों की शुरुआत आदि शंकराचार्य जी ने की थी। 13 अखाड़ों में तीन श्रेणियां हैं। ये तीन श्रेणियां शैव, वैष्णव एवं उदासीय संप्रदायों में विभाजित हैं। शैव संप्रदाय के कुल सात अखाड़े हैं। इनके अनुयायी शिव भगवान की पूजा करते हैं। वैष्णव संप्रदाय के 3 अखाड़े हैं। इनके अनुयायी भगवान विष्णु और उनके अवतारों की पूजा करते हैं। उदासीन संप्रदाय के 3 अखाड़े हैं। ये ओउ्म की पूजा करते हैं। ओउ्म अनंत शक्ति का प्रतीक है।

किन्नर अखाड़ा भी कुम्भ मेले में भाग लेता है। इसके प्रमुख स्वामी लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी हैं। इसी महाकुम्भ में अभिनेत्री ममता कुलकर्णी को संन्यासी की दीक्षा महामंडलेश्वर की उपाधि दी गई थी, मगर फिर उन्होंने इस पद से इस्तीफा दे दिया।

इस प्रकार इस महाकुम्भ में आम जनता को बहुत सारी नई बातें जानने और सीखने को मिलीं। विश्व में दूर-दूर से आए श्रद्धालुओं को भी भारत में होने वाले महाकुम्भ का ज्ञान हुआ। समस्त दुनिया प्रयागराज में आयोजित इस महाकुम्भ के प्रति श्रद्धा से नत हुई। यही है हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषता जो हर कार्य में संपूर्ण दुनिया को अपने साथ मिलाकर विश्व को एक परिवार में सम्मिलित कर लेती है। ◆

मो. : 9971125858

मानव संस्कृति का महासमागम

–डॉ. शरद प्रकाश पाण्डेय
(पत्रकार)

पवित्र संगम में पुण्य स्नान किया जिसमें 100 देशों के प्रतिनिधि शामिल रहे। 13 जनवरी, पौष पूर्णिमा से प्रारंभ महाकुम्भ 2025 प्रयागराज में 26 फरवरी, महाशिवरात्रि की तिथि तक कुल 45 दिवसों तक चला। विश्व इतिहास में यह सबसे बड़ा और लम्बी अवधि तक चलने अभूतपूर्व अतुलनीय और अविस्मरणीय आयोजन था। समरसता के इस दिव्य और भव्य महासमागम ने सकल विश्व को एकता का संदेश दिया। इस समागम को संत महात्माओं महामण्डलेश्वरों मण्डलेश्वरों का भरपूर आशीर्वाद मिला। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस सिद्धि के सूत्रधार रहे और उन्होंने सभी गणमान्य जनों, देश-विदेश से पधारे सभी श्रद्धालुओं तथा कल्पवासियों का हार्दिक अभिनंदन एवं आभार ज्ञापित किया। आयोजन और व्यवस्था से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों सफाई कर्मियों और सुरक्षा कर्मियों के कुछ न कुछ सौगात भी दिया।

उन्होंने महाकुम्भ के सुव्यवस्थित आयोजन के कर्णधार रहे महाकुम्भ मेला प्रशासन, स्थानीय प्रशासन, पुलिस प्रशासन, स्वच्छताकर्मियों, गंगा दूतों, स्वयंसेवी संगठनों, धार्मिक संस्थाओं, नाविकों तथा महाकुम्भ से जुड़े केंद्र व प्रदेश सरकार के सभी विभागों सहित प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों व संस्थाओं को साधुवाद दिया। उन्होंने प्रयागराज वासियों का विशेष रूप से धन्यवाद, जिनके धैर्य एवं आतिथ्य सत्कार ने सबको सम्मोहित किया।

तीर्थराज प्रयाग के संगम तट पर 13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित महाकुम्भ में 45 दिनों तक आयोजित महापर्व में 66 करोड़ से अधिक लोगों का महासमागम हुआ जो कि दुनिया की सबसे विस्मयकारी घटना है। इस दिव्य भव्य आयोजन का श्रेय उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जाता है। उन्होंने इस प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन में व्यक्तिगत रुचि लेने के साथ साथ 45 दिनों के भीतर प्रयागराज 10 बार गये और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। अपने मंत्रियों समेत संगम में डुबकी लगा और मंत्रिमंडल की बैठक भी किया। इस दौरान देश के राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने संगम में डुबकी लगा।

महाकुम्भ का औपचारिक समापन करने के लिए वह पुनः

27 फरवरी को खुद प्रयागराज गये और आयोजन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। उनसे संवाद किया, उनके लिए कुछ घोषणायें की, उन्हें सम्मानित भी किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अनुसार दुनिया के इस अनूठे आयोजन में लगभग साढ़े 7 हजार करोड़ रूपये खर्च हुए मगर प्रदेश को 3 लाख करोड़ की आमदनी भी हुई। लोगों को रोजगार भी मिला। वह कहते हैं कि मेले की व्यवस्था पर तो लगभग 500 करोड़ ही खर्च हुए बाकी पैसे तो प्रयागराज में स्थाई निर्माण पर खर्च हुए जो हमेशा के लिए है।

विशेष

- 45 दिनों तक चले महा आयोजन का हुआ सफलतापूर्वक समापन।
- 66 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं ने संगम स्नान कर रचा इतिहास।
- ऊंच-नीच, जाति-पाति के बंधन टूटे, एक ही स्थान पर सभी ने किया स्नान।
- 4000 हेक्टेयर में बसी दिव्य कुम्भनगरी में 13 अखाड़ों ने निभा सनातन परम्परा।
- नेता, सितारे, खिलाड़ी, कलाकार और उद्योगपति सब संगम में डुबकी लगाने को पहुंचे।
- डिजिटल महाकुम्भ ने बटोरी सुर्खियां, बना आधुनिकता का प्रतीक।
- प्रयागराज एयरपोर्ट पर 18 फरवरी को एक ही दिन में 254 विमानों से 23,196 यात्रियों का आवागमन हुआ। यह अब तक का रिकॉर्ड है।
- 45 दिनों में 10 बार स्वयं महाकुम्भ नगर पहुंचे मुख्यमंत्री योगी, व्यवस्थाओं का लेते रहे जायजा।
- समस्त जाति, वर्गों के साधु संतों से मुख्यमंत्री ने मुलाकात, कर किया उनका सम्मान।

महाकुम्भ 2025 ने न सिर्फ आध्यात्मिकता की न ऊंचाइयों को छुआ, बल्कि भव्यता और दिव्यता के मामले में भी दुनिया भर में एक अनूठा उदाहरण पेश किया। 45 दिनों तक चले इस महाआयोजन में 66 करोड़ से अधिक लोगों ने संगम में स्नान कर इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज कराया। योगी सरकार की मेहनत और केंद्र सरकार के सहयोग से प्रयागराज का कायाकल्प हुआ, जिसने इस बार महाकुम्भ को पहले से कहीं अधिक भव्य और दिव्य बना दिया। आम से लेकर खास तक, हर किसी ने इस पवित्र अवसर पर अपनी आस्था को साकार किया। सबसे खास बात ये रही कि महाकुम्भ की शुरुआत से पहले पीएम मोदी और सीएम योगी ने जिस एकता के महाकुम्भ का संकल्प लिया था, वो यहां साकार होता दिखाई दिया।

66 करोड़ से ज्यादा लोगों ने किया स्नान

45 दिनों तक चले महाकुम्भ 2025 के महा आयोजन में 66 करोड़ से ज्यादा लोगों ने स्नान कर इतिहास बनाया। आज तक दुनिया भर में किसी एक आयोजन में इतने बड़े मानव समागम का को इतिहास नहीं है। यह संख्या भारत की आबादी का लगभग 50 फीसदी है, जबकि दुनिया के क देशों की आबादी से कहीं ज्यादा है।

13 अखाड़ों की रही उपस्थिति

महाकुम्भ 2025 में सभी 13 अखाड़ों की उपस्थिति रही, जिन्होंने तीनों अमृत स्नान में पुण्य डुबकी लगाकर परंपरा का निर्वहन किया। इन 13 अखाड़ों के साथ इनके अनुगामी अखाड़े भी सम्मिलित हुए, जिसमें जूना अखाड़े का अनुगामी अखाड़ा किन्नर अखाड़ा आकर्षण का केंद्र रहा। इन अखाड़ों ने महाकुम्भ की परंपरा के अनुसार दीक्षा कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संचालन संपन्न किया। विभिन्न अखाड़ों ने महामंडलेश्वर समेत अन्य पदों पर नियुक्तियां भी की धर्म संसद का आयोजन भी हुआ।

4000 हेक्टेयर में बसाई गई महाकुम्भ नगरी

महाकुम्भ को इस बार भव्य और दिव्य बनाने के लिए योगी सरकार ने को कोर कसर नहीं छोड़ी थी। 4000 हेक्टेयर में महाकुम्भ नगर बसाया गया। पूरे मेला क्षेत्र को 25 सेक्टर में विभाजित किया गया। 12 किमी. में कई पक्के घाटों का निर्माण किया गया। 1850 हेक्टेयर में पार्किंग निर्मित की गए जबकि 31 पांटून पुल, 67 हजार से ज्यादा स्ट्रीट लाइट्स, 1.5 लाख शौचालय और 25 हजार पब्लिक एकमोडेशन सुनिश्चित किए गए। इस आयोजन पर केन्द्र और राज्य सरकार के द्वारा साढ़े 7 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि खर्च कर, पूरे प्रयागराज का कायाकल्प किया गया।

6 प्रमुख स्नान पर्वों पर जुटे सर्वाधिक श्रद्धालु

यद्यपि 45 दिनों में यहां 66 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु जुटे, मगर सर्वाधिक संख्या अमृत स्नान और स्नान पर्वों पर रही। 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा पर 1.70 करोड़, 14 जनवरी मकर संक्रांति पर 3.50 करोड़, 29 जनवरी मौनी अमावस्या को 7.64 करोड़, 3 फरवरी बसंत पंचमी को 2.57 करोड़, 12 फरवरी माघ पूर्णिमा को 2.04 करोड़ और 26 फरवरी महाशिवरात्रि को 1.53 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं की आमद रिकॉर्ड की गई। 15 फरवरी से 26 फरवरी तक एक भी दिन ऐसा नहीं रहा, जब संख्या एक करोड़ से कम रही हो।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने भी लगा डुबकी

महाकुम्भ में आम हो या खास हर किसी ने डुबकी लगाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू इस महा आयोजन में पवित्र स्नान करने के लिए पहुंचीं। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी यहां पहुंचकर पावन संगम में स्नान किया। इनके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री, राज्यपाल, केंद्रीय मंत्रियों, विधानसभा के सभापति, उप राज्यपाल और राज्य मंत्रियों ने भी यहाँ पहुंचकर संगम में डुबकी लगाई।

यूपी और राजस्थान मंत्रिमंडल की हुई बैठक

इस महाकुम्भ में उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों की मंत्रिमंडल की बैठके भी आयोजित की हुईं और कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई मंत्रि परिषद की बैठक में उततर प्रदेश के लिए कई अहम निर्णय लिए गए। बैठक के बाद सीएम योगी की अगुवाई में सभी मंत्रियों ने संगम में डुबकी भी लगाई। इसी तरह राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की अगुवाई में मंत्रिपरिषद ने स्नान करने के बाद बैठक आयोजित की थी। इसके अलावा विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री अपने समूचे मंत्रिमंडल के साथ संगम में स्नान करने पहुंचे।

विपक्षी नेताओं ने भी लगाई डुबकी

सिर्फ सत्ता पक्ष ही नहीं, बल्कि विपक्ष के नेता भी संगम स्नान करने से नहीं चूके। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव पूरे दल बल के साथ संगम में स्नान करने आए तो प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय ने भी शुरुआत में ही संगम स्नान कर पुण्य प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू परिवार समेत यहां पहुंचे, जबकि दिग्विजय सिंह, सचिन पायलट, अभिषेक मनु सिंघवी, राजीव शुक्ला, धर्मेंद्र यादव के अतिरिक्त पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार के विधायक, सांसद और पार्टी अध्यक्ष ने भी यहां स्नान किया और व्यवस्थाओं की तारीफ की।

फिल्मी सितारों का भी लगा मेला

बॉलीवुड सितारों ने भी प्रयागराज आकर संगम स्नान किया और सनातन धर्म के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। अक्षय कुमार, विक्की कौशल, कट्रीना कैफ, पंकज त्रिपाठी, राजकुमार राव, ईशा गुप्ता, रवीना टंडन, विवेक ओबेराय, अनुपम खेर, हेमामालिनी, रवि किशन, तमन्ना भाटिया और सोनाली बेंद्रे समेत तमाम दिग्गज कलाकार संगम पहुंचे। अभिनेताओं के साथ-साथ बॉलीवुड से जुड़े अन्य कलाकार जिनमें रेमो डिसूजा, शान, कैलाश खेर, शेखर सुमन और उदित नारायण ने भी यहां उपस्थिति दर्ज कराई।

अम्बानी, अडानी ने भी किया पुण्य स्नान

नेताओं, कलाकारों के साथ-साथ देश के शीर्ष उद्योगपतियों ने भी यहां अपनी आस्था प्रकट की और पूरी श्रद्धा से संगम में स्नान किया। इनमें देश के शीर्ष उद्योगपति मुकेश अंबानी अपनी पूरी फैमिली के साथ यहां स्नान करने पहुंचे। इसके अलावा गौतम अडानी ने भी परिवार समेत संगम में स्नान कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। अडानी ने प्रसाद वितरण भी किया। अनिल अंबानी, ओला के मालिक भाविश अग्रवाल, लक्ष्मी मित्तल, आनंद पीरामल और अशोक हिंदुजा भी अपने परिवार समेत यहां आए।

खिलाड़ियों ने भी लगाई डुबकी

विभिन्न खेलों के बड़े नाम भी महाकुम्भ का हिस्सा बने। सुनील गावस्कर, सुरेश रैना, खली, साइना नेहवाल, बाइचुंग भूटिया, अनिल कुंबले, आरपी सिंह और शांत शर्मा ने न सिर्फ

संगम में पावन डुबकी लगा, बल्कि यहां आकर साधु संतों का आशीर्वाद भी प्राप्त किया।

तकनीकी आयोजन बना रहा सहायक

इस बार महाकुम्भ का सबसे प्रमुख आकर्षण डिजिटल महाकुम्भ रहा। पहली बार महाकुम्भ की वेबसाइट के साथ-साथ एप को भी लांच किया गया। इसके अलावा, एआ चैटबॉट के माध्यम से लोगों को महाकुम्भ के बारे में जानने और भ्रमण की सुविधा प्रदान की गई। गूगल के साथ पहली बार नेवीगेशन को लेकर एमओयू किया गया। डिजिटल खोया पाया केंद्र के माध्यम से हजारों लोगों को उनके परिजनों से मिलाने में सफलता मिली।

45 दिन में 10 बार आये मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री योगी ने महाकुम्भ की लगातार मॉनीटरिंग की। लखनऊ हो या गोरखपुर, सीएम योगी परस्पर महाकुम्भ की व्यवस्थाओं पर पैनी नजर रखे रहे। वहीं, 45 दिनों के इस आयोजन में उन्होंने स्वयं 10 बार यहां आकर भौतिक निरीक्षण कर जमीनी हकीकत को भी समझा और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। यही नहीं, आवश्यकता पड़ने पर सीएम योगी ने लखनऊ से भी अपने आला अधिकारियों को भेजकर स्थितियों का आंकलन किया। मुख्यमंत्री के दौरे की सबसे महत्वपूर्ण बात ये रही कि उन्होंने सभी अखाड़ों, दंडीबाड़ा, प्रयागवाल, खाकचौक का दौरा किया। इसके साथ ही वह हर वर्ग, जाति के साधु संतों से मिले और उनका सम्मान किया।

कुम्भ में संगम के आकाश पर जो भारतीय वायु सेना तीन सुखोई 30 विमानों ने महादेव के त्रिशूल जैसा अद्‌भुत फॉर्मेशन बनाया जो भारतीय वायु सेना की क्षमता और कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस मनोहारी आकाशीय नृत्य ने देशभक्ति की भावना को जगाया है और हमारे वीर विमान चालकों के समर्पण का सलाम पेश किया है।

मुखमंत्री श्री योगी ने प्रयागराज पहुँच कर महाकुम्भ का औपचारिक समापन किया और इस अवसर पर उन्होंने महाकुम्भ में सफाई कर्मियों, स्वास्थ्य कर्मियों का सम्मान व स्वच्छ कुम्भ कोष, आयुष्मान योजना प्रमाण पत्र वितरण किया, नाविकों और चालकों से संवाद किया। उन्होंने लेटे हनुमान मंदिर में दर्शन पूजन और डिजिटल मीडिया सेंटर में मीडिया कर्मियों से संवाद किया। मुख्यमंत्री ने महाकुम्भ में तैनात पुलिसकर्मियों और कार्यक्रम में लगे प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों से भी संवाद किया। 'प्रयागराज महाकुम्भ 2025 में 3 गिनीज बुक ऑफ

वर्ल्ड रिकॉर्ड बने' और गिनीज बुक में दर्ज होकर प्रमाण पत्र भी जारी हुआ।

- महाकुम्भ 2025 के आयोजन में गंगा सफा के लिए 329 लोगों को लगाया गया।
- हैंड पेंटिंग के लिए- 10,102 लोगों को लगाने का रिकॉर्ड बना इससे पहले 7660 लोगों को लगाया था...
- झाडू लगाने में-19000 लोगों को लगाने का रिकॉर्ड बना, इससे पहले 10,000 लोगों को लगाया गया था...

मुख्यमंत्री की घोषणा-कुम्भ में लगे स्वच्छता और स्वास्थ्य कर्मियों को 10 हजार का बोनस मिलेगा। इन सबका न्यूनतम मानदेय 16 हजार किया गया। सभी कर्मियों का 5 लाख का स्वास्थ्य बीमा होगा। अराजपत्रित पुलिस कर्मियों, होमगार्ड और पी.आर.डी. जवानों को मिलेगा बोनस, महाकुम्भ सेवा मेडल सभी अधिकारियों, पुलिसकर्मियों को मिलेगा। पैरामिलिटरी के जवानों को भी मिलेगा सेवा मेडल!!

- 'प्रयागराज महाकुम्भ डिजिटल मीडिया सेंटर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का बयान'।
- ''आस्था और आर्थिकी'' का अप्रतिम उदाहरण बना महाकुम्भ।
- प्रधानमंत्री का नया विजन है ''आस्था के साथ आर्थिकी'' विकास।
- दुनिया के 12 देशों के राष्ट्रध्यक्ष और अनेक देशों के प्रतिनिधि श्रद्धालु यहां आए।
- केंद्र और राज्य ने मिलकर साढ़े सात हजार करोड़ खर्च किए।
- अनेक बृहद विकास कार्य हुए, कई कॉरीडोर बने, मार्ग बने, पुल बने।
- अलग-अलग प्रकार के 12 कॉरीडोर विकसित हुए प्रयागराज में।

- केंद्र और राज्य के 1 लाख कार्मिकों और अधिकारियों ने यहां व्यवस्था संभाली।
- 3000 सीसी टीवी कैमरे, फेस रिकॉग्निशन के साथ काम कर रहे थे।
- इन्हें 360 एंगल तक घुमाकर देखा जा सकता था।
- 15 हजार से अधिक स्वच्छता कर्मी, 7000 से अधिक बढ़ें, 700 शटल बसें लगा गईं।
- होमगाड पी.आर.डी. आदि ने भी बड़ी भूमिका निभाई।
- रेलवे ने लगभग 13 हजार स्पेशल ट्रेन चलाईं।
- महाशिवरात्रि को 45 दिन का यह महायज्ञ पूर्ण हुआ।
- अयोध्या, चित्रकूट, गोरखपुर, प्रयागराज में भी पर्यटक और श्रद्धालु आए।
- 45 दिनों में सौ देशों के प्रतिनिधि एवं राष्ट्राध्यक्ष आए,
- केंद्र और राज्य ने मिलकर साढ़े सात हजार करोड़ खर्च किया।
- 12 कॉरिडोर बनाए गए जो श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहे हैं।
- इस दौरान 200 सड़कों, 14 फ्लाई ओवर, 12 कॉरिडोर, 9 अंडरपास बने।
- मां सरस्वती कॉरिडोर, बड़े हनुमान जी, इस प्रकार से 12 कॉरिडोर यहां विकसित हुए।
- इस दौरान श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए 1 लाख से अधिक अधिकारी गण जुड़े रहे।
- इसमें सबसे अधिक सुरक्षा कर्मी थे। सबसे ज्यादा 3000 हजार सीसीटीवी लगाए।
- हर एक आने वाले भक्त को रिर्काड किया गया। मैं लखनऊ से ही बैठ-बैठे देख सकता था।
- यहां 15 हजार सफा कर्मी थे। शटल बसें, परिवहन बसें लगाई गई थी, सभी विभागों ने पूरी मदद ने की।
- महाकुम्भ एक विश्व स्तरीय आयोजन बना, जिसमें मीडिया की भूमिका अहम रही।
- सर्दी हो, धूप हो, लेकिन मीडिया नहीं रुकी, कवरेज करती रही।
- महाकुम्भ में अनवरत या तो, ''मां गंगा की धारा चलती थीं, या मीडिया चलती थी"।
- दिन हो या रात, शीत हो या ग्रीष्म, आप (मीडिया) निरंतर चलते रहे इसलिए पूरी दुनिया के 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं को आने का उत्साह बना।

मो. : 9838890580

अनहद की गूंज, अमृत की प्यास

-रतिभान त्रिपाठी
(वरिष्ठ पत्रकार)

यजुर्वेद का मंत्र गूंज रहा है। ऊं द्यौ शांतिरंतरिक्ष शांति: पृथ्वी शांतिराप: शांतिरोषधय:। शांतिर्वनस्पतय: शांतिर्विश्वेदेवा: शांतिर्ब्रह्मशांति:, सर्वंशांति: शांतिरेव शांति:, सा मा शांतिरेधि।। ऊं शांति: शांति: शांति:।। भाव यह कि हे प्रभु अंतरिक्ष में शांति कीजिए पृथ्वी में शांति कीजिए। अग्नि में, पवन में, औषधियों में, वनस्पतियों में, वन-उपवन में, सकल विश्व में, देवताओं में, जड़-चेतन में, सृजन में, जीवमात्र में, जगत के कण कण में शांति कीजिए। यह मंत्र लाउडस्पीकर में नहीं, वातावरण में अनहद नाद के रूप में गूंज रहा है। उन अनगिनत पदचापों में, निर्मल मन में, निर्विकार भाव लिए उन असंख्य श्रद्धालुओं की अटूट धारा में गूंज रहा है, जो संगम की ओर अनवरत गतिमान है। कोलाहल है, पर सर्वत्र शांति का। सिर पर गठरियों का बोझ दिख रहा है लेकिन उन्हें उठाए चल रहे लोगों को शायद इसलिए महसूस नहीं हो रहा क्योंकि वह पापों का बोझ गंगा में बहाने को आतुर हैं।

दृश्य एक : भोर के करीब पौने चार बजे हैं। कुम्भ क्षेत्र में अपने कैंप से निकलकर हम काली सड़क पर हैं। यहां मानवधारा का पारावार नहीं। मानवधारा के साथ हम भी बहे जा रहे हैं। किस किनारे लगेंगे, अंदाजा नहीं मिल रहा। उस धारा में पांव चला रहे हैं, जो संगम की ओर जा रही है। जिधर नजरें दौड़ाओ, आदमी ही आदमी। यह कैसा चमत्कार है ईश्वर का, प्रकृति का, गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती का या फिर उन

ग्रह-नक्षत्रों का, जो इतने विशाल जनसमुदाय को यहां खींच लाया है। बिना बुलाये। यह सब निहार मन में रह-रहकर यह विचार उभर रहा है कि हमारी संस्कृति सरल है, सभ्यता सुगम है, विचार प्रवाहमान हैं, भावना बलवती है, इसीलिए चराचर जगत में हमारे आगम-निगम प्रतिष्ठित हैं। व्यवहार जगत में उनका वर्चस्व है। पश्चिमी जगत भी उन पर न्यौछावर और उनके प्रति जिज्ञासु है, तभी तो इस भीड़ में गोरे बदन और सुनहरे बालों वाले भी पीठ पर बैग लटकाए आगे बढ़ रहे हैं। उनका कौतूहल अजीब है। रुक-रुककर वह अपने कैमरे चमकाते हैं लेकिन भारी जनसमुदाय के बीच कदम एक जगह ठहर नहीं पाते।

यह माहौल भारतीय संस्कृति और उसकी व्यापकता को परिभाषित करता है। उसमें निहित अनेकता में एकता का संदेश दे रहा है। जहां न तो जातीय भेद है और न ही ऊंच नीच का भाव। सब एक ही घाट नहा रहे हैं। एक साथ बैठकर भोजन कर रहे हैं। एक कतार में चल रहे हैं। यही समरस समाज है। यही एकात्मभाव का बोध है।

दृश्य दो : अमावस की रात है। जाहिर है सुदूर अंतरिक्ष में चंद्रमा तो नहीं दिख सकता, प्रकृति का आदेश है। लेकिन मानवनिर्मित आकाशगंगा दमक रही है बिजली की झिलमिल रोशनी के रूप में। रोशनी से पूरा क्षेत्र नहाया हुआ है। श्रद्धालुओं का एक समूह रोशनी का यह नजारा देख भाव विभोर है। कुछ गपबाजी करते आगे बढ़ रहा है लेकिन एक समूह मौन है। यह मौनी अमावस्या है। त्रिवेणी स्नान करने तक मौन रहना है। पंडितों से ऐसा सुना होगा। इस समूह के स्त्री-पुरुष और बच्चे सब मौन। हमारे मन में संत की वह वाणी बारंबार गूंजती है-"हद छांड़ि बेहद भया, सबद छांड़ि अनहद।" शायद ये श्रद्धालु उसी अनहद नाद में रमे हैं, अमरत्व की अभिलाषा में सराबोर हैं।

दृश्य तीन : त्रिवेणी बांध पर हम चढ़ चुके हैं लेकिन श्रद्धालुओं की उस धारा में यह अंदाजा ही नहीं मिला कि हमने कोई चढ़ाई भी चढ़ी है और आगे ढलान में उतर रहे हैं। पता तो तब चला, जब सामने शिविरों का विस्तृत नगर दिखा। हम संगम

क्षेत्र जाने के अभ्यस्त हैं। अकेले पैदल चलो तो बांध से आगे की दूरी खलती है लेकिन आज के इस रेले में सब कुछ यंत्रवत सा है। हमें लग ही नहीं रहा कि हम चल रहे हैं। यही समष्टि का आनंद है। बस रेले के साथ बहे जा रहे हैं। अरे यह क्या ? सड़क के दोनो ओर शिविरों के बाहर हजारों लोग यूं ही खुले आसमान के नीचे लेटे हैं। कोई चादर ताने नींद में है तो कोई कंबल और शाल में ही दोहराया पड़ा है। शिविरों के बाहर पंडालों पर कहीं दरियां बिछी हैं तो कहीं पुआल। वहां सो रहे लोग शायद आराम में होंगे लेकिन ये जो बालू पर लेटे हैं, उनका क्या...। मन में बात आती है कि ''जिन्हें थक के नींद आ गई पत्थरों पर वो दुनिया का आराम कब सोचते हैं।'' फिर यह समुदाय तो मोक्ष की कामना से आया है, इसलिए भौतिक दुखों से आगे आनंद की अनुभूति लिये सोया है। नींद इसीलिए गहरी है।

दृश्य चार : अब हम लोअर संगम-त्रिवेणी रोड पर हैं। सामने लिखा साइन बोर्ड देखकर पता चला। यात्रियों की चाल बहुत धीमी है। वजह कि चारों ओर ठसाठस भीड़ है। कोई तेजी से बढ़ना भी चाहे तो उसके बस का नहीं। आगे चलने पर बड़े-बड़े यात्री विश्रामालय और रैन बसेरे नजर आते हैं। यहीं सामने सैकड़ों की संख्या में शौचालयों की कतार। इनमें कोई घुस रहा है तो कोई निकल रहा है, लेकिन हमें बड़ा बदलाव यह महसूस हो रहा है। आसपास खाली जगह भी है, पर कोई भी खुले में शौच के लिए नहीं बैठा दिख रहा, जैसा कि पिछले सालों में दिखा करता था। शौचालयों की व्यवस्था तो बड़े पैमाने पर तो है ही लेकिन लोगों की सोच में बदलाव भी आया है। वरना गांव देहात के वही लोग हैं, जो पहले यहां आया करते थे। हम कुछ देर को रुकना चाहते थे यहां लेकिन रेले में कुछ आगे निकल गए। सामने रैन बसेरे के बाहर भी हजारों लोग सोये हैं। एक महिला अपने बच्चे को जगाती दिखती है। बच्चा कोई दस-बारह बरस का होगा। झकझोरने पर एक दो बार उलटता पलटता है लेकिन फिर उठकर बैठ जाता है। मां अपने कपडे लपेटती है और गठरी में बांधकर बच्चे के साथ निकल पड़ती है संगम स्नान को।

दृश्य पांच : पौ फटने को है। अचानक सीटियां बजती हैं। अखाड़ा मार्ग सामने है। वहां खड़े पुलिस वाले फैलकर चल रहे स्नानार्थियों को अखाड़ा मार्ग से हटाने लगते हैं। लाउडस्पीकर से आवाज आती है।

आप लोग अखाड़ा मार्ग खाली करिये। शाही जुलूस निकलने वाला है। कुछ दूर चलने पर घुड़सवार सिपाही दिखते हैं। उनके घोड़े अखाड़ा मार्ग पर खरामा-खरामा दौडने लगते हैं। सीटियां तेज हो जाती हैं। पुलिस और प्रशासन के अफसर सिपाहियों को संकेत देते हैं कि वहां चल रहे लोगों को फौरन हटाओ। तभी लाउडस्पीकर से एनाउंसमेंट होता है। अखाड़ा

शाही स्नान को पहुंच रहा है। सूरज निकल आया है। स्नान को जा रहे लोगों के चेहरे साफ साफ दिखने लगते हैं। तब तक शाही जुलूस संगम के निकट होता है। अचानक आसमान में हेलीकॉप्टर गड़गड़ाता है। सारी निगाहें आसमान की ओर उठती हैं। विमानों को देखने का कौतूहल शायद सबमें होता है। हेलीकॉप्टर उड़ते हुए शाही जुलूस के ऊपर से फूल बरसाने लगता है। जय श्रीराम के नारे गूंजते हैं। रथों पर सवार महामंडलेश्वर और महंत आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाते हैं तो सामने से श्रद्धालु हाथ जोड़कर पूरे भाव से उन्हें प्रणाम करने लगते हैं। रथों पर महिलाएं भी सवार हैं और संतों के गृहस्थ चेले भी। सामने संगम पर बने टश्वर पर बड़े-बड़े कैमरों से लैस देशी-विदेशी छायाकार फटाफट फोटो खींच रहे हैं। विदेशी फोटोग्राफर को सामने देख एक नागा संत पोज देने लगता है। तब तक पीछे से आया उसका साथी पीठ पर धौल जमाता है। कहता है, चल चल, बहुत हीरो न बन। यह भाव देख लोगों के चेहरे पर मुस्कान तैर जाती है।

दृश्य छह : हम बल्ली की आड़ लिये यहीं रुकते हैं। फिर एक अखाड़ा सामने आ रहा है। इसमें हजारों नागा संन्यासी शामिल हैं जो अखाड़ा मार्ग पर दौड़ लगा रहे हैं। कोई हाथ में बरछी लिये है तो कोई तलवार। कोई अपनी जटाओं में फूलों की माला गूंथे है तो कोई हर हर महादेव का हर्षघोष कर रहा है। उन्हें देखने को मार्ग के दोनों पार खासा हुजूम है। ऐसा लग रहा है मानो लोग नागाओं को ही देखना चाहते हैं। नागा पूरे शरीर पर भस्म लपेटे हुए हैं। किसी की जटाएं संवरी हैं तो किसी की बिखरी हुई हैं। कोई कोई कौपीनधारी भी हैं। हजारों साधु भी उनके साथ पैदल चल रहे हैं लेकिन शरीर पर अंचला और गले में रुद्राक्ष की मालाएं हैं। फिर हेलीकॉप्टर आता है तो रुक-रुककर उन पर फूल बरसाता है। साधु और नागा इससे काफी प्रसन्न दिख रहे हैं। शासन की ओर से यह सम्मान संभवतः उन्हें अभिभूत कर रहा है। मौसम बदराया हुआ है। हवा सर्द है लेकिन संगम की ऊर्जा ठंड का अहसास होने नहीं दे रही। शायद भारी भीड़ भी मौसम को नरम बना रही है। लाउडस्पीकर से एनाउंस किया जा रहा है कि खगड़िया बिहार के रामजी लाल जहां कहीं भी हों, संगम पर बने भूले भटके केंद्र पर आ जाएं, आपके साथी आपका इंतजार कर रहे हैं। उड़ीसा से आए बीरदास के लिए भी ऐसी ही पुकार हो रही है। एनाउंसमेंट बता रहा है कि पूरा भारत संगम तट पर उतरा है।

दृश्य सात : सामने विस्तृत संगम है। स्नान क्षेत्र बहुत बड़ा है पर भीड़ इतनी है कि जगह कम पड़ चुकी है। बहुत धक्कम-धक्का है। लोग एक दूसरे से उलझकर गिर भी पड़ रहे हैं पर कोई किसी से झगड़ा नहीं कर रहा। शायद आस्था का उल्लास उन्हें क्षमाशील बनाए हुए है। इस सर्कुलेटिंग एरिया में सैकड़ों की संख्या में चेंजिंग रूम हैं पर स्नान करके निकली महिलाएं अंदर जाने का इंतजार कर रही हैं। वजह यह कि इतनी भीड़ में व्यापक इंतजाम भी कम पड़ते लग रहे हैं। संगम की ओर जाने और स्नान कर लौटने वालों ने अपने आप रास्ते बांट लिये हैं। लगता है यह स्वानुशासन ही है जो संगम आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को सही सलामत रखता है। स्नान के बाद कोई यहीं खंभे की आड़ में बैठकर माला जप रहा है तो कोई पंडे को दान कर रहा है। किसी ने अपनी पोटली खोल पूड़ी सब्जी खानी शुरू कर दी है तो कुछ महिलाएं अपने समूह के साथ घेरा बनाकर खड़ी हैं। सिर पर बोरियां लिये हैं लेकिन भजन गाने में मगन हैं। उन्हें सिर पर लदी बोरियों का बोझ महसूस होता नहीं लग रहा।

यह माहौल भारतीय संस्कृति और उसकी व्यापकता को परिभाषित करता है। उसमें निहित अनेकता में एकता का संदेश दे रहा है। जहां न तो जातीय भेद है और न ही ऊंच नीच का भाव। सब एक ही घाट नहा रहे हैं। एक साथ बैठकर भोजन कर रहे हैं। एक कतार में चल रहे हैं। यही समरस समाज है। यही एकात्मभाव का बोध है। ◆

मो. : 9415225285/7905252032

सनातन संस्कृति का महाकुम्भ

-बृजनंदन चौबे
(शिक्षक, पत्रकार)

जीवन की पाठशाला, मानवता की मंगल कामना, मोक्षदायिनी माँ गङ्गा, यमुना और सरस्वती की पवित्र व्याख्या, *संगच्छध्वम संबदध्वं सं वो मनांसि जानताम्* की भावना से आच्छादित और सनातन धर्म के सर्वोच्च केतु के रूप में प्रतिष्ठित महाकुम्भ 2025 अपनी दिव्यता और भव्यता के लिए लोगों के मन मस्तिष्क में समा चुका है। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित महाकुम्भ 2025 के औपचारिक समापन की घोषणा हो चुकी है लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित इस सफल और सुफल महाकुम्भ को पीढ़ियाँ सदियों तक अपने हृदय में सँजो कर रखेंगी। इस लेख के माध्यम से हम लोककल्याण और आस्था के इस महापर्व की आध्यात्मिक, आर्थिक, तार्किक और वाणिज्यिक यात्रा का अनुभव करेंगे। वैसे तो महाकुम्भ सनातन संस्कृति की सोच के साथ ही समृद्ध होता रहा है पर महाकुम्भ 2025 कई मायनों में अलहदा रहा।

'जल स्रोतों व प्रकृति के संरक्षण का संगम'

मानव ही नहीं अपितु समस्त वसुधा का उद्‌गम जल से हुआ है। तीर्थराज प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम का वर्णन मिलता है। कुम्भ का आयोजन प्रकृति की एक विशेष अवस्था का पर्व है। वेदों में प्रकृति को ही देवता कहा गया है। जीवनदायिनी नदियाँ मनुष्य और मनुष्यता के लिए प्रकृति प्रदत्त उपहार हैं। इसलिए प्रकृति और प्राकृतिक प्रक्रियाओं को समझे बिना कुम्भ की वास्तविकता को हम नहीं समझ सकते हैं। हमारे वेदों में समुद्र मंथन की कथा का बहुत महत्व है समुद्र मंथन से लेकर आज तक जो काल बीता उसमें सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग समाहित हैं। इन्हीं को 'कल्प' के रूप में देखा जाता है हिंदू धर्म के अनुसार मनुष्य को अनेक योनियों से गुजरना पड़ता है और हर योनि के अर्जित तथा संचित कर्मों का फल उसे भुगतना पड़ता है। ऐसी मान्यता है कि यदि माघ मास में (पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा) तक कोई संगम तट पर नियम संयम से 'कल्पवास' कर ले तो कल्प भर के पाप कर्मों से मुक्त हो जाता है। जहां-जहां भी कुम्भ का आयोजन होता है उनका अपना महत्व है लेकिन प्रयाग को तीर्थराज का विशेषण दिया गया है क्योंकि यही वह स्थान है जहां तीन नदियों का संगम है बाकी जगहों पर महज नदी तट है।

तीर्थराज प्रयाग में आयोजित महाकुम्भ के जरिये श्रद्धालुओं के मन मस्तिष्क में हमारी सदानीरा नदियों की महत्ता और उनके संरक्षण का सफल संदेश गया।

'आस्था और तकनीक का संगम'

महाकुम्भ दिव्य व भव्य होने के साथ ही आस्था और तकनीक के संगम का भी केंद्र बना। उत्तर प्रदेश सरकार ने वेबसाइट और मोबाइल ऐप बेस्ड 'वाटर मॉनिटरिंग मैनेजमेंट सिस्टम' के जरिये महाकुम्भ मेला क्षेत्र में जल प्रबंधन की प्रक्रिया को श्रद्धालुओं की सहूलियत के अनुकूल किया। 4 हेक्टेयर में बसे महाकुम्भ मेला क्षेत्र के प्रबंधन में AI तकनीक की मदद ली गई। भीड़ प्रबंधन में AI बेस्ड उत्कृष्ट फील्ड प्रबंधन प्रणाली का प्रयोग किया गया। पार्किंग मैनेजमेंट सिस्टम के अंतर्गत 120 अस्थाई पार्किंग स्थलों को विकसित किया गया जिसमें लगभग 720 सीसीटीवी कैमरा तथा AI आधारित वाहन गिनने की प्रणाली की भी व्यवस्था की गई। करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं के आवागमन के दृष्टिगत ट्रैफिक व्यवस्था के बेहतर प्रबंधन के लिए इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर का भी विस्तार किया गया। महाकुम्भ मेला क्षेत्र में साफ सफाई के लिए 1.5 लाख टॉयलेट्स और यूरिनल स्थापित किए गए थे। इनकी साफ सफाई के लिए प्रत्येक टॉयलेट पर क्यू आर कोड लगाया गया था जिसके जरिये चंद मिनटों में ही गंदे टॉयलेट्स की जानकारी मिल जाती थी और उनकी साफ सफाई सुनिश्चित की जाती थी। ऐसे में कहा जा सकता है कि महाकुम्भ आस्था के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के संगम का भी साक्षी बना।

'आस्था और अर्थव्यवस्था का संगम'

महाकुम्भ 2025 से प्रदेश की अर्थव्यवस्था में 300 फीसदी का बूस्ट मिला है। अनुमान है कि प्रयागराज और आसपास के जनपदों को इसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हुआ है। भारत के मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वर ने भी कहा कि महाकुम्भ से होटल, फूड और ट्रांसपोर्ट जैसे उद्योगों को खासा बल मिला। इस आयोजन में आए करोड़ों लोगों ने विभिन्न मदो में जो खर्च किया उसका प्रभावशाली असर चौथी तिमाही की जीडीपी में दिखेगा। उत्तर प्रदेश के

मुख्यमंत्री ने तो विधानसभा में महाकुम्भ के दौरान एक नाविक परिवार के 30 करोड़ रुपये कमाने का दावा किया है।

'वैश्विक एकता का संगम'

2025 के महाकुम्भ में, भारत में यूनेस्को के डायरेक्टर टिम कर्टिस ने भी डुबकी लगाई। उन्होंने कहा, ''यहाँ आने के बाद एक अलग ही ऊर्जा और माहौल का एहसास हुआ, इतने सारे लोगों को एक स्थान पर इकट्ठे देखना और इसमें शामिल होना, एक शानदार अनुभव रहा।'' स्पेन से आए इगूजकी ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा, मैं महाकुम्भ मेले में आकर बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि 144 साल के बाद ऐसा खगोलीय संयोग बना है जो पृथ्वी, इंसानों और जीवों के लिए बहुत महत्व रखता है। महाकुम्भ की वैश्विकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यूनेस्को ने इसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत घोषित कर दिया है।

प्रयागराज में हुआ महाकुम्भ का ये आयोजन आधुनिक युग के मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स के लिए, प्लानिंग और पॉलिसी एक्सपर्ट्स के लिए, नये सिरे से अध्ययन का विषय बन गया है। पूरी दुनिया हैरान है कि कैसे तीन नदियों के संगम पर इतनी बड़ी संख्या में लोग जुटे। न तो इन्हें कोई औपचारिक निमंत्रण था, ना ही किस समय पहुंचना है, उसकी कोई पूर्व सूचना थी किंतु लोग महाकुम्भ चल पड़े और पवित्र संगम में डुबकी लगाकर धन्य हो गये। खास बात है कि आस्था के इस सैलाब में ना उम्र का बंधन था ना वर्गों का टकराव था बस सबके मन मस्तिष्क में एक ही लक्ष्य था मोक्षदायिनी माँ गङ्गा, यमुना और सरस्वती का स्पर्श कैसे मिले। कुल मिलाकर महाकुम्भ हमारी साँझी संस्कृति और सभ्यता का साक्षात प्रमाण साबित हुआ और अपने ध्येय वाक्य 'सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः' की भावना के साथ सफल और सुफल रहा। ◆

2025 के महाकुम्भ में, भारत में यूनेस्को के डायरेक्टर टिम कर्टिस ने भी डुबकी लगाई। उन्होंने कहा, ''यहाँ आने के बाद एक अलग ही ऊर्जा और माहौल का एहसास हुआ, इतने सारे लोगों को एक स्थान पर इकट्ठे देखना और इसमें शामिल होना, एक शानदार अनुभव रहा।'' स्पेन से आए इगूजकी ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा, मैं महाकुम्भ मेले में आकर बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि 144 साल के बाद ऐसा खगोलीय संयोग बना है जो पृथ्वी, इंसानों और जीवों के लिए बहुत महत्व रखता है। महाकुम्भ की वैश्विकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यूनेस्को ने इसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत घोषित कर दिया है।

मो. : 9628318525

खुशहाल किसान, यूपी की पहचान

- पहली कैबिनेट का पहला निर्णय: ₹36,359 करोड़ का फसल ऋण मोचन, 94 लाख किसान लाभान्वित
- खाद्यान्न उत्पादन : वर्ष 2016-17 में 557.46 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 668.39 लाख मीट्रिक टन (20% वृद्धि)
- सिंचन क्षमता : वर्ष 2017 तक 82.58 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 131 लाख हेक्टेयर, 976 परियोजनाएं पूर्ण
- रिकॉर्ड गन्ना मूल्य भुगतान : 2017 से अब तक ₹2.80 लाख करोड़ का भुगतान, पिछले 22 वर्षों में हुए कुल भुगतान से ₹66 हजार करोड़+ अधिक
- चीनी मिल : 3 नयी चीनी मिल, 6 चीनी मिलों का पुनर्संचालन, 38 चीनी मिलों का क्षमता विस्तार
- अनाज खरीद : बिचौलियों को बाहर किया, ₹43,424 करोड़ गेहूं मूल्य एवं ₹88,746 करोड़ धान मूल्य का भुगतान
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना : 2.86 करोड़ किसानों को ₹80,000 करोड़+ हस्तांतरित
- प्रधानमंत्री कुसुम योजना के अन्तर्गत 75,000+ सोलर पंपों की स्थापना

सशक्त नारी, समृद्ध प्रदेश

- महिलाओं के लिए पुलिस में 20 प्रतिशत पद, 1.38 लाख+को सरकारी नौकरी
- 10 लाख+ स्वयं सहायता समूह से 1 करोड़+ महिलाओं को रोजगार
- महिला वर्क फोर्स : 2017 में 14.2 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 35.1 प्रतिशत हुआ
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना : 1.86 करोड़ परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन, होली व दीपावली पर मुफ्त एलपीजी सिलेंडर रीफिल
- मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना : 22.11 लाख बालिकाएं लाभान्वित
- निराश्रित महिला पेंशन योजना : 33.55 लाख महिलाएं लाभान्वित
- मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना : 4.22 लाख जोड़ों का विवाह संपन्न, धनराशि ₹51 हजार से बढ़ाकर ₹1 लाख
- आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों व सहायिकाओं के मानदेय में वृद्धि, 3.73 लाख महिलाएं लाभान्वित
- बी.सी. सखी : 39 हजार+ ने 31,626 करोड़ का लेनदेन किया, 85.81 करोड़ लाभांश

विरासत भी, विकास भी

- महाकुम्भ 2025 में 66.30 करोड़+ श्रद्धालुओं का पुण्य स्नान
- महाकुम्भ से उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में ₹3.50 लाख करोड़+ की वृद्धि
- 6 आध्यात्मिक कॉरिडोर के विकास से पर्यटन में वृद्धि
- अयोध्या में दिव्य-भव्य प्रभु श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण
- वाराणसी में श्री काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर का विकास
- अयोध्या में भव्य-दिव्य दीपोत्सव, काशी में देव-दीपावली

काम दमदार, युवाओं को रोजगार

- 2017 में प्रति व्यक्ति आय ₹46 हजार से बढ़कर 2024 में ₹1 लाख 24 हजार
- बेरोजगारी दर : 2016 में 18% युवा बेरोजगार, 2024 में बेरोजगारी दर घटकर 3 प्रतिशत
- 8.5 लाख+ सरकारी नौकरी, 3.75 लाख+ संविदा पर नियुक्ति
- MSME एवं निजी क्षेत्र में 2 करोड़+ रोजगार, ODOP योजना से 2.54 लाख+ रोजगार
- मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के अंतर्गत 2.27 लाख+ युवाओं को रोजगार
- मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान : 10 लाख नये उद्यमी तैयार करने का लक्ष्य

सबके साथ सरकार

- 3,213 अन्नपूर्णा भवनों का निर्माण पूरा, 1,630 पर कार्य प्रगतिशील
- अनुसूचित जाति (पूर्व दशम) के 32,49,854 विद्यार्थियों को ₹708.49 करोड़ छात्रवृत्ति
- अनुसूचित जाति (दशमोत्तर) के 89,31,203 विद्यार्थियों को ₹9,662.25 करोड़ छात्रवृत्ति
- पिछड़ा वर्ग (पूर्व दशम) के 62,79,519 विद्यार्थियों को ₹1,28,627.48 करोड़ छात्रवृत्ति
- पिछड़ा वर्ग (दशमोत्तर) के 1,31,05,263 विद्यार्थियों को ₹7,62,524.03 करोड़ छात्रवृत्ति
- सामान्य वर्ग (पूर्व दशम) के 8,58,750 विद्यार्थियों को ₹221.95 करोड़ छात्रवृत्ति
- सामान्य वर्ग (दशमोत्तर) के 48,13,347 विद्यार्थियों को ₹5,499.86 करोड़ छात्रवृत्ति

स्वास्थ्य का उपहार

- आयुष्मान भारत : 9 करोड़+ लोगों को ₹5 लाख तक का मुफ्त चिकित्सा बीमा
- 80 मेडिकल कॉलेज संचालित, 11,300 एमबीबीएस सीटों की वृद्धि
- गोरखपुर एवं रायबरेली में एम्स, लखनऊ में अटल बिहारी वाजपेयी चिकित्सा विश्वविद्यालय
- महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- 22,681 आरोग्य मंदिर का संचालन

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

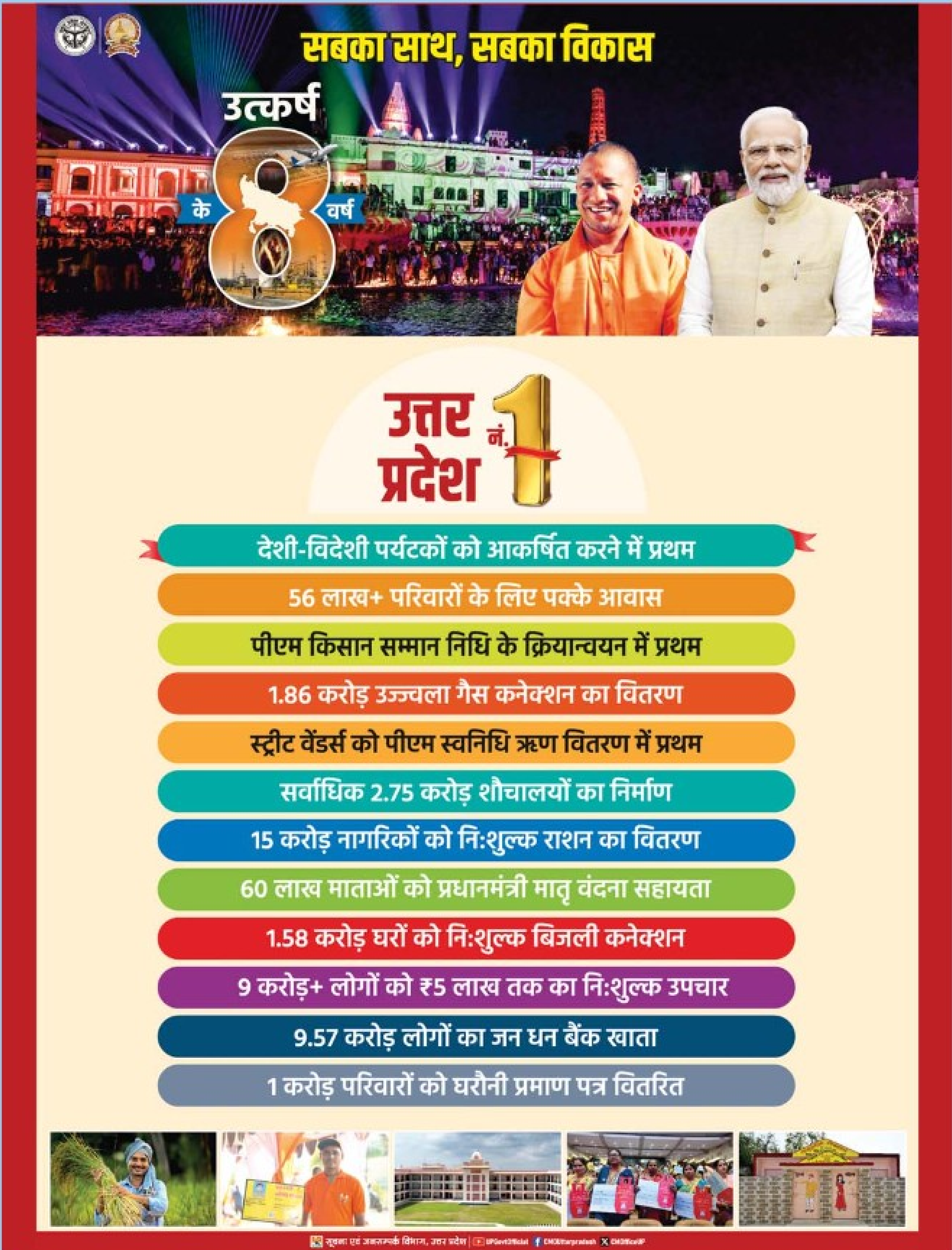

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित एवं प्रभारी सम्पादक : दिनेश कुमार गुप्ता